अनन्सी मकड़े के कारनामे–1

अनन्सी मकड़ा अफ्रीका में

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Anansi Makade Ke Karname (Adventures of Anansi Spider)
Cover Page Picture: Anansi Spider
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of West Africa

West Africa – 16 Countries
(1) Benin, (2) Burkina Faso, (3) Cape Verde, (4) Gambia, (5) Ghana, (6) Guinea, (7) Guinea Bissau, (8) Ivory Coast, (9) Liberia, (10) Mali, (11) Mauritania, (12) Niger, (13) Nigeria, (14) Senegal, (15) Sierra Leone, (16) Togo,

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

अनन्सी मकड़े के कारनामे–1 7

1 अनन्सी कौन है 9

2 अनन्सी और आसमान का देवता 16

3 अनन्सी कहानियों का मालिक बना 26

4 मक्का के एक दाने के बदले में पत्नी 35

5 आदमी को अक्ल कैसे मिली 55

6 अनन्सी और अक्ल का घड़ा 59

7 अनन्सी और अक्लमन्दी का बर्तन 63

8 मकड़े का सिर गंजा क्या 69

9 मकड़े की कमर पतली क्यों? 74

10 मकड़ा और उसके दो दोस्त 77

11 बढ़िया जज अनन्सी 81

12 मकड़े की टॉगें पतली क्यों? 86

13 मकड़े का पिछवाड़ा बड़ा क्यों? 91

14 मकड़े छत में ही क्यों रहते है? 97

15 मकड़े कोनों में क्यों छिपे रहते हैं? 101

16 मकड़े दरारों में क्यों रहते हैं? 108

17 सूअर की थूथनी छोटी क्यों 120

18 अनन्सी और मौत 124

19 कुत्ता बिल्ला कबूतर और जादू की अँगूठी 133

20 मारने वाली डंडी 152

21 आदमी और लोमड़ा दुश्मन क्यों? 162

22 खोजने वाले और रखवाले 172

23 मकड़ा और कौए 185

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

अनन्सी मकड़े के कारनामे–1

दुनियॉ के हर समाज की लोक कथाओं में कोई न कोई चालाक होता है। यह चालाक कोई जानवर भी हो सकता है और कोई आदमी भी हो सकता है। भारत में खरगोश और लोमड़ी बहुत चालाक जानवर माने जाते हैं और गीदड़ बहुत ही डरपोक। पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया और घाना आदि देशों में यह काम अक्सर अनन्सी मकड़ा करता हैं। दूसरे देशों में रहने वाले लोग तो अनन्सी मकड़े की लोक कथाओं को पूरे अफ्रीका के नाम से ही जोड़ देते हैं। पर यह पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाओं का सबसे ज़्यादा लोकप्रिय हीरो है।

वैसे तो इन दोनों देशों में मकड़े की बहुत सारी कहानियॉ मशहूर हैं पर वहॉ की मकड़े की कई लोक कथाओं में उस मकड़े को अनन्सी का नाम नहीं दिया गया है पर साधारणतया मकड़े की हर लोक कथा को अनन्सी मकड़े के नाम से जोड़ दिया गया है।

यहॉ हम अनन्सी मकड़े के बारे में कुछ बता दें कि यह मकड़ा कोई साधारण मकड़ा नहीं है, यह एक ख़ास मकड़ा है जो कोई भी रूप ले सकता है और फिर कुछ भी कर सकता है पर सामान्य रूप से यह दो ही रूपों में दिखायी देता है – एक आदमी के रूप में और दूसरे मकड़े के रूप में।

अनन्सी मकड़ा एक परी मकड़ा[1] है। यह मकड़ा अक्लमन्द है और हर समय इसके दिमाग में कुछ न कुछ शरारत सूझती रहती है। यह किसी भी रूप में आये पर अपने हर रूप में यह लालची और सुस्त है और किसी भी हद तक होशियार और चालाक है। बस इसकी यह ज़्यादा होशियारी और चालाकी इसको कभी कभी उलटी पड़ जाती है और उससे इसी को बहुत नुकसान उठाना पड़ जाता है।

इसको खाने का बहुत शौक है। क्योंकि यह आलसी है इसलिये यह अपना खाना न उगाता है और न बनाता है। यह हमेशा अपने दोस्तों के या दूसरों के घर जा कर ही खाता रहता है और वहॉ भी यह सबसे ज़्यादा खाता है। इस खाने के चक्कर में इसको कई बार नुकसान भी बहुत होता है।

इसके अलग अलग जगहों पर अलग अलग नाम हैं। इसका अपना नाम अनन्सी मकड़ा है पर घाना में यह क्वेकु अनन्सी के नाम से मशहूर है। कहीं कहीं क्वेकु इसके बेटे का नाम भी है। उत्तरी नाइजीरिया की हौसा जनजाति में इसका नाम गीज़ो है और इसकी पत्नी का नाम कभी कोकी और कभी असो[2] है। घाना, पश्चिमी अफ्रीका, की केवल एक लोक कथा में इसका नाम ईग्या अनन्सी दिया हुआ है।[3] इसके दो बेटे हैं – टिकूमा और कूमा।[4] एक जगह इसके एक बेटे का नाम क्वेकु सीन दिया गया है।

कभी कभी यह मकड़ा अमेरिकन इन्डियन्स की लोक कथाओं में भी पाया जाता है वहॉ इसके नाम है अनैन्सी, या टारनटूला, या निहानकन[5] मकड़ा।

---

[1] Spider Fairy

[2] Koki or Asso – names of the wife of Anansi in Northern NIgeria

[3] His own name is Anansi. In Ghana he is known as Kweku or Kwaku Anansi. Sometimes his son is also known as Kweku. In Hausa tribe of Northern Nigeria he is known as Gizo. Only in one Western African folktale he is called as Eegya Anansi.

[4] He has two sons – Ntikuma and Kuma. At one place his one son's name is given as Kweku Tsine.

[5] Anancy, Tarantula, Nihankan

इस पुस्तक की पहली कथा अनन्सी के बारे में है। अगली दो कथाऐं ऐसी हैं जिनसे यह पता चलता है कि ये अनन्सी की कहानियॉ आयी हीं कैसे। उससे अगली कथा यह बताती हैं कि वह कितना अक्लमन्द है और उसके पास यह अक्लमन्दी आयी कहॉ से। उससे अगली तीन कथाऐं यह बताती हैं कि आदमी के पास अक्ल कहॉ से आयी। फिर कुछ ऐसी कथाऐं हैं जो इस मकड़े की शक्ल और उसके रहने की जगह के बारे में बताती हैं।

ये सब कहानियॉ पश्चिमी अफ्रीका के देशों में ही कही सुनी जाती हैं और यह मकड़ा क्योंकि पश्चिमी अफ्रीका के घाना और नाइजीरिया देशों की कहानियों का हीरो है तो जाहिर हे कि ये सब कहानियॉ वहीं की हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और पश्चिमी अफ्रीका की संस्कृति के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

1 अनन्सी कौन है[6]

यह अनन्सी कौन है जिसकी कहानियॉ तुम लोग आज पढ़ने जा रहे हो? यह कोई आदमी है या कोई मकड़ा है या फिर कोई मकड़ा–आदमी है? आओ देखते है कि यह है क्या चीज़?

अनन्सी का अपना नाम है क्वेकु अनन्सी[7] पर सब उसे अनन्सी ही कह कर पुकारते हैं। इसके पिता का नाम है न्यामे – यानी आसमान का देवता।[8] और इसकी मॉ का नाम है असासे – धरती मॉ जो स्त्रियों को बच्चा पैदा करने की ताकत देती है।[9] यह अफ्रीका महाद्वीप के अशान्ती देश[10] में पैदा हुआ था।

आज तो अशान्ती नाम का कोई देश तुम्हें नक्शे में नहीं मिलेगा पर कुछ समय पूर्व यह उत्तरी नाइजीरिया घाना और कुछ दूसरे क्षेत्रों को मिला कर पुकारा जाता था।

अनन्सी के पिता न्यामे को अशान्ती देश के लोग दूसरे नामों से भी पुकारते हैं जैसे ओबोआडी यानी दुनियॉ बनाने वाला[11]। उसी ने ज़िन्दगी बनायी उसी ने मौत बनायी।

---

[6] How Anansi Became a Spider – a folktale from Ghana, Africa. Adapted from the Web Site : http://anansistories.com/Anansi_Spider_Man.html

[7] Anansi's name is Kweku Anansi. Kweku means "Wednesday".

[8] His father's name is Nyame – the Great Sky God. Nyame is known as Ananse Kokuroko also. It means "The Great Spider" or "The Great Designer.

[9] His mother's name is Asase – the Earth Goddess / the Goddess of Fertility

[10] A little more area than modern Ghana on Africa's West coast

[11] Oboadee, the Creator. He is also knaown as Onyankopon

एक बार मौत ने न्यामे को जहर देने की कोशिश की तो न्यामे ने उसका जहर तोड़ दिया। बस उसके बाद से ही न्यामे अमर हो गया। उसकी अमर आत्मा का एक हिस्सा आदमी की आत्मा में रख दिया गया इसी लिये आदमी की आत्मा भी अमर हो गयी।

इसके अपने भी कई नाम हैं।[12] वैसे तो यह आदमी के रूप में पैदा हुआ था पर अक्सर यह अपने आपको मकड़े के रूप में भी बदल सकता है।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि एक दिन इसके पिता न्यामे ने इसकी शरारतों से तंग आ कर इसे मकड़े के रूप में बदल दिया। उस दिन के बाद से बस यह एक मकड़ा–आदमी[13] बन गया। पर जाति के हिसाब से यह आधा नीग्रो है क्योंकि यह अशान्ती देश में पैदा हुआ है और आधा दैवीय है क्योंकि यह देवी देवता का बेटा है।

यह अकान जाति[14] में पैदा हुआ था पर इसके जन्म के समय का पता नहीं है। शायद यह तब पैदा हुआ था जब आदमी और जानवर आपस में बात किया करते थे। हॉ इसके जन्म के दिन का जरूर पता है कि यह बुधवार के दिन पैदा हुआ था।

यह लम्बाई में बहुत छोटा है और वजन में बहुत हल्का है।

---

[12] Ananse, from the Twi language for spider. **AKA:** Anansi / Annancy / Annansay / Annancey / Anancyi / Anawnsy / Hanansi / Hanaansi / Compe Anansi / John Anansi / Nansi / Nance / Nancy / Mr. Nancy / Brother Anansi / Bro' Anancy / Bra' Nancy / Bre-Nancy / Aunt Nancy / Miss Nancy / Anansi-Tori / Ti Malice / Uncle Bouki / The Spider / Spider-man.

[13] Spider-man, not Spiderman

[14] He belongs to Akan Tribe of Ghana.

अगर इससे मिलना हो तो इससे घाना के कुमासी शहर में या फिर जमैका के किंग्स्टन शहर में या फिर समुद्री टापुओं पर और यू ऐस ए की साउथ कैरोलाइना प्रान्त में या फिर हेटी द्वीप समूह में या फिर दक्षिणी अमेरिका के सुरीनाम देश में और या फिर बैलीज़ में मिला जा सकता है।[15]

इसका काम केवल चालाकी खेलना है। यह अपना रूप बहुत जल्दी बदल लेता है। चतुर है अपने दिमाग का इस्तेमाल करता है। अपने से बड़े बड़ों को बहुत जल्दी बेवकूफ बना देता है। पर कभी कभी अपने खराब बर्ताव की वजह से फॅस जाता है।

जो लोग इसके देश में आते हैं यह उन उनके साथ चला जाता है। इसके नाम के बोलने और लिखने का ढंग यह बताता है कि यह किन किन लोगों में चला गया है क्योंकि वे लोग इसके नाम को फिर अपने तरीके से ही लिखते हैं और पुकारते हैं।

क्योंकि यह अपने देश अशान्ती से सैंकड़ों सालों तक बाहर रहा तो इसका लिंग भी बदल गया क्योंकि दूसरी जगहों के उनके कई नाम इसके नाम से काफी मिलते जुलते थे तो उन लोगों ने इसके अपने वाले नाम रख दिये।

[15] Kumasi, Ghana; Kingston, Jamaica; Sea Islands and South Carolina, USA; Suriname, South America; or Belize, North America continent – Dictionary of Jamaican Englisht

यह अपने से ज़्यादा ताकतवर लोगों के साथ भी अपनी चालाकी खेल जाता है। यह बहुत लालची है, आलसी है और बहुत जल्दी ही दूसरों से जलने लगता है।

यह जमैका में जमैका की भाषा में बोलता है। वहॉ इसको "र" बोलना नहीं आता और वहॉ यह तुतला कर बोलता है। अगर अनन्सी की कोई कहानी ठीक से सुनायी जाये तो लोग पहचान जाते हैं कि उस कहानी में अनन्सी कब बोला।

इसके पिता न्यामे ने इसको बारिश करने की ताकत दे रखी है खास कर के जंगली आग बुझाने के लिये। यह अनन्सी ही है जो जब बाढ़ आती है तो नदियों और समुद्र की हदें निश्चित करता है।

अनन्सी अशान्ती देश में इतना मशहूर है कि लोगों का कहना है कि इसी ने सूरज चॉद तारे दिन रात पहला आदमी बनाये बाद में न्यामे ने उनमें प्राण फूँके। इसी ने लोगों को हल चलाना सिखाया और बीज बोना सिखाया।

इसी के "ज़िन्दगी के जाले" ने लोगों को कपड़ा बुनना और घर बनाना सिखाया। इसके इसी जाले ने लोगों को एक दूसरे सम्बन्ध बना कर जुड़ने और फिर समाज बनाना सिखाया। इसका यह जाला ज़िन्दगी देने वाले सूरज का रूप माना जाता है।

न्यामे की पत्नी "असासे या"[16] अनन्सी की मॉ है। वह धरती देवी है और स्त्रियों को बच्चे पैदा करने की ताकत देती है। इसके

[16] Asase Ya – name of the wife of Nyame and mother of Anansi Spider

नाम क्वेकु का मतलब है बुधवार और इस दिन के नाम का मतलब है कि इस दिन आत्मा पहली बार आयी थी।

इसका सबसे बड़ा दुश्मन है ओसीबो चीता[17] जिसको ब्रैर टाइगर या ब्रो टाइगर या फिर केवल टाइगर भी कहते हैं। पर एक कहानी में यह उसको भी पकड़ कर अपने पिता के पास ले जाता है।

एक बार जब इसका पिता न्यामे इसकी शरारतों से बहुत तंग हो गया तो उसने इसको हमेशा के लिये मकड़ा–आदमी में बदल दिया। उस दिन के बाद से अनन्सी को केवल अपनी चतुराई पर ही ज़िन्दा रहना पड़ रहा है।

यह बच्चों का हीरो और चैम्पियन है और बच्चों की ही तरह अपनी शरारतों की वजह से कई बार परेशानियों में फॅस जाता है और तब इसको उनमें से निकलने के लिये अपने दिमाग का इस्तेमाल करना पड़ता है।

अनन्सी पश्चिमी अफ्रीका की बहुत सारी लोक कथाओं का हीरो है। इसकी ये लोक कथाऐं जमैका और वैस्ट इंडीज़ के दूसरे देशों में भी बहुत लोकप्रिय हैं। ये यहॉ से वहॉ तब चली गयीं जब यहॉ के लोग गुलाम बना कर उन देशों में ले जाये गये।

एक बार इसने सोचा कि "मुझे दुनियॉ में मशहूर होना चाहिये।" मशहूर होने के लिये इसके दिमाग में आया कि अगर यह सब कहानियों का मालिक बन जाये तो वे सारी कहानियॉ "अनन्सी

[17] Osebo Leopard,

की कहानियों" के नाम से मशहूर हो जायेंगी और उन कहानियों के साथ साथ मशहूर हो जायेगा वह खुद भी।

इसको मालूम था कि सारी कहानियॉ इसके पिता न्यामे के पास एक बक्से में बन्द हैं सो बस यह पहुॅच गया अपने पिता के पास उनसे वे कहानियॉ लेने।

पर इसके पिता ने उन कहानियों के लिये कुछ शर्तें लगा दी कि जब तक वह उसकी शर्तें पूरी नहीं करेगा वे कहानियॉ उसको नहीं मिलेंगी। वे शर्तें बहुत कठिन थीं तो यह सोचे बिना कि उसका क्या होगा अनन्सी अपने पिता की सारी शर्तें पूरी कर के उसकी सारी कहानियों का मालिक बन बैठा।

उस दिन से वहॉ की सारी कहानियॉ अब अनन्सी की कहानियों के नाम से जानी जाती हैं। इसकी सारी कहानियॉ लोगों का दिल भी बहलाती हैं और उनको सीख भी देती हैं। इसकी कहानियों को सुनने वालों को या तो इसकी नकल करने के लिये कहा जाता है या फिर इसकी बेवकूफियों से बचने के लिये।

इसकी कहानियॉ इसकी ज़िन्दगी के अलग अलग समय पर की हैं जैसे किसी कहानी में यह कुॅआरा है तो या तो अपने लिये दुलहिन ढूॅढने जाता है या फिर राजा की बेटी का हाथ मॉगने जाता है।

किसी कहानी में इसकी पत्नी असो और इसका बेटा टिकूमा या टकूमा है। जमैका की कहानियों में भी इसके बेटे का नाम टिकूमा है।[18]

अशान्ती देश की कुछ कहानियों मे इसकी पत्नी का नाम कोकी है और इसके बच्चों के नाम उनकी योग्यता के अनुसार दिये हैं। कहीं कहीं ये सब नाम मिले जुले भी हैं।

[18] Anansi's son's names are Intikuma or Takooma. In Jamaican stories his name is Tikuma.

2 अनन्सी और आसमान का देवता[19]

यह उस समय की बात है जब धरती पर कोई कहानी नहीं हुआ करती थी इसलिये कोई भी न तो कोई कहानी कहता था और न ही कोई कहानी सुनता था। न कोई शुरू था और न कोई आखीर।

सारी कहानियॉ एक लकड़ी के बड़े से बक्से में बन्द थीं और वह बक्सा आसमान के देवता न्यामे[20] के सिंहासन के नीचे रखा हुआ था।

अनन्सी मकड़े का घर अफ्रीका के घाना देश में था और वह वहॉ के ऊॅचे ऊॅचे पेड़ों के बीच में चॉदी के तारों का जाल बुना करता था। उसको मालूम था कि सारी कहानियॉ आसमान के देवता न्यामे के पास हैं सो वह ये कहानियॉ उससे अपने लिये लेना चाहता था।

एक दिन उसने रेशमी धागे से एक सीढ़ी बनायी और उस पर चढ़ कर वह स्वर्ग में आसमान के देवता के पास पहुॅचा। वहॉ जा कर उसने आसमान के देवता से वे कहानियॉ मॉगीं जो उसने अपने बक्से में बन्द कर के रखी हुई थीं।

जब न्यामे ने अनन्सी की मॉग सुनी तो वह हॅसा और बोला — "अनन्सी, तुम पहले आदमी नहीं हो जो मेरे पास मेरी कहानियॉ

[19] Anansi and the Sky God – a folktale from Ghana, Africa
[20] Nyame, the Sky God of Ghana

मॉगने आये हो। पहले भी कई लोग मुझसे ये कहानियॉ मॉगने आ चुके हैं पर वे उनको ले कर नहीं जा सके। और मैं उनको तुम्हें भी ऐसे ही नहीं दूँगा। मैं तुमसे उनकी बड़ी ऊँची कीमत लूँगा।"

अनन्सी बोला — "मैं वह सब करूँगा जो आप मुझसे करने के लिये कहेंगे पर मुझे आपकी वे कहानियॉ चाहिये।"

न्यामे बोला — "ठीक है तो मेरी कहानियों की कीमत यह है कि तुम मुझे होमेट्स मधुमक्खियों की रानी एमबोरो ला दो। ओनिनी नाम का अजगर ला दो जो पूरे के पूरे आदमी को निगल जाता है।

औसीबो नाम के चीते को ला दो जिसके दॉत बहुत तेज हैं और मोटिया परी[21] ला दो जिसको कभी किसी ने देखा ही नहीं।

बहुत लोगों ने इनको लाने की कोशिश की पर कोई नहीं ला सका और इसी लिये वे कहानियॉ भी नहीं ले जा सके।"

अनन्सी इन सब चीज़ों को लाने का वायदा कर के न्यामे के महल से चल दिया। उसने सोचा कि पहले मुझे मधुमक्खियों की रानी एमबोरो को पकड़ना चाहिये जिसके दॉत बहुत तेज़ हैं।

उसने काशीफल का एक खोल लिया और उसमें एक छेद कर लिया। फिर उसने एक कटोरे में नदी से पानी भरा और दोनों

[21] Bring me the Queen Mboro of Homates Bees, Onini named python, Osebo named Tiger, and Motiya named Fairy whom nobody has seen yet.

चीज़ें ले कर एक बड़े पुराने पेड़ की तरफ चल दिया जहॉ होमेट्स मधुमक्खियॉ रहती थीं।

वहॉ जा कर अनन्सी ने उस कटोरे में से थोड़ा सा पानी अपने ऊपर डाला और बचा हुआ पानी होमेट्स मधुमक्खियों के छत्ते में डाल दिया।

फिर वह ज़ोर से बोला — "जल्दी करो एमबोरो, बारिश आ रही है। सूखी जमीन पर चलो ताकि तुम्हारे पंख खराब न हों।"

और फिर उसने अपने काशीफल के खोल का छेद उनके सामने कर दिया। सारी की सारी मधुमक्खियॉ उड़ कर उस छेद से हो कर उस काशीफल के खोल में घुस गयीं। उन्होंने अनन्सी मकड़े को उनको बारिश से बचाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जैसे ही वे सारी मक्खियॉ काशीफल के खोल में घुसीं अनन्सी ने तुरन्त ही केले के पत्तों से उस काशीफल के खोल का छेद बन्द कर दिया।

छेद बन्द होते ही मक्खियॉ अनन्सी को गालियॉ देने लगीं पर अनन्सी ने उनकी गालियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने मक्खियों से कहा — "अरी बेवकूफों, मैं तुमको आसमान के देवता न्यामे के पास ले जा रहा हूँ। तुम मुझे गालियॉ क्यों देती हो।"

जब न्यामे ने देखा कि अनन्सी होमेट्स मक्खियों को पकड़ लाया है तो वह बोला — "बहुत अच्छे अनन्सी, पर अभी तीन काम और रह गये हैं।"

सो अनन्सी अब दूसरा काम करने चला – ओनिनी अजगर को पकड़ने का। ओनिनी बहुत ही चालाक जानवर था और अनन्सी जानता था कि वह उस अजगर को अकेले नहीं पकड़ सकता था। उसको पकड़ने के लिये उसे किसी की सहायता लेनी ही पड़ेगी।

सो वह अपनी पत्नी के पास गया और उससे उसने पूछा कि ओनिनी को कैसे पकड़ा जाये।

उसकी पत्नी बोली — "ओनिनी होशियार जानवर जरूर है पर वह कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।" और उसने अनन्सी के कान में उसको पकड़ने की तरकीब बता दी।

अनन्सी ने तुरन्त ही पास के पाम के पेड़ से एक लम्बी सी डंडी तोड़ी और कुछ बेलें और तोड़ीं और उनको ले कर वह उस नदी के किनारे चल दिया जहाँ ओनिनी रहता था।

जैसे ही वह नदी के पास पहुँचा उसने अपने आप से ही ज़ोर ज़ोर से बातें करना शुरू कर दिया — "मुझे मालूम है कि मैं ठीक हूँ। मैं कहता हूँ कि वह अजगर तो बहुत ताकतवर है। मेरी पत्नी कैसे ठीक हो सकती है। मेरी समझ में नहीं आता कि वह ठीक हो ही कैसे सकती है, वह गलत है बिल्कुल गलत।"

उस समय ओनिनी खाना खा कर सो रहा था। अनन्सी के इस शोर को सुन कर उसने अपना आधा सोया सिर ऊपर उठाया और बोला — "अनन्सीईईई, तुम इतना किसलिये चिल्ला रहे हो?"

अनन्सी बोला — "मैं और मेरी पत्नी आपस में तुम्हारे बारे में ही बात कर रहे थे। मैं कह रहा था कि तुम पाम की इस डंडी से लम्बे हो और वह कह रही थी कि नहीं, तुम इस पाम की डंडी से लम्बे हो ही नहीं सकते। फिर हम सोच रहे थे कि हम इस बात का फैसला तो कर ही नहीं सकते।"

ओनिनी बोला — "तुम तो बिल्कुल ही बेवकूफ हो अनन्सी। तुम इस बात का फैसला क्यों नहीं कर सकते? मैं तो यहीं हूँ। तुम मुझे अपनी इस पाम की डंडी से नाप लो तो तुमको पता चल जायेगा कि कौन लम्बा है, मैं या तुम्हारी यह पाम की डंडी।

लेकिन मुझे यकीन है कि तुम्हारी पत्नी गलत है। क्योंकि सब जानते हैं कि मैं तो सारे अफ्रीका में सबसे ज़्यादा लम्बा और सबसे ज़्यादा ताकतवर सॉप हूँ।"

चालाक मकड़ा पाम की डंडी को नीचे बिछाते हुए और बेलों को अपनी पीठ के पीछे छिपाते हुए बोला — "मैं भी यही सोचता हूँ ओनिनी जी।"

अजगर बाहर निकला और उस पाम की डंडी के बराबर में जा कर लेट गया। लेट कर उसने सबसे पहले अपने आपको सीधा

किया और फिर जितना लम्बा अपने आपको खींच सकता था खींचा।

पर जितना भी वह अपने आपको खींच रहा था वह पाम की डंडी के बराबर नहीं हो पा रहा था। पाम की डंडी हमेशा ही उससे ज़्यादा लम्बी थी। फिर उसने एक लम्बी सी सॉस ली और आखिरी बार अपने आपको खींचा।

यही समय था जब अनन्सी को अपना काम करना था। उसने तुरन्त ही बेलें निकालीं और अजगर के मुँह को एक बेल से पाम की डंडी के एक किनारे से बॉध दिया और दूसरी बेल से उसकी पूँछ को दूसरे किनारे से बॉध दिया ताकि वह बच कर भाग न सके।

बाकी बची बेलों से अनन्सी ने अजगर के बाकी शरीर को पाम की डंडी से कस कर बॉध दिया और उसको आसमान के देवता के पास ले चला और उसको देवता को सौंप आया।

मकड़े की लिस्ट में अब तीसरी चीज़ थी ओसीबो चीता। इस की तीखी आवाज अक्सर रात को जंगल में गूँज जाया करती थी। इसलिये रात को अनन्सी ने ऐसी जगह एक गहरा गड्ढा खोदा जहॉ उसको मालूम था कि वह चीता वहॉ अक्सर आया करता था।

उसने उस गड्ढे को डंडियों और पत्तों से इस तरह ढक दिया कि वह पूरी तरह ढक जाये। फिर वह वहॉ से कुछ दूरी पर छिप कर बैठ गया और चीते के आने का इन्तजार करने लगा।

सुबह होने पर ही उसने चीते के आने की आहट सुनी और फिर जल्दी ही उसके उस गड्ढे में गिर जाने की आवाज भी।

मकड़ा उस गड्ढे के किनारे के पास गया और बोला — "अरे ओसीबो जी, यह क्या हो गया आपके साथ?"

ओसीबो की हरी ऑखें गुस्से से चमकीं और वह बोला — "एक तो मैं गड्ढे में गिर गया और ऊपर से तुम मेरी हॅसी उड़ा रहे हो? मुझे जल्दी से इस गड्ढे में से निकालो।"

अनन्सी बोला — "ठीक है ठीक है। मैं अभी आपको निकालने की कोशिश करता हूॅ।"

कह कर उसने एक मुलायम पेड़ को जमीन की तरफ झुका दिया और उसकी डालियों को उसको तने से इस तरह से बॉध दिया ताकि उसकी सबसे ऊपर की डालियॉ गड्ढे के ऊपर झुक गयीं। फिर उसने दूसरी एक रस्सी पेड़ के सबसे ऊपर वाली डाली से बॉध दी और उसका एक सिरा गड्ढे में लटका दिया।

फिर वह ओसीबो से बोला — "यह लीजिये ओसीबो जी, अब आप रस्सी का यह सिरा अपनी पूॅछ में बॉध लीजिये और मैं आपको खींच कर बाहर निकालता हूॅ।" ओसेबो ने ऐसा ही किया

अनन्सी बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और उसने वह रस्सी काट दी जो पेड़ को जमीन से बॉधे हुए थी। इससे वह चीता गड्ढे में उछला और गड्ढे में से तो बाहर निकल आया पर पेड़ से लटका रह गया, बेचारा लाचार सा।

चालाक मकड़ा पेड़ के तने पर चढ़ गया और उसने अपने शिकार के चारों तरफ एक जाला बुना। फिर बोला — "मेरे साथ आइये ओसीबो जी। चलिये, हम लोग आसमान के देवता न्यामे से मिलने चलते हैं।"

इस तरह वह ओसीबो चीते को बॉध कर न्यामे के पास ले गया और न्यामे को उसकी तीसरी चीज़ दिखायी।

न्यामे ओसीबो चीते को देख कर बहुत खुश हुआ और अनन्सी को शाबाशी देते हुए बोला — "बहुत अच्छे अनन्सी। अब बस तुम मोटिया को और ले आओ और तुम्हारा काम खत्म।"

सो अब अनन्सी छोटी परी मोटिया को लेने चल दिया। उसे मालूम था कि मोटिया को तो देखना ही बहुत मुश्किल काम था, और उसको पकड़ना तो बिल्कुल ही नामुमकिन था।

लेकिन उसने ऐसी कई कहानियॉ सुन रखीं थीं जिनसे यह पता चलता था कि वह ठंडे पानी में खेलना बहुत पसन्द करती थी।

अनन्सी ने लकड़ी की एक छोटी सी गुड़िया बनायी और उसको एक तालाब के किनारे रख दिया जहॉ वह परी खेलने आया करती थी। उसने पास के एक पेड़ का गोंद निकाला और गुड़िया के शरीर पर

मल दिया। उसके बाद उसने उस गुड़िया के पैरों के पास एक प्याला स्वादिष्ट याम[22] रख दिया।

जल्दी ही परी वहॉ आ गयी। उसने याम का प्याला पहले ही देख लिया था। वह उस गुड़िया के पास आ कर उससे अपनी घंटियों जैसी आवाज में बोली — "क्या मैं तुम्हारे साथ तुम्हारा याम खा सकती हूँ?"

पर वह तो लकड़ी की गुड़िया थी क्या बोलती, सो परी ने उससे फिर पूछा पर फिर भी उसको कोई जवाब नहीं मिला।

बार बार पूछने पर भी जब उसे गुड़िया से कोई जवाब नहीं मिला तो वह गुस्से में भर कर उसको मारने दौड़ी। जैसे ही उसके हाथों और पैरों ने उस लकड़ी की गुड़िया को छुआ वह उस गुड़िया पर लगे गोंद से चिपक गयी और अपने आपको उस गुड़िया से छुड़ा न सकी।

अनन्सी अपनी जगह से बाहर निकल आया और उसने अपनी लकड़ी की गुड़िया को और साथ में गुस्सा हुई परी दोनों को उठा लिया। मन में हॅसते हुए वह परी को आसमान के देवता न्यामे के पास ले गया।

[22] Yam is a kind of root vegetable, like Eddo. It is very much eaten by coastal people of Tropical areas. See the picture of some cooked yam above.

न्यामे ने जैसे ही परी को देखा तो वह तो हैरान रह गया कि इस मकड़े ने तो उसकी वे सारी शर्तें पूरी कर दीं जो उसने उससे पूरा करने के लिये कहा था।

उसने तुरन्त कहानियों का बक्सा अपने सिंहासन के नीचे से निकाला और अनन्सी को दे दिया और बोला — "अनन्सी, तुमको बधाई हो। तुम वे सारी चीज़ें ले आये जिनको मैंने तुमको लाने के लिये कहा था।

अब ये सारी कहानियॉ तुम्हारी हैं और आज से ये सारी कहानियॉ "मकड़े की कहानियॉ" के नाम से मशहूर होंगीं और इस तरह से तुम्हारा नाम दुनियॉ में फैलेगा।"

इस तरह अनन्सी मकड़ा न्यामे से कहानियॉ धरती पर ले कर आया और ला कर उसने उनको सारी दुनियॉ में फैला दिया। उसी दिन से दुनियॉ में कहानी कहने और सुनने की रीति चली।

3 अनन्सी कहानियों का मालिक बना[23]

अनन्सी की धरती पर कहानी लाने वाली एक और लोक कथा।

एक बार अनन्सी को चिन्ता हुई कि जब वह मर जायेगा तो लोग उसे कैसे याद रखेंगे। दुनियॉ में उसको कोई तो ऐसी चीज़ छोड़ कर जानी ही चाहिये न जिसको देख कर लोग उसको हीरो की तरह से याद रखें।

लेकिन अनन्सी के पास किसी फौज की कोई ताकत तो थी नहीं। न उसके पास अपनी कोई ताकत थी। न उसके पास कोई अक्लमन्दी की कहावतें थीं। उसके पास तो बस उसके शब्दों का जाल था। वह तो बस उसी पर ज़िन्दा था। तो इन बातों से उसे कौन याद रखता?

उसने सोचा — "कितना अच्छा होता अगर उसके पास बहुत सारी कहानियॉ होतीं – "अनन्सी की कहानियॉ"।"

उसको अपना यह विचार बहुत अच्छा लगा क्योंकि इससे हर आदमी जब अपनी शाम कहानियॉ कहते सुनते गुजारेगा तो उसको याद करेगा।

बस उसने यह बात सब जगह फैला दी। पर जब जंगलों के राजा ने यह सुना तो उसने अनन्सी से कहा — "बड़े बड़े नाम उनको

[23] Anansi Becomes the Owner of the Stories – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the book : "The Pot of Wisdom: Ananse stories", By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

दिये जाते हैं जो बड़े बड़े काम करते हैं। तुमने कौन सा ऐसा बड़ा काम किया है जिसकी वजह से तुमको यह इज़्ज़त दी जाये कि तुम्हारे नाम से कहानियॉ मशहूर हों।"

अनन्सी बड़ी निडरता से बोला — "आप मुझे आजमा कर तो देखिये, ओ राजा, तब आपको पता चलेगा कि मुझे इससे कम की इज़्ज़त तो मिलनी ही नहीं चाहिये।"

जंगलों का राजा बोला — "क्योंकि आज तक कभी किसी ने इन तीनों को ज़िन्दा नहीं पकड़ा है – वोवा शहद की मक्खी का पूरा परिवार, जंगल के बौने अबोशिया और नंका अजगर।[24] तो तुम अगर इन सबको पकड़ कर मेरे पास ला दो तो फिर बस सब कहानियॉ तुम्हारी।"

अनन्सी बोला — "ओ राजा, मैं तो आप ही की सेवा में हूॅ। हालॉकि मैं बहुत छोटा हूॅ पर मैंने उन सबकी कमजोरी समझ ली है। तीन दिन के अन्दर अन्दर आप मेरा यह बड़ापन देखेंगे कि मैं उनको कैसे पकड़ कर यहॉ लाता हूॅ।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

अनन्सी ने वह सारी रात यह सोचते हुए गुजार दी कि वह इन सबको कैसे पकड़ेगा। अगले दिन सुबह होते ही वह अपने रास्ते पर चल दिया।

[24] The full household of Wowa honeybee, Aboatia forest dwarves and Nanka the python.

सभी जानते हैं कि शहद की मक्खियॉ कितना काम करती हैं। और जब भी उनको कोई परेशान करता है तो उनको कितनी जल्दी गुस्सा भी आ जाता है और जब कोई उनको बहुत ही ज़्यादा परेशान करता है तब तो वह उसको काट ही लेती हैं।

अनन्सी इसी बात को ध्यान में रखते हुए वोवा शहद की मक्खियों के छत्ते की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने मक्खियों से कहा — "अरे तुम लोग तो यहॉ बहुत बड़ी संख्या में रह रही हो। कितनी हो तुम लोग?"

उन मक्खियों की जो काम करने वाली मक्खियों की सरदार थी वह बोली — "हम लोग **300** हैं।"

"क्या? तुमने क्या कहा **200**?"

उस मक्खियों की सरदार ने फिर कहा — "नहीं नहीं। हम लोग **200** नहीं हैं **300** हैं।"

"ओह पिछले हफ्ते तो किसी ने मुझसे कहा था कि तुम लोग **200** हो। इसका मतलब है कि तुम लोग **200** ही होनी चाहिये।"

यह सुन कर वह मक्खियों की सरदार कुछ गुस्सा सी हो गयी और बोली — "मैंने कहा न कि हम लोग **300** हैं **200** नहीं।"

अनन्सी फिर बोला — "नहीं तुम लोग **200** ही हो।"

जल्दी ही कई मक्खियॉ इस बहस में शामिल हो गयीं और हर एक मक्खी जितनी भी मक्खियॉ उसने गिनी थी उसने वह वह संख्या उसको बतानी शुरू कर दी।

तब अनन्सी ज़ोर से बोला — "बस बस बस। इस मामले को एक बार और आख़िरी बार तय करने के लिये कि तुम लोग कितनी हो हम ऐसा क्यों न करें कि मैं तुम सबको गिन लूँ।"

मक्खियों को यह सलाह पसन्द आयी। अनन्सी ने एक बड़ी सी बोतल निकाली और उन मक्खियों से कहा — "तुम लोगों को एक एक कर के केवल इस बोतल में उड़ कर आना है और जैसे जैसे तुम लोग इसमें उड़ कर आती जाओगी मैं तुम लोगों को गिनता जाऊँगा।"

सबसे पहला नम्बर उस बोतल में जाने का उनकी काम करने वाली मक्खियों की सरदार का था। उसके बाद सारी मक्खियाँ उस शीशी में घुस गयीं, यहाँ तक कि रानी मक्खी भी।

शीशी में घुसने के बाद मक्खियों ने पूछा — "अब बताओ कि हम लोग कितनी हैं?"

अनन्सी ने बोतल बन्द करते हुए कहा — "**300**।"

काम करने वाली मक्खियों की सरदार ने खुश हो कर कहा — "मैंने कहा था न...।"

अनन्सी बोला — "हाँ हाँ तुमने ठीक ही कहा था। पर अब तुम सब मेरे पास हो।"

यह देख कर सारी मक्खियाँ बोतल में अपनी पूरी ताकत के साथ बाहर निकलने के लिये बहुत ज़ोर ज़ोर से भिनभिनाने लगीं।

पर अनन्सी ने उनकी भिनभिनाहट पर कोई ध्यान नहीं दिया और उनको ले कर वह अपने घर आ गया।

अगले दिन अनन्सी ने अपने बागीचे से पीले पीले सुनहरी पके हुए केलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा तोड़ा और उसको जंगल के एक ऐसे हिस्से में ले जा कर एक पेड़ से बॉध दिया जहॉ बौने लोग रहते थे।

ये बौने लोग बहुत होशियार थे। ये लोग जंगल में बिना आवाज किये इतनी तेज़ी से भाग सकते थे कि आदमी की ऑख तो इनको देख ही नहीं सकती थी।

बस इनके आने जाने से जो हवा हिलती थी केवल उस हवा से ही उनको महसूस ही किया जा सकता था कि वे अभी यहॉ से गुजरे थे।

इसके अलावा ये लोग इतने शान्त खड़े रह सकते थे कि इनके पास से गुजरने वाले लोग यह समझते थे कि ये तो पुराने पेड़ों के कटे हुए तने हैं।

असल में तो केवल कुछ ही लोगों ने जंगल के इन बौनों को उनके असली रूप में देखा होगा और इसी लिये बहुत सारे लोगों को तो यह विश्वास ही नहीं था कि वे लोग इस दुनियॉ में हैं भी या नहीं।

अनन्सी जंगल के बीच में खड़ा हो गया और ऐसे बोलने लगा जैसे वह अपने आपसे बातें कर रहा हो — "ओह, मैं तो कितना थक गया हूँ। अब मैं इन केलों को इससे और आगे ले कर नहीं जा सकता। मैं अपने ये केले यहीं छोड़ कर जा रहा हूँ मैं इन्हें कल वापस आ कर ले जाऊँगा।"

फिर उसने उन केलों को वहीं छोड़ने का बहाना किया और एक प्लान्टेन[25] के पेड़ के नीचे खड़े हो कर अपने आपको उसके चौड़े पत्तों से ढक कर छिपा लिया। अभी उसको छिपे बहुत देर नहीं हुई थी कि उस जंगल का एक बौना उधर आ निकला।

बौने उन पके केलों को देखा तो देखते ही बोला — "ओह पके केले। मुझे तो पके केले बहुत अच्छे लगते हैं। इससे पहले कि वह आदमी इन केलों को लेने के लिये वापस आये मैं इनको पेट भर कर खा लूँ।"

सो उस बौने ने इतने सारे केले खाये कि वह उनको खा कर अब मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था। फिर भी उसका मन नहीं भरा था सो वह और केले खाये जा रहा था और खाये जा रहा था।

[25] Plantain is a kind of larger size banana, but its tree is like a banana tree so it also has broader leaves. See the picture of ripe plantains above.

अब उसको नीचे जमीन पर लेट जाना पड़ा क्योंकि इतने सारे केले खा कर उसके पेट में दर्द होने लगा था।

इतने में अनन्सी उस प्लान्टेन के पेड़ के नीचे से बाहर निकल आया। उस बौने ने अनन्सी को देख कर भागना चाहा पर वह भाग भी नहीं सका क्योंकि वह वहीं पड़े केलों के छिलकों पर पैर पड़ने की वजह से फिसल गया और पेट के बल गिर पड़ा।

अनन्सी ने उसको गले से पकड़ लिया और अपने साथ लाये एक थैले में बन्द कर लिया और उसको भी अपने घर ले गया।

अब उसकी नंका अजगर पकड़ने की बारी थी। अगले दिन अनन्सी नदी किनारे घूमने चला गया जहॉ नंका अजगर नहाने के लिये आया करता था।

जब नंका अजगर वहॉ नहाने आया तो अनन्सी उससे बोला — "ओह नंका जी। हर कोई आपकी इतनी शानदार खाल और लम्बाई की बड़ी तारीफ करता है।"

नंका अजगर बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो अनन्सी। पर सच तो यह है कि मेरे जैसा शानदार अजगर और कोई है भी तो नहीं तो लोगों को तो मेरी तारीफ करनी ही पड़ेगी।"

अनन्सी बोला — "असल में तो मैं भी यही सोच रहा था कि आप तो वाकई बहुत लम्बे हैं पर क्योंकि मैंने यह बॉस की शाख

अपने बागीचे से काटी है तो मुझे यह लगता है कि यह आपसे ज़्यादा लम्बी है क्योंकि मेरे बागीचे के बॉस बहुत लम्बे लम्बे हैं।"

नंका अजगर ने फुंकार मारते हुए कहा — "यह तुम बेकार की बात कर रहे हो अनन्सी। ऐसा तो हो ही नहीं सकता।"

अनन्सी बोला — "ठीक है। तो अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो क्या आप एक मिनट के लिये यहॉ इस बॉस के डंडे के बराबर में लेट सकते हैं ताकि मैं आपको नाप लूँ कि आप इस बॉस के डंडे से लम्बे हैं या नहीं। और अपने आपको गलत साबित कर दूँ?"

अजगर बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। पर ज़रा जल्दी करना।" कह कर वह अनन्सी के बॉस के डंडे के बराबर में लेट गया।

एक मिनट बाद ही अजगर ने पूछा — "अब तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो?"

अनन्सी ने ज़ोर से सोचने की आवाज करते हुए कहा — "हॉ हॉ हॉ। यह तो कहना बहुत मुश्किल है कि कौन ज़्यादा लम्बा है आप या यह बॉस का डंडा। क्योंकि आपकी गर्दन और पूँछ दोनों ही बहुत हिल रही हैं और इसकी वजह से मैं आपको ठीक से नाप नहीं पा रहा हूँ।

ज़रा ठहरिये, मैं आपको इस बॉस से एक सेकंड के लिये बॉध दूँ ताकि आप हिल न पायें और मैं आपको ठीक से नाप सकूँ।"

अनन्सी ने जल्दी से अजगर की गर्दन और पूँछ को उस बाँस के डंडे से कस कर बाँध दिया और फिर बोला — "हाँ अब देखते हैं कि कौन ज़्यादा लम्बा है आप या यह बाँस का डंडा।" यह कह कर वह उस डंडे को खींचता हुआ अपने घर ले गया।

अगले दिन वह शहद की मक्खियों, अजगर, और जंगल के बौने तीनों को जंगल के देवता के पास ले गया।

जंगल का राजा अनन्सी को तीनों को पकड़ कर लाया देख कर उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने यह मान लिया कि अनन्सी वाकई बहुत बड़ा था सो उसने उसको अपनी कहानियों का रखवाला बना दिया।

आज भी जब अशान्ती देश में कहानियाँ कही जाती हैं तो अनन्सी का नाम जरूर ही लिया जाता है और साथ में यह भी कहा जाता है कि उसी की कहानियाँ सबसे अच्छी कहानियाँ हैं।

4 मक्का के एक दाने के बदले में पत्नी[26]

यह बहुत समय पहले की बात है कि एक बार आसमान के देवता न्यामे[27] लोगों की अक्लमन्दी की जॉच करना चाहते थे सो उन्होंने आदमियों और जानवरों दोनों से यह कहा कि दोनों में से जो कोई भी यह साबित करेगा कि वह सबसे ज़्यादा अक्लमन्द है तो वह उसको एक बहुत बड़ा खजाना और और बहुत सारी अक्लमन्दी देंगे।

इसके अलावा सारे लोगों को अपना समय खराब न करना पड़े इसके लिये वह असली इम्तिहान से पहले एक और इम्तिहान लेंगे और जो लोग वह इम्तिहान पास कर लेंगे उन्हीं को उस असली मुकाबले में हिस्सा लेने दिया जायेगा।

सब लोगों को यह मुकाबला बहुत मुश्किल लगा क्योंकि उनको डर था कि अगर वे फेल हो गये तो पता नहीं इसका नतीजा क्या निकले और न्यामे उनके साथ क्या करे।

सो एक दिन वे सब गॉव के मैदान में इकट्ठा हुए और आपस में इसके ऊपर विचार करने लगे।

---

[26] Bride for a Grain of Corn – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the book – "The Orphan Girl and the Other Stories". By Offodile Buchi. Its Hindi translation is available from : hindifolktales@gmail.com

[27] Nyame is the Sky God of Ghana

सबसे पहले शेर बोला — "हम उस देवता को अपनी अक्लमन्दी का सबूत कैसे दे सकते हैं जो हमारे बारे में पहले से ही सब कुछ जानते हैं।"

खरगोश बोला — "तो इसका मतलब तो यह हुआ कि हम उनसे झूठ तो बोल ही नहीं सकते।"

एक आदमी बोला — "तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। हो सकता है कि वह यही चाहते हों कि इस मुकाबले में केवल आदमी लोग ही हिस्सा लें इसी लिये उन्होंने हमारी अक्लमन्दी को चुनौती दी हो।"

बन्दर शिकायती आवाज में बोला — "पर कम से कम उनको हमको यह तो बता देना चाहिये था कि वह इम्तिहान है क्या। इससे हम कम से कम यह निश्चय तो कर सकते थे कि हम इस मुकाबले में हिस्सा लेना चाहते भी हैं या नहीं।"

इस तरह वे आदमी और जानवर आपस में बहस करते रहे।

जल्दी ही न्यामे के ऑगन में एक बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गयी पर उनमें से कोई भी आगे बढ़ कर न्यामे की चुनौती स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं था। वे सब न्यामे के ऑगन की चहारदीवारी की तरफ पीछे हट कर खड़े हो गये।

तभी एक मकड़ा भीड़ के पास आया और उसने हाथी से पूछा — "यहॉ क्या हो रहा है?"

हाथी बोला — "ऐसा लगता है कि यहॉ पर तुम ही एक ऐसे आदमी हो जिसने देवता की चुनौती के बारे में कुछ नहीं सुना।"

मकड़े ने उसको ठीक किया — "नहीं नहीं ऐसा नहीं है, मैंने उसकी चुनौती के बारे में सुना है इसी लिये तो मैं यह पूछ रहा हूॅ कि हर एक फिर यहॉ से लौट क्यों रहा है? और वह कौन है जिसने उनकी चुनौती स्वीकार की है?"

हाथी बोला — "अभी तक तो उनकी चुनौती किसी ने स्वीकार नहीं की है।"

यह सुन कर मकड़ा हाथी और दूसरे जानवरों को जो भी उसके रास्ते में आये उन सबको हटाता हुआ आगे बढ़ा।

और ऑगन के बीच में आ गया और बोला — "ओ देवता, मैं आपकी बनायी हुई चीज़ों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हूॅ। और मैं आपकी चुनौती को मानने और अपने आपको सबसे ज़्यादा अक्लमन्द साबित करने के लिये तैयार हूॅ।"

यह सुन कर वहॉ पर खड़े सभी लोगों की बोलती बन्द हो गयी। कुछ ने मकड़े को चुप करने की कोशिश भी की पर सब बेकार। वह तो किसी की सुन ही नहीं रहा था। बहुतों ने तो अपनी ऑखें ही बन्द कर लीं कि अब न्यामे मकड़े के साथ पता नहीं क्या करेगें।

पर यह सुन कर न्यामे को बड़ा आनन्द आया कि इतने सारे लोगों में उसी एक अजीब से दिखने वाले जानवर ने उसकी चुनौती

स्वीकार की। और यह तो वह जानवर था जो कि उसके अनुसार उसके केवल प्रयोग और जॉच[28] का एक नतीजा था।

फिर भी वह मकड़े की बहादुरी से बहुत प्रभावित था चाहे उसकी अक्लमन्दी से हो या न हो। इस बात से खुश हो कर कि कम से कम एक तो उसके मुकाबले में हिस्सा लेने के लिये आगे आया उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और उन सबसे कहा —

"आज तुम सब लोगों के सामने इस मकड़े ने मेरी यह चुनौती मान ली है कि वह अपनी अक्लमन्दी साबित करेगा। अब तुम सबको यह भी पता होना चाहिये कि अगर यह अपने को मेरी दुनियॉ का सबसे अक्लमन्द आदमी साबित न कर पाया तो, जैसा कि यह अपने आपको कहता है, मैं इससे बहुत गुस्सा हो जाऊॅगा।"

यह सुन कर वहॉ खड़े सब लोग आपस में कानाफूसी करने लगे और मकड़े को एक बार फिर से वह चुनौती स्वीकार न करने की सलाह देने लगे पर मकड़े ने न्यामे के सामने इज़्ज़त से अपना सिर झुकाया और बोला — "अगर मैं आपकी चुनौती पर खरा न उतरूॅ तो मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप चाहते हैं।"

न्यामे बोला — "क्योंकि मैं एक न्यायप्रिय और सबको प्यार करने वाला देवता हूॅ और अपने किसी भी आदमी को दुखी नहीं देख सकता तो अच्छा तो यही होगा तुम अपने आपको यह साबित कर देना कि तुम ही मेरी दुनियॉ के सबसे अक्लमन्द आदमी हो।"

[28] Translated for the words "Experiment and Test"

मकड़ा बोला — "मैं आपकी सेवा में तैयार हूँ।"

न्यामे ने मकड़े को पत्थर का एक टुकड़ा देते हुए कहा — "इसे तोड़ो ताकि हम सब इसे खा सकें। रस्म तो यही है कि ऐसे मौकों पर जैसा कि यह मौका है कोला नट[29] तोड़ा जाना चाहिये पर इस समय यहाँ पर कोला नट तो है नहीं तो इसी को कोला नट समझ कर तोड़ लेते हैं।"

यह सुन कर पहले तो मकड़ा बहुत परेशान हो गया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे या क्या करे और इसका क्या जवाब दे पर फिर वह जल्दी ही सँभल गया।

वह तुरन्त ही उस भीड़ में खड़ी स्त्रियों में से एक की कमर में बाँधने वाले कपड़ा खोल लाया और उस कपड़े को गोल गोल इँडुरी[30] जैसा लपेट कर न्यामे को दे दिया।

न्यामे ने पूछा — "यह किसलिये?"

---

[29] Kola Nut – or Cola Nut – a kind of nut like Indian betel nut which West African people offer to one another when they meet. Otherwise also they chew it most of the time of the day as Indians chew betel nut. See its picture above.

[30] One and half or two feet broad and about 2-3 feet long strip of cloth folded into a round shape kept on the head to support some load on the head or on the ground. See the picture of a pitcher kept on that Induri.

मकड़ा बोला — "मैं यह चाहता हूँ कि आप इस गॉव के मैदान को इस गद्दी के ऊपर रख कर और फिर उसको अपने सिर पर रख कर कहीं दूर ले जायें। मैं आपका यह पत्थर वहीं तोड़ूँगा"

न्यामे बोला — "यह क्या मजाक है? यह तो नामुमकिन है। इस तरह तुम गॉव के मैदान को इस इँडुरी पर रख कर उठा कर नहीं ले जा सकते। वह तो जमीन है कोई बोझा नहीं है जो इस तरह उठा कर ले जाया जा सके।"

मकड़ा बड़ी नम्रता से बोला — "आपने ठीक कहा। जैसा कि आप जानते हैं यह भी एक पत्थर है कोला नट नहीं है जिसे तोड़ कर खाया जा सके।"

न्यामे बोले — "ठीक है। तुमने मेरा पहला इम्तिहान पास कर लिया।"

फिर न्यामे ने अपनी जेब में हाथ डाला और मक्का का एक दाना निकाला और बोले — "अब यह तुम्हारा असली इम्तिहान है। अपनी अक्लमन्दी साबित करने के लिये मैं तुमको यह मक्का का दाना देता हूँ।

इसको तुम एक बहुत सुन्दर दुलहिन की कीमत[31] देने के लिये इस्तेमाल करोगे और फिर उस दुलहिन को मेरे ऑगन में ले कर

[31] Bride Price – In African countries it is customary to pay bride price to the bride's parents before marrying her.

आओगे। इस काम के लिये तुमको सात बाजार दिन[32] दिये जाते हैं।"

मकड़े ने न्यामे से वह मक्का का दाना लिया, देवता को सिर झुकाया और अपने घर चला गया। घर आ कर उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसका एक लम्बी यात्रा पर जाने के लिये सामान बॉध दे।

उसका परिवार तो जबसे उसने न्यामे की चुनौती मानी थी तभी से ही डरा हुआ था इसलिये उसके परिवार वालों ने भी उससे कहा कि अब भी समय है वह बस कहीं भी गायब हो जाये तो उसकी जान बच जायेगी पर अनन्सी अपने इरादों में पक्का था।

उसने कहा जैसा वह कहता है वैसा ही किया जाये। उसको कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े पर वह कभी अपने वायदे से नहीं फिरेगा।

अगले दिन सुबह ही उसने अपना थैला उठाया, उसे अपने गले में लटकाया और अपनी यात्रा पर रवाना हो गया। हालॉकि उसको मालूम था कि यह काम बहुत ही मुश्किल है पर फिर भी उसने अपने ये विचार अपने चेहरे पर झलकने नहीं दिये।

उसने अपने मन में सोचा कि मुझे अपनी साख और शान बना कर रखनी चाहिये और इसी लिये मुझे कोई ऐसा आदमी अपने

[32] Market days – means when the market is organized. There village market was organized daily, it means that Anansi was given seven days to do this job.

पास भी नहीं फटकने देना चाहिये जो मेरे प्लान में रुकावट डाले सो वह अकेला ही अपने लम्बे इधर उधर घूमते हुए रास्ते पर बिना किसी मतलब के चल दिया।

हालॉकि उसने अपने इस काम को पूरा करने के लिये काफी सोचा विचारा था पर फिर भी वह किसी निश्चित रास्ते पर नहीं पहुँच पाया था कि वह न्यामे का काम कैसे करेगा।

अपनी दूसरे दिन की यात्रा के तीसरे पहर में वह एक गॉव में आ पहुँचा। इस समय तक उसके पास जो कुछ भी खाना वह घर से ले कर चला था सब खत्म हो गया था।

सो जब वह उस गॉव में आया तो वहुत भूखा और थका हुआ था। वहॉ आ कर उसने एक मुर्गी पालने वाले को ढूँढा। वह उसको वहॉ मिल गया।

एक आदमी अपने मुर्गे मुर्गियों को दाना खिला रहा था। उसने उससे रात भर के लिये ठहरने के लिये जगह मॉगी और यह वायदा किया कि वह सुबह होते ही अपनी यात्रा पर निकल जायेगा। वह आदमी दयालु था सो उसने उसे रात भर के लिये अपने घर में जगह दे दी।

जब उन्होंने अपना शाम का खाना खा लिया तो मकड़े ने न्यामे का दिया हुआ वह मक्का का दाना निकाला और उसे अपने मेजबान को दिखा कर बोला — "यह एक ऐसा आश्चर्यजनक मक्का का दाना है जैसा तुमने पहले कभी नहीं देखा होगा।

अगर तुम इस दाने को बो दो तो फसल काटने के समय तुमको इससे सात बुशैल[33] मक्का मिल जायेगी।

मैं इस दाने को कभी अपनी ऑखों से दूर नहीं करता और सारी ज़िन्दगी मैंने इसकी अपनी जान से भी ज़्यादा रक्षा की है। बस अब मैं इस दाने के बोने के मौसम का इन्तजार कर रहा हूँ।"

मकड़े का मेजबान तो उस मक्के के दाने के बारे में यह बात सुन कर बहुत ही प्रभावित हो गया। वह तो यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा मक्का का दाना दुनियॉ में था भी जिससे सात बुशैल मक्का पैदा हो सकती थी। उसने उस दाने को रात भर छिपा कर रखने में मकड़े की सहायता भी की।

सुबह जब मकड़ा अपने वायदे के अनुसार अपनी यात्रा पर निकलने लगा तो उसने उस आदमी से अपना वह मक्का का दाना मॉगा और कहा — "लाओ वह मक्का का दाना मुझे दे दो। बोने से पहले मुझे अभी उस दाने को थोड़ा और सुखाना है।"

उसका मेजबान वह दाना ले आया और मकड़े ने उसको पास में ही धूप में सूखने के लिये रख दिया। जैसे ही मकड़े ने वह दाना

[33] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel). See the picture above.

सूखने के लिये रखा कि तुरन्त ही एक मुर्गा आया और उस दाने को खा गया।

यह देख कर तो मकड़ा बहुत ज़ोर से रो पड़ा — "हाय मेरा मक्का का दाना। हाय मेरा मक्का का दाना।"

उस आदमी ने उस दाने के बदले में उसको बहुत सारी चीज़ें देनी चाहीं पर वह तो किसी चीज़ पर भी राजी नहीं हो रहा था। उसको तो बस अपना वही मक्का का दाना चाहिये था जो उस आदमी का मुर्गा खा गया था।

अब वह आदमी उसको वही मक्का का दाना कहॉ से देता वह तो मुर्गा खा गया था। आखीर में वह इस बात पर राजी हुआ कि वह उस दाने के बदले में उसी मुर्गे को लेगा जिसने उसका दाना खाया था ताकि वह घर जा कर उस मुर्गे को मार सके और उसके पेट में से वह दाना निकाल सके।

पर अब यह कैसे पता चले कि उसका मक्का का दाना किस मुर्गे ने खाया है। इसलिये अब यह तो कहने की कोई बात ही नहीं है कि अनन्सी ने उस आदमी के मुर्गे और मुर्गियों में से सबसे बढ़िया मुर्गे को चुन लिया। मकड़े ने उस आदमी को धन्यवाद दिया और दूसरे गॉव चल दिया।

दूसरे गॉव पहुॅच कर उसने एक भेड़ चराने वाले को ढूॅढा और उसके मिल जाने पर उससे भी रात भर ठहरने के लिये जगह मॉगी।

उस आदमी ने भी दया कर के उसको रात भर ठहरने के लिये जगह दे दी।

मकड़े ने अपना मुर्गा उसको रात भर के लिये उसकी भेड़ों के साथ रखने के लिये दे दिया। रात को वह उठा और उसने अपना मुर्गा मार दिया।

अगले दिन सुबह जब वह जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपना मुर्गा वापस माँगा। जब वह चरवाहा उसका मुर्गा लेने के लिये अपनी भेड़ों के बाड़े में गया तो वहाँ तो मकड़े का मुर्गा मरा पड़ा था।

मकड़ा बोला — "क्या तुम सच बोल रहे हो? वह तो मेरा बहुत ही खास मुर्गा था। क्या तुमने देखा नहीं था कि उसका सिर कितना बड़ा और लाल था?"

चरवाहा बेचारा घबरा गया और घबरा कर बोला — "अब मैं वह मुर्गा तो तुमको नहीं दे सकता पर यह बताओ कि इसके बदले में मैं तुम्हें क्या दूँ?"

मकड़ा बोला — "तुमने मेरे साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव किया है पर जो तलवार के बल पर जीता है वह तलवार से ही मारा जाता है। तुम मुझे बस वह भेड़ दे दो जिसने मेरे मुर्गे को मारा है।"

"पर मुझे तो यह नहीं मालूम कि किस भेड़ ने उसको मारा है।"

मकड़े ने एक मोटे से भेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा — "मुझे लगता है कि मेरे मुर्गे को उस भेड़ ने मारा है। उसके सींग

देखो और उसकी चालाक ऑखें देखो। मुझे यकीन है कि यही वह भेड़ है जिसने मेरे मुर्गे को मारा है।"

चरवाहा बेचारा क्या करता। उसने मकड़े को वह भेड़ दे दी जो उसने मॉगी थी। मकड़े ने उस भेड़ के गले में रस्सी बॉधी और उसको ले कर फिर से अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

रात होने पर वह एक दूसरे गॉव में पहुँचा तो वहॉ उसने एक जानवरों के मालिक को ढूँढा और उससे रात को ठहरने की जगह मॉगी। यह मालिक उसको ठहराने के लिये राजी तो हो गया पर उसको राजी होने में थोड़ा समय लगा।

मकड़ा बोला — "तुमको मुझे जानने की जरूरत नहीं है। मैं अनन्सी मकड़ा[34] हूँ और न्यामे का आदमी हूँ। उन्होंने मुझे दूर के गॉव में एक खास काम से भेजा है। अगर तुम मुझे अपने घर में रात को रुकने की जगह दे दोगे तो वह तुम्हारा भला करेगा।"

यह सुन कर उस जानवरों के मालिक ने उसको अपने घर में शरण दे दी। उसने उसको खाना खिलाया और अपने मेहमानों वाले कमरे में उसको ठहरा दिया।

जब मकड़ा सोने जाने लगा तो उसने अपने मेजबान से अपने भेड़ को उसके जानवरों के साथ रखने के लिये कहा। उसने जानवरों के मालिक से कहा — "मेरा यह भेड़ बहुत ही खास है यह अपने साथियों के साथ नहीं सोता, यह जानवरों के साथ ही सोना

[34] Anansi Spider

पसन्द करता है इसलिये तुम इसको अपने जानवरों के साथ ही रख लो।"

मालिक तुरन्त ही उस भेड़ को अपने जानवरों के बाड़े में ले गया और उसको अपने जानवरों के साथ रख दिया। वहॉ भी मकड़ा रात को उठा, जानवरों के बाड़े की तरफ गया और अपने भेड़ को मार दिया।

जब मकड़ा सुबह अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपने मेजबान से अपना भेड़ मॉगा। मेजबान मकड़े का भेड़ लेने गया तो उसने देखा कि मकड़े का भेड़ तो मरा पड़ा है।

उसने मकड़े से प्रार्थना की कि वह अपने भेड़ के बदले में उसके जानवरों में से कोई सा भी जानवर चुन ले। तो उसने उसके जानवरों में से उसका सबसे अच्छा बैल चुन लिया और उसको ले कर फिर से अपनी यात्रा पर चल दिया।

रास्ते में उसने लोगों के एक झुंड को ज़ोर ज़ोर से रोते हुए सुना तो वह उनके पास गया और यह जानने की कोशिश की कि वे सब क्यों रो रहे थे। वहॉ जा कर उसको पता चला कि उनमें से किसी एक का कोई एक मर गया था।

मकड़े ने दया दिखाते हुए पूछा — "कौन है वह?"

उनमें से एक बोला — "वह एक छोटी लड़की है और ये उसके माता पिता हैं।"

मकड़ा बोला — "मुझे बच्ची के मरने का बहुत अफसोस है पर शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूँ। मैं न्यामे का एक प्रिय आदमी अनन्सी मकड़ा हूँ। आप सबकी किस्मत अच्छी है जो आपको मैं मिल गया।

मैं इस लड़की के शरीर को न्यामे के राज्य में ले जाना चाहता हूँ जहाँ जा कर यह अमर हो जायेगी। आप लोग इस बैल को रख लें और इसे मार कर इसके माँस को खा कर आनन्द मनायें क्योंकि न्यामे आज आपसे बहुत खुश हैं।

और मुझे उस लड़की को दे दें ताकि मैं उसको न्यामे के पास ले जाऊँ और उसको अमर करा लाऊँ।"

गाँव वालों ने इस बात पर कुछ सोच विचार किया फिर उन्होंने इस बात पर अपने बड़ों की सलाह ली। सबको यही लगा कि मकड़े की बात ठीक थी सो उन्होंने उसकी बात मान ली।

उनकी बेटी तो उनके लिये मर ही चुकी थी पर अगर वह मकड़ा न्यामे से उनकी बेटी की ज़िन्दगी वापस ला सकता था और उसको अमर करा कर ला सकता है तो इसमें बुराई ही क्या थी।

फिर उनको अपना दुख भूलने के लिये भी तो कुछ चाहिये था सो उन्होंने उसका बैल रख लिया और उस लड़की का शरीर मकड़े को दे दिया।

मकड़े ने वहाँ मौजूद लोगों में से एक से उसका नीचे पहनने वाला कपड़ा लिया, लड़की के शरीर को उस कपड़े में लपेट कर

अपनी कमर से बॉधा और उसको दूसरे गॉव ऐसे ले गया जैसे कि वह लड़की सोयी हुई हो।

दो गॉव पार करने के बाद भी वह तब तक नहीं रुकना चाहता था जब तक कि रात न हो जाये। वह जब तीसरे गॉव आया तब रात हो चुकी थी सो उसने उस गॉव के रहने वालों से उसको उनके सरदार के पास ले जाने के लिये कहा।

गॉव वाले उसको अपने सरदार के पास ले गये। सरदार के पास पहुँचने पर उसने उससे कहा — "मैं न्यामे का आदमी हूँ।" और उसने उस लड़की को फर्श पर सावधानी से लिटा दिया और उससे उसके रहने के लिये एक खास घर मॉगा।

उसने आगे कहा — "यह न्यामे की बेटी है और कोई इसको तंग न करे। हम लोग बहुत देर से चलते चले आ रहे हैं और अब हमको थोड़ा आराम चाहिये।"

यह सुन कर सरदार ने मकड़े और न्यामे की बेटी के लिये अपना मेहमानों वाला कमरा खोल दिया। उसने मकड़े की बहुत खातिरदारी की और उसके खाने के लिये अपना सबसे मोटा बछड़ा भी कटवाया।

जब खाना तैयार हो गया तो सरदार ने मकड़े से कहा कि वह अब न्यामे की बेटी को भी जगा ले ताकि वह कुछ खा सके तो उसने जवाब दिया कि अगर उसको जगाया गया तो वह कुछ नहीं

खायेगी। इससे अच्छा तो यही है कि वह जब अपने आप उठेगी तभी वह जो कुछ खाना चाहेगी खा लेगी।

जब सब लोग सोने जाने लगे तो मकड़ा सरदार के पास गया और उससे कहा कि अच्छा होगा अगर वह उस लड़की को अपनी लड़कियों के साथ सोने देगा।

मकड़ा फिर बोला — "बच्चों को तो तुम जानते ही हो। वे सब जगह एक से ही होते हैं, यहाँ तक कि न्यामे के राज्य में भी। वह दूसरे बच्चों के साथ नहीं सोयेगी। वह केवल बड़ी लड़कियों के पास ही सोना पसन्द करती है।

तुम्हारे तो कई पत्नियाँ है सरदार, और मुझे यकीन है कि तुम्हारे कई बेटियाँ भी होंगीं और न्यामे की बेटी के साथ सोने में उनको कोई ऐतराज भी नहीं होगा।"

सरदार ने न्यामे का प्यार पाने की उम्मीद में कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम उसको ले आओ और मैं उसको अपनी बेटियों के साथ सुला दूँगा।"

मकड़े ने उस लड़की का शरीर बड़ी सावधानी से उठाया और उस कमरे की तरफ ले गया जहाँ सरदार की बेटियाँ सो रही थीं। वह जब वहाँ पहुँचा तो सरदार की बेटियाँ तो सो चुकी थीं।

उसने सरदार की दो सबसे बड़ी बेटियों में से एक को एक तरफ खिसका कर उस लड़की को उन दोनों के बीच में सुला दिया।

अगले दिन सुबह मकड़े को उसके जाने से पहले बहुत ही स्वादिष्ट और बहुत ही बढ़िया नाश्ता कराया गया। नाश्ते पर जाते हुए मकड़े ने सरदार के एक नौकर से कहा कि वह जा कर देखे कि न्यामे की बेटी अभी उठी या नहीं ताकि वह भी नाश्ता कर ले और अपनी लम्बी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हो जाये।

पर अफसोस, जब वह नौकर उस लड़की को देखने गया तो उसने बताया कि वह तो मर चुकी है।

मकड़ा बोला — "नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। वह मर नहीं सकती। वह जरूर ही गहरी नींद सो रही होगी।"

वह सरदार के साथ खुद उस कमरे में गया। उसने अपना हाथ उसकी नाक के आगे फिराया पर उसको तो उसकी सॉस ही महसूस नहीं हुई सो उसने उसका शरीर हिलाया पर उसका भी उसे कोई जवाब नहीं मिला। उसने फिर कोशिश की, सरदार ने भी कोशिश की पर कोई फायदा नहीं हुआ।

यह देख कर मकड़ा तो बहुत ज़ोर से रो पड़ा।

वह चिल्लाया — "ओह न्यामे की प्यारी बेटी।"

फिर वह सरदार से बोला — "जरूर ही तुम्हारी बेटी रात में उसके ऊपर आ गयी होगी और उसने उसको मार दिया होगा। अब मैं क्या करूँ?

अब मैं न्यामे के सामने कैसे जाऊँगा? मैं कैसे उसको अपना मुँह दिखाऊँगा? अब उसका गुस्सा तो उसके ऊपर ही निकलेगा जो भी उसकी प्यारी बेटी को मारने के लिये जिम्मेदार है – उसके माता पिता से ले कर पूरे राज्य पर।"

यह सुन कर सरदार तो बहुत ही घबरा गया। उसको तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह करे क्या। उसने न्यामे की प्रार्थना की कि वह चाहे तो उसको मार दे पर उसकी बेटियों और उसके राज्य को उसके किये की सजा न दे।

"मेहरबानी कर के ओ न्यामे, अपना गुस्सा मेरे आदमियों पर न निकालना। मैं आपके लिये किये गये इस खराब काम के लिये कोई भी प्रायश्चित करने के लिये तैयार हूँ।"

मकड़ा बोला — "मुझे लगता है कि इसका केवल एक ही रास्ता है और वह यह कि तुम अपनी सबसे अच्छी बेटी मुझे दे दो ताकि मैं उसे न्यामे के पास ले जा सकूँ और फिर वह उसके साथ जो चाहे करे।

मुझे नहीं लगता कि इस मामले में किसी और तरह का प्रायश्चित काम करेगा। इस तरीके से वह तुमको और तुम्हारे राज्य दोनों को छोड़ देगा।"

सरदार कुछ तसल्ली सी महसूस करते हुए बोला — "अगर इसी से काम चल जाता है तो यही सही। तुम उसको अपने साथ ले जा सकते हो।"

सो सरदार ने अपनी दूसरी बेटी मकड़े को दे दी पर मकड़े ने उसको लेने से मना कर दिया। उसने कहा कि उसको यकीन था कि उसकी सबसे बड़ी बेटी ने ही न्यामे की बेटी को मारा था। वह क्यों कि साइज़ में बड़ी थी इसलिये वही न्यामे की बेटी को मार सकती थी।

सरदार ने अपनी दोनों बेटियॉ मकड़े को दे दीं अगर वह उन दोनों को ले जाना चाहे तो, पर मकड़े ने केवल उसकी बड़ी बेटी को ही लिया।

मकड़े ने सरदार की बड़ी बेटी को साथ में लिया और उस छोटी लड़की का शरीर उठाया और न्यामे के पास आ पहुँचा। वहॉ आ कर उसने न्यामे को अपनी यात्रा का पूरा हाल बताया।

सुन कर न्यामे मकड़े की अक्लमन्दी से बहुत खुश हुआ। न्यामे ने उस छोटी लड़की के नथुनों में अपनी फूँक मार कर उसको ज़िन्दा कर दिया और उसको उसके माता पिता को वापस कर दिया। उसने सरदार की बेटी को भी सरदार को वापस कर दिया।

न्यामे फिर मकड़े से बोला — "और तुम्हारे लिये ओ अनन्सी, तुमने मुझे यह साबित कर दिया है कि मेरी दुनियॉ के सब लोगों में केवल तुम ही सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हो इसलिये मैं अपनी बात रखूँगा।"

सो न्यामे ने मकड़े को और बहुत सारी अक्लमन्दी दी। इसी लिये मकड़ा जानवरों के राज्य में आज भी सबसे ज़्यादा अक्लमन्द

जानवर माना जाता है। इसके अलावा न्यामे ने मकड़े को उसने जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा खजाना भी दिया।

पर उस खजाने का हुआ क्या यह तो किसी को नहीं पता।

क्योंकि उतना खजाना पाने के बाद वह मकड़ा फिर बहुत गरीब हो गया और इतना गरीब हो गया कि वह केवल अपनी अक्लमन्दी से जाला बुनने पर ही ज़िन्दा रहा। जानवरों के पूरे राज्य में केवल वही एक ऐसा जानवर है जो जाला बुनना जानता है और उससे अपना खाना पकड़ता है।

5 आदमी को अक्ल कैसे मिली[35]

आसमान के देवता न्यामे से अक्लमन्दी लेने के बाद अब अनन्सी मकड़ा[36] दुनियॉ का सबसे अक्लमन्द आदमी था।

जब दुनियॉ नयी नयी बनी थी तब अनन्सी को दुनियॉ के सारे जानवर और आदमी जानते थे। कुछ लोग उसको मकड़ा आदमी भी कहते थे क्योंकि वह जब चाहता तब मकड़ा बन जाता और जब चाहता तब आदमी बन जाता।

पर उसकी यही एक खासियत नहीं थी कि वह अपना रूप बदल सकता था बल्कि उसकी एक खासियत यह भी थी कि उसके पास दुनियॉ भर की अक्लमन्दी थी। यह अक्लमन्दी उसने न्यामे के रखे हुए एक इम्तिहान को पास कर के पायी थी।[37]

इसी अक्लमन्दी की वजह से उसके पास रोज ही बहुत सारे लोग सलाह लेने और सहायता के लिये आया करते थे।

एक बार उस देश के लोगों ने अनन्सी का कुछ अपमान कर दिया जिससे अनन्सी बहुत गुस्सा हो गया और उसने निश्चय किया

---

[35] How the Mankind Got Wisdom? – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=115
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[36] Anansi Spider – He is the most famous character of West African folktales – Ghana, Nigeria etc countries.

[37] Read the previous Story No 3 in this book – "Makka Ke Ek Daane Ke Badale Mein Patnee"

कि अबसे वह अपनी सारी अक्लमन्दी अपने पास ही रखेगा। किसी की न तो कोई सहायता ही करेगा और न ही किसी को कोई सलाह ही देगा।

फिर वह अपने आपसे ही ज़ोर से बोला — "अनन्सी अक्लमन्द है। अनन्सी महान है। और उसका यही कुछ तो दुनियॉ मानती नहीं।"

अनन्सी जिद्दी भी बहुत था और कभी कभी मतलबी भी बहुत था। जब भी उसको लगता कि लोग उसकी इज़्ज़त नहीं कर रहे हैं तब तो वह खास कर के जिद पकड़ लेता।

सो उस दिन भी जब लोगों ने उसकी बेइज़्ज़ती की तो उसने अपनी अक्ल को एक बड़े बर्तन में बन्द कर के रख दिया और उस बरतन को एक बहुत ऊॅचे पेड़ पर रखने का विचार किया जहॉ से कोई आदमी उसे ले न सके।

अनन्सी के एक बेटा था जिसका नाम था क्वेकु सीन[38]। जब अनन्सी उस बर्तन को ले कर किसी ऊॅचे पेड़ पर रखने के लिये अपने घर से बाहर निकला तो उसका बेटा भी यह देखने के लिये उसके पीछे पीछे हो लिया कि आखिर उसका पिता उस घड़े को ले कर जा कहॉ रहा था।

[38] Kweku Tsin – name of the son of Anansi Spider

अनन्सी ने पहले सारा गॉव पार किया और फिर जंगल की तरफ चल दिया। क्वेकु सब देखता जा रहा था कि उसका पिता क्या क्या कर रहा था।

जंगल पहुँच कर अनन्सी ने उस बर्तन को अपने पेट पर बॉधा और उसको ले कर एक बहुत ऊँचे पेड़ पर चढ़ना शुरू किया।

पर जब वह उस बर्तन को ले कर उस पेड़ पर चढ़ रहा था तो बार बार वह बर्तन उसके रास्ते में आ रहा था।

वह बर्तन चढ़ते समय बार बार उसके पेट और पेड़ से टकराता रहता जिससे वह जितनी ऊपर चढ़ता था उससे ज़्यादा नीचे की तरफ फिसल जाता था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

उसका बेटा नीचे खड़ा खड़ा यह सब देख रहा था।

अब क्योंकि अनन्सी की सारी अक्लमन्दी तो उसके उस बर्तन में रखी हुई थी जो वह ले कर चढ़ रहा था, उसके अपने पास तो थी नहीं सो वह कुछ ठीक से सोच भी नहीं पा रहा था कि ऐसी हालत में वह क्या करे पर क्वेकु को अपनी थोड़ी सी अक्ल थी सो उसके दिमाग में एक विचार आया।

जब अनन्सी के बेटे से रहा नहीं गया तो वह नीचे से ही चिल्लाया — "पिता जी, आप इस बर्तन को अपने सामने पेट पर बॉधने की बजाय अपनी पीठ पर बॉध लीजिये तब आप आसानी से पेड़ पर चढ़ पायेंगे।"

अनन्सी ने नीचे देखा और अपने बेटे की तरफ देख कर बोला — "मुझे लग रहा था कि मैंने दुनियॉ की सारी अक्लमन्दी इस बर्तन में बन्द कर रखी है पर अब मुझे लग रहा है कि तुम्हारे पास तो मुझसे भी ज़्यादा अक्ल है।

मेरी सारी अक्ल भी मुझको यह नहीं बता सकी कि इस समय मुझे क्या करना चाहिये और तुम मुझे यह बता रहे हो कि मुझे इस समय क्या करना चाहिये।"

यह सोच कर ही उसे बहुत गुस्सा आ गया और उसने वह बर्तन वहीं से नीचे फेंक दिया। नीचे गिरते ही वह बरतन टूट गया और उसमें जितनी भी अक्ल रखी थी वह सब दुनियॉ भर में बिखर गयी। लोगों ने वह बिखरी हुई अक्ल अपनी अपनी झोली में समेट ली।

इस तरह दुनियॉ के लोगों को अक्ल मिली।

शायद यह दुनियॉ तब ज़्यादा सुन्दर होती जब लोगों ने उस बर्त न में भरी सारी अक्लमन्दी इस्तेमाल भी की होती।

बच्चों क्या तुमने भी उसमें से कुछ अक्ल समेटी? कितनी?

6 अनन्सी और अक्ल का घड़ा[39]

अनन्सी की दुनियॉ में अक्ल लाने की यह एक और लोक कथा। यह भी बहुत पुरानी कहानी है जब दुनियॉ बनी ही बनी थी और यह

कहानी भी उसी अनन्सी मकड़े[40] की कहानी है जो बहुत ही लालची और चालाक था।

असल में अनन्सी तो उस मकड़े का आखिरी नाम था, उसका पहला नाम तो क्वेकु था जो बहुत कम लोग जानते थे। और यह नाम उसका इसलिये था क्योंकि वह बुधवार को पैदा हुआ था।

एक बार अनन्सी मकड़े ने सोचा कि क्यों न सारी दुनियॉ की अक्ल ले कर वह सबसे ज़्यादा अक्लमन्द आदमी बन जाये ।

सो उसने एक घड़ा लिया और सारी दुनियॉ में घूम घूम कर उसमें सारी दुनियॉ की अक्ल इकट्ठी की। इसके बाद उसको विश्वास हो गया कि उससे ज़्यादा अक्लमन्द आदमी अब इस सारी दुनियॉ में और कोई है ही नहीं।

[39] Ananse and the Pot of Wisdom – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php
told by Rev Peter E Adotey Addo – a Ghanaian.
This story is similar to the Story No 4 – "Aadmi Ko Aqla Kaise Milee", given in this book

[40] Kweku Ananse Spider

लेकिन अब उसे वह रखे कहाँ? उस अक्ल को उसने कहीं ऐसी जगह रखने की सोचा जहाँ से उसे कोई न ले सके।

पहले उसने सोचा कि सबसे अच्छा तो यही रहेगा अगर वह उस घड़े को अपने गले में लटका ले पर तुरन्त ही उसके दिमाग में आया कि जब लोग मेरे गले में घड़ा लटका देखेंगे तो सोचेंगे कि इस घड़े में क्या है।

और अगर उनको कहीं यह पता चल गया कि इस घड़े में अक्ल है तो वे इसको मुझसे छीन लेंगे और यह उसको मंजूर नहीं था।

सो उसने सोचा कि इससे तो अच्छा है कि मैं इसे जंगल में किसी बहुत ऊँचे पेड़ पर टाँग दूँ तो वहाँ से इसको कोई नहीं ले पायेगा। बस उसने वह घड़ा अपनी गले में लटकाया और उसे ले कर जंगल की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर उसने एक सबसे ऊँचा पेड़ ढूँढना शुरू किया तो वहाँ उसको एक काँटे वाला सेमल का पेड़[41] दिखायी दे गया जो वहाँ सबसे ऊँचा था।

जब वह उस पेड़ पर चढ़ने लगा तो बार बार वह घड़ा उसके पेट और पेड़ के बीच में आ जाता और वह ऊपर नहीं चढ़ पाता था।

[41] Translated for the word “Silk Cotton Tree”. Its cottonwool is very famous as it is very nice, soft, light and silky. See the picture of its tree above.

नीचे से उसका बेटा यह सब देख रहा था। उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, यह आप क्या कर रहे हैं?"

अनन्सी बोला — "बेटे, मेरे पास यह अक्ल से भरा घड़ा है। मैं इसे सब लोगों से दूर इस पेड़ के ऊपर टॉगने जा रहा हूँ। अब मैं दुनियॉ का सबसे अक्लमन्द आदमी हूँ।"

बेटा बोला — "पिता जी, मेरे दिमाग में एक विचार आया है। अगर आप यह घड़ा अपने गले में लटकाने की बजाय अपनी पीठ पर लटका लें तो आप आसानी से चढ़ सकेंगे।"

चालाक मकड़े ने ऐसा ही किया और आश्चर्य की बात तो यह कि वह उस घड़े को अपनी पीठ पर बॉध कर आसानी से उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया और एक ऊॅची सी शाख पर जा कर बैठ गया।

लेकिन तभी उसके दिमाग में एक और विचार भी आया — "मैं तो समझता था कि दुनियॉ की सारी अक्लमन्दी मेरे ही पास है पर मेरे बेटे की अक्लमन्दी तो मेरे इस बर्तन में नहीं है जिसके बिना मैं यहॉ ऊपर तक चढ़ ही नहीं सकता था।"

इसका मतलब यह हुआ कि कोई एक आदमी सारी अक्लमन्दी नहीं रख सकता। "मैं भी कितना बेवकूफ हूँ।" कह कर उसने वह घड़ा वहीं से नीचे फेंक दिया।

नीचे गिरते ही वह घड़ा फूट गया और उसमें से सारी अक्लें बाहर निकल कर सारी दुनियॉ में फैल गयीं। घड़ा नीचे फेंक कर अनन्सी नीचे उतर आया और अपने घर चला गया।

बच्चों तुम्हारे हिस्से में कितनी अक्लें आयीं? तुमने भी तो वहॉ से कुछ अक्ल ली होगी न।

7 अनन्सी और अक्लमन्दी का बर्तन[42]

यह अनन्सी की अक्लमन्दी की एक और लोक कथा। यह कहानी भी पिछली कहानियों जैसी ही है।

जैसा कि तुम लोग जानते हो कि अनन्सी कोई मामूली मकड़ा तो है नहीं बल्कि एक बहुत ही खास मकड़ा है। वह अपनी मजेदार बातों और अक्लमन्दी के लिये बहुत मशहूर है।

उसकी सबसे ज़्यादा खास बात यह है कि वह दूसरे मकड़ों से बिल्कुल भी अलग दिखायी नहीं देता इसलिये उसको दूसरे मकड़ों से अलग करना बहुत मुश्किल काम है।

बल्कि जो भी मकड़ा तुम देखो तो हो सकता है कि वही मकड़ा अनन्सी हो क्योंकि वह भी दूसरे मकड़ों की तरह ही कोनों में और छतों में रहता है।

हर आदमी जानता था कि अनन्सी बहुत ही अक्लमन्द था क्योंकि वह बड़ी ज़ोर ज़ोर से और साफ तरीके से अपनी डींगें हॉकता था। वह अपनी ऊॅची आवाज में बेवकूफों के ऊपर हॅसता और दूसरों से भी ज़्यादा ऊॅची आवाज में बोलता।

एक दिन जब बहुत अच्छी धूप निकल रही थी तो आसमान के देवता ने अनन्सी को आसमान में बात करने के लिये बुलाया और

[42] Ananse and the Pot of Wisdom – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the book : "The Pot of Wisdom: Ananse stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

कहा — "अनन्सी तुम जानते हो न कि मैंने तुमको सब जीवों में सबसे ज़्यादा होशियार बनाया है।"

अनन्सी बोला — "बेशक, आपने मुझे सारे जानवरों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द जानवर पैदा किया है।"

आसमान के देवता ने धीरे से कहा — "क्या तुम मेरा एक काम करोगे अनन्सी? तुम धरती पर सब तरफ जाओ और मेरे लिये वहाँ से सारी अक्लमन्दी इकट्ठी कर के ले कर आओ। जब तुम उसको मेरे पास ले आओगे तो मैं तुमको "सारे समय का अक्लमन्द"[43] का नाम दे दूँगा।"

अनन्सी अपनी मुस्कुराहट छिपाते हुए बोला — "यह तो बहुत ही आसान है देवता जी। मैं आपका यह काम कर के तीन दिन में वापस आता हूँ। तीन दिनों में आपको पूरी दुनियाँ की अक्लमन्दी मिल जायेगी।"

अब अनन्सी तो बहुत ही मतलबी और अक्लमन्द था। वह तो सारी दुनियाँ पहले ही काफी घूम चुका था और सारी अक्लमन्दी पहले से ही इकट्ठी कर चुका था। तो उसको तो इसमें कोई परेशानी होने वाली थी नहीं।

उसने वह सारी अक्लमन्दी एक बहुत बड़े बर्तन में भर कर उसको बन्द कर के एक बहुत ही खास जगह रखी हुई थी।

[43] Translated for the words "The Sage of All Time"

यह कह कर वह आसमान के देवता के घर से अपने ही बुने हुए बहुत ही बढ़िया धागे के सहारे से नीचे उतर कर अपने घर आ गया। वहाँ उसने छाया में आराम किया और आलसीपने में सारा दिन गुजार दिया।

अगले दिन अनन्सी ने उस अक्ल के बर्तन को अपनी पीठ पर रखा और उसको ले कर आसमान के देवता के पास चल दिया। वह बर्तन बड़ा था और भारी था। वह उसको ले जाते समय बहुत ही शान महसूस कर रहा था।

जब दूसरों ने उससे पूछा कि क्या वे उस बर्तन को ले जाने में उसकी सहायता कर दें तो वह बहुत ही साफ शब्दों में बोला — "नहीं नहीं, यह एक बहुत ही ऊँचे अफसर का बहुत ही राज़ का काम है सो इसको मैं खुद ही करूँगा।"

आसमान तक पहुँचने के लिये जहाँ आसमान के देवता रहते थे एक बड़े ऊँचे नारियल के पेड़ पर से चढ़ कर जाना पड़ता था जो बादलों के उस पार आसमान तक जाता था।

अनन्सी उस पेड़ के नीचे जा कर रुक गया और सोचने लगा कि वह कौन सा सबसे अच्छा तरीका हो सकता था जिससे वह अपना भारी बोझा आसानी से ऊपर ले जा सके।

वह उस बर्तन को अपने सिर पर रख कर तो ले कर जा नहीं सकता था क्योंकि उसको अपनी आठों टॉगें उस पेड़ पर ऊपर चढ़ने के लिये चाहिये थीं। सोचते सोचते उसने वह बर्तन अपनी पीठ पर एक रस्सी से बॉध लिया और धीरे धीरे उस पेड़ पर चढ़ने लगा।

दूर से बहुत सारे लोग उसको इतनी धीरे धीरे ऊपर चढ़ते हुए देख रहे थे। उनको पता था कि वह आसमान के देवता से मिलने जा रहा था सो वे लोग उसको देखने के लिये उस पेड़ के नीचे इकट्ठे हो गये थे। वे बस यही सोच रहे थे कि उस बड़े से भारी से बर्तन में था क्या।

इंच इंच कर के अनन्सी उस पेड़ पर चढ़ रहा था। वह बस यही सोचता जा रहा था कि कब वह आसमान के देवता के पास पहॅुचेगा और कब आसमान के देवता उसको वह "सारे समय का अक्लमन्द" का नाम दे देंगे।

दोपहर हो कर शाम होने आ रही थी और सूरज आसमान में इधर से उधर जा रहा था। सूरज डूबने से पहले अनन्सी थोड़ा सा रुका और अपने आपको सुरक्षित रखने के लिये उसने अपने चारों तरफ थोड़ा सा जाला बुना और सो गया।

पर उस रात वह अपनी खुशी में ठीक से सो भी नहीं पाया। अगले दिन सुबह वह जल्दी ही उठ गया और फिर से अपनी यात्रा पर चल दिया। उस दिन पेड़ के नीचे भीड़ और भी ज़्यादा थी। वे सब उसको हाथ हिला हिला कर विदा कर रहे थे।

उसका तो अगले दिन आसमान के देवता से मिलने का वायदा था सो वह अपने शरीर में दर्द होने के बावजूद ऊपर चढ़ता चला जा रहा था।

अनन्सी ऊपर और और ऊपर चढ़ता जा रहा था कि चॉद निकल आया तो उसको लगा कि अब उसको थोड़ा आराम कर लेना चाहिये।

उस रात उसने सपने में देखा कि उसने आसमान के देवता का दिया हुआ ताज पहन रखा है और उस पर लिखा हुआ है "सारे समय का अक्लमन्द"।

एक और दिन गुजर गया और बहुत थका हुआ अनन्सी अब अपनी यात्रा के आखीर तक पहुॅच चुका था। भीड़ नीचे ताली बजा रही थी।

यह तो अनन्सी के लिये एक बहुत ही बड़ा पल था सो उसने शान में आ कर अपनी जीत की खुशी में नीचे देखते हुए अपने आठों हाथ ऊपर उठा दिये।

हाथ उठाते ही उसने नीचे देखा तो वह तो एकदम से डर गया क्योंकि वह तो अपने आठों हाथ उठाते ही नीचे की तरफ गिरने लगा था।

कुछ ही मिनट में वह धम्म से नीचे आ गिरा और उसका अक्ल का वह बड़ा बर्तन भी टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गया। उसमें भरी हुई सारी अक्लमन्दी भी धरती पर चारों तरफ बिखर गयी।

अनन्सी वहीं का वहीं पड़ा रह गया। उसका दिल रो रहा था। इतनी मुश्किल से तो उसने यह अक्ल इकट्ठी की थी और अब वह सब बिखर गयी थी और उसके हाथ से निकल गयी थी।

उसको केवल इसी बात का दुख नहीं था कि उसका घड़ा टूटने से उसकी सारी अक्लमन्दी बिखर गयी थी बल्कि सबसे बड़ा दुख तो उसको इस बात का था कि आसमान के देवता जो नाम उसको देने वाले थे वह भी अब उसके हाथ से निकल गया था।

पर इससे एक फायदा यह हुआ कि अब हर बेवकूफ को कम से कम थोड़ी बहुत अक्ल मिल गयी थी। अब कोई भी यह नहीं कह सकता था कि वह सारी अक्लमन्दी उसकी अकेले की है।

आसमान के देवता ने अनन्सी के कान में फुसफुसाया — "अनन्सी मैंने तुमको आठ हाथ दिये थे। अगर तुम्हारे पास वाकई थोड़ी सी भी अक्ल होती तो तुमने नीचे खड़े लोगों को अपने सारे हाथ न हिलाये होते।"

8 मकड़े का सिर गंजा क्यों?[44]

बच्चों क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि मकड़े का सिर गंजा क्यों होता है। पहले ऐसा नहीं था। पहले उसके भी बहुत बड़े बड़े सुन्दर बाल थे पर इस घटना के बाद...

बहुत पुरानी बात है कि गीज़ो मकड़ा एक नदी के किनारे अपनी पत्नी असो[45] के साथ केले के पत्तों के बने एक घर में रहता था।

एक सुबह गीज़ो जल्दी उठ गया। उस दिन उसको बहुत अच्छा लग रहा था सो उसकी इच्छा हुई कि वह किसी की कुछ सहायता करे कि उसे अचानक अपनी सास की याद आ गयी।

उन दिनों चावल बोने का मौसम था तो उसने सोचा कि वह जा कर उसकी चावल बोने में सहायता करेगा सो वह अपनी सास के घर चल दिया।

उसकी सास का खेत उसके घर से काफी दूर था सो जब तक वह उसके घर पहुँचा उसको भूख लग आयी थी। उसने देखा कि वह बूढ़ी स्त्री बेचारी अपने चावल के बीजों को बोने के लिये उनकी तरफ देख रही थी।

[44] Why the Spider Has Bald Head? – a folktale from Northern Nigeria, Africa.

[45] Gizo is the name of Anansi Spider and Asso is the name of his wife in Northern Nigeria

मकड़ा अपनी सास से बोला — "नमस्ते मॉ जी, मैं आपके चावल बोने में आपकी सहायता करने आया हूँ।"

असो की मॉ तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "आओ बेटा आओ। अच्छा हुआ तुम आ गये। मैं तो चावल बोने के लिये किसी का इन्तजार ही कर रही थी।

पर पहले हम चावल बो लें फिर हम खाना खायेंगे। मुझे मालूम है मेरे बेटे कि तुमको बीन्स बहुत अच्छी लगती हैं सो आज मैं तुम्हारे लिये सबसे अच्छी बीन्स बनाऊँगी।"

उसने एक बड़ा सा पकाने वाला पतीला लिया। उसमें उसने बीन्स डालीं, प्याज डाली, टमाटर डाले, मॉस डाला और लाल मिर्च डाली।

फिर वह पास के एक छोटे से रसोईघर में गयी जिसके पास वह मकड़ा काम कर रहा था और उस बर्तन को चूल्हे पर पकने के लिये रख दिया। फिर वह खेत के दूसरे हिस्से में काम करने चली गयी।

थोड़ी ही देर में बीन्स के बर्तन में से बीन्स के पकने की बहुत अच्छी खुशबू आने लगी। खेत पार कर के पकती हुई बीन्स की वह खुशबू मकड़े की नाक में पहुँची। मकड़े ने बहुत कोशिश की कि वह उस खुशबू की तरफ ध्यान न दे पर ऐसा न हो सका।

हर बार जब भी वह चावल का एक दाना बोने के लिये एक गड्ढा खोदता तो वह बीन्स के उस बर्तन के और पास आता जाता

जिसमें वे बीन्स पक रही थीं और उसकी नाक में वह खुशबू और ज़्यादा चढ़ती जाती। आखीर में आ कर तो वह बीन्स के बर्तन से ही टकरा गया।

बीन्स की सोंधी सोंधी खुशबू उसकी नाक में बहुत ज़ोर से घुस रही थी। उससे रहा नहीं गया। उसने अपने सिर से अपना टोप उतारा, एक लम्बी चम्मच से थोड़ी सी बीन्स उसमें भरीं और उनको खाने लगा।

वे बीन्स तो बहुत ही स्वादिष्ट थीं। उसने इधर देखा, उधर देखा पर उसे कोई भी उधर आता दिखायी नहीं दे रहा था सो जल्दी से उसने चम्मच से थोड़ी सी बीन्स अपने टोप में और डाल लीं। फिर भी जब उसे कोई और आता नहीं दिखायी दिया तो उसने अपना टोप बीन्स से भर लिया।

बराबर के खेत में कुछ और लोग भी अपना अपना चावल बो रहे थे। अचानक चिड़ियों का एक झुंड नीचे की तरफ उतरा और चावल के बीज खाने लगा।

यह देख कर उन लोगों ने उन चिड़ियों के ऊपर पत्थर फेंकने शुरू किये। पत्थरों से बचने के लिये वे चिड़ियें असो की मॉ के रसोईघर में उड़ चलीं। लोग भी उनके पीछे पीछे रसोईघर की तरफ चल पड़े। अब वहॉ तो मकड़ा अपने टोप में बीन्स लिये खड़ा था।

मकड़े के पास इस समय न तो उन बीन्स को छिपाने का समय था और न ही वहॉ से भाग जाने का समय था सो उसने अपना वह टोप अपने सिर पर रख लिया।

बीन्स बहुत गर्म थीं उन्होंने उसका सिर जलाना शुरू कर दिया। मकड़ा अपना सिर जलने की वजह से इधर उधर घूमने लगा, नाचने लगा और फिर बाहर की तरफ भाग गया।

सारे लोग मकड़े का यह अजीब तमाशा देख रहे थे। उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है।

उन्होंने उससे पूछा भी कि वह ऐसा क्यों कर रहा था तो उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि वह "टोप हिलाने वाला" नाच नाच रहा था। और यह कहने के साथ साथ वह अपना सिर और ज़ोर ज़ोर से हिलाने लगा।

मकड़ा बोला — "अब मुझे अपने पिता के घर जाना चाहिये क्योंकि वहॉ भी यह "टोप हिलाने वाला त्यौहार" हो रहा होगा।"

लोगों ने पूछा — "यह "टोप हिलाने वाला त्यौहार" कौन सा त्यौहार होता है?" क्योंकि उन्होंने इस त्यौहार का नाम पहले कभी नहीं सुना था।

मकड़ा ज़ोर से बोला — "यह त्यौहार तो हर साल आता है। पर मुझे अब जल्दी ही अपने घर चले जाना चाहिये क्योंकि मेरे पिता जी मेरा इन्तजार कर रहे होंगे।"

और यह कह कर वह जंगल की तरफ भाग गया। सारे लोग उसके पीछे पीछे दौड़ लिये क्योंकि वे सब भी इस नये त्यौहार के बारे में जानना चाहते थे।

सारे समय गर्म बीन्स मकड़े के सिर को गर्मी देती रहीं। आखिर मकड़ा उनकी गर्मी और ज़्यादा सहन नहीं कर सका और उसने अपना टोप अपने सिर से उतार दिया।

टोप के सिर से उतरते ही उसमें भरी बीन्स, टमाटर, प्याज, लाल मिर्च, मॉस सभी कुछ टोप में से नीचे गिर कर बिखर गया।

यह देख कर सारे लोग बहुत ज़ोर से हॅस पड़े क्योंकि अब मकड़े का सिर अंडे जैसा चिकना लग रहा था। मकड़ा तो शर्म से इतना पानी पानी हुआ कि उसको लगा कि बस वहॉ की घास अभी फट जाये और वह उसमें छिप जाये।

मकड़े की इच्छा पूरी हुई। घास ने उसको जगह दे दी और मकड़ा उसके अन्दर घुस गया।

तब से ले कर आज तक सब मकड़ों के सिर गंजे होते हैं और इसी लिये वे घास में चलना भी ज़्यादा पसन्द करते हैं ताकि वे लोगों की नजरों से छिप रहें।

9 मकड़े की कमर पतली क्यों?[46]

एक दिन अनन्सी मकड़ा एक़ जंगल से हो कर जा रहा था। सुबह सुबह का समय था। कि उसको कहीं से बड़ी अच्छी सी खुशबू आयी। अरे, यह तो खाने की खुशबू थी।

उस दिन फसल काटने वाला त्यौहार[47] था सो हर आस पास के गॉव वाले इस त्यौहार को मनाने के लिये बढ़िया बढ़िया खाना बना रहे थे। यह उसी खाने की खुशबू थी।

मकड़े का मन खुशी से नाच उठा। उसको तो वहीं से उस खुशबू से ही बढ़िया खाने का स्वाद भी आने लगा था।

पर इस बढ़िया खाना खाने के लिये उसने तो कुछ किया नहीं था क्योंकि मकड़े तो काम करना पसन्द ही नहीं करते। वह तो सारे दिन धूप में या तो खेलता रहता था और या फिर सोता रहता था।

जब उसे खाना खाना होता तो वह अपने दोस्तों के घर पहुॅच जाता और वहीं उनके घर खाना खा लेता था। बल्कि वह उन लोगों से कहीं ज़्यादा खाना खाता था।

मकड़े को मालूम था कि दो गॉव वहॉ से पास में ही पड़ते थे और दोनों गॉवों में दावत हो रही होगी। और क्योंकि इत्तफाक से वे दोनों गॉव एक सी ही दूरी पर थे इसलिये वह दोनों गॉव की दावत

[46] Why the Spider Has So Thin Waist? – a folktale from West Africa

[47] Harvesting festival

एक साथ तो खा नहीं सकता था सो वह सोचने लगा कि वह किस गॉव की दावत में पहले जाये और किस गॉव की दावत में बाद में।

फिर उसको ख्याल आया कि वह दोनों गॉव की दावत में जा सकता था। उसने अपने बड़े बेटे टिकूमा[48] को बुलाया। उसने एक लम्बी सी रस्सी ली और उसका एक सिरा अपनी कमर में बॉध लिया और दूसरा सिरा अपने बेटे को थमा दिया।

फिर उसने अपने बेटे से कहा — "ले यह रस्सी ले और इसको पकड़ कर पूर्व की तरफ वाले गॉव तक चला जा और जब वहॉ खाना तैयार हो जाये तो यह रस्सी खींच देना। इससे मुझे पता चल जायेगा कि वहॉ खाना तैयार हो गया है और मैं वहॉ आ कर खाना खा लूँगा।"

फिर उसने अपने छोटे बेटे क्वाकू[49] को बुलाया और एक दूसरी लम्बी सी रस्सी ली। उसने उस दूसरी रस्सी का भी एक सिरा उस पहली रस्सी के ठीक नीचे अपनी कमर में बॉध लिया।

फिर उसका दूसरा सिरा अपने छोटे बेटे को पकड़ाते हुए बोला — "क्वाकू, यह ले तू रस्सी का यह दूसरा सिरा ले और पश्चिम की तरफ वाले गॉव में चला जा। जब वहॉ खाना तैयार हो जाये तो इस रस्सी को ज़ोर से खींच देना जिससे मुझे पता चल जायेगा कि वहॉ खाना तैयार है और मैं वहॉ खाना खाने आ जाऊँगा।"

[48] Ntikuma – the name of Anansi's elder son

[49] Kwaku – the name of Anansi's younger son

पर मकड़े की बुरी किस्मत। दोनों गॉवों में एक ही समय खाना तैयार हुआ सो टिकूमा और क्वाकू दोनों ने एक ही समय पर रस्सी खींची। बेचारा लालची मकड़ा तो बीच में ही फॅस कर रह गया न?

टिकूमा और क्वाकू अब दोनों ही यह सोचें कि उनका पिता खाना खाने क्यों नहीं आ रहा और वे दोनों अपनी अपनी रस्सी ज़ोर ज़ोर से खींचते रहे। जब उनका पिता कहीं भी खाना खाने नहीं पहुॅचा तो वे दोनों ही अपने पिता को ढूॅढने आये।

जब उन्होंने अपने पिता को देखा तो वह तो काफी अलग सा दिखायी दे रहा था। उसकी कमर तो रस्सी से कसते कसते सुई से भी पतली हो गयी थी और उसको तो सॉस लेने में भी बहुत परेशानी हो रही थी।

दोनों ने जल्दी जल्दी अपने पिता की कमर से अपनी अपनी रस्सी खोली तब कहीं जा कर अनन्सी की सॉस में सॉस आयी।

मगर बेचारा अनन्सी फिर कभी अपनी पुरानी कमर नहीं पा सका। वह आज भी वैसा ही है। उसका बड़ा सा गंजा सिर है, बड़ा सा पेट है और छोटी और पतली सी कमर है।

10 मकड़ा और उसके दो दोस्त[50]

नाइजीरिया की यह लोक कथा इससे पहले वाली लोक कथा "मकड़े की कमर पतली क्यों" जैसी ही एक लोक कथा है।

एक बार ऐलनटाकुन[51] नाम का एक मकड़ा नाइजीरिया के एक गॉव में रहता था। उसके दो दोस्त थे। उसका एक दोस्त उसके दॉये हाथ की तरफ वाले गॉव में रहता था और उसका दूसरा दोस्त उसके बॉये हाथ की तरफ वाले गॉव में रहता था।

एक दिन ऐलनटाकुन के दॉये हाथ के गॉव में रहने वाला दोस्त उससे मिलने आया और उससे कहा — "मैं अपने सारे गॉव वालों को एक दावत दे रहा हूँ तो मैं चाहता हूँ कि तुम भी उस दावत में आओ।

ऐलनटाकुन दावत का यह न्यौता पा कर बहुत खुश हुआ। वह दिल खोल कर हॅसा और तुरन्त ही उसने एक जाला बुन लिया।

उस जाले का एक सिरा उसने अपने दोस्त को पकड़ा कर कहा — "मेरा प्लान यह है कि मेरे इस जाले के एक सिरे को तुम अपने गॉव ले जाओ। जब खाना बन जाये और सबको परसने के लिये तैयार हो जाये तब मेरा यह जाला खींच देना इससे मुझे पता चल

[50] The Spider and His Two Friends – a folktale from Nigeria, Africa. By Abimbola Alao
Taken from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/328/preview
[51] Alantakun – name of the spider

जायेगा कि खाना तैयार हो गया है तो मैं उसी समय तुम्हारे घर चल आऊँगा।"

और इस तरह से ऐलनटाकुन के जाले का एक सिरा हाथ में लिये हुए उसके दोस्त ने उसको विदा कहा और उसके दॉये हाथ के गॉव की तरफ चल दिया।

इसके कुछ देर बाद ही ऐलनटाकुन के बॉये तरफ के गॉव में रहने वाला उसका दोस्त उससे मिलने आया। उसने ऐलनटाकुन से कहा — "मैं अपने गॉव को एक दावत पर बुला रहा हूँ मैं चाहता हूँ कि तुम भी मेरी दावत में आओ।"

ऐलनटाकुन दावत का यह न्यौता पा कर भी बहुत खुश हुआ। वह दिल खोल कर हॅसा और तुरन्त ही उसने एक और जाला बुन लिया।

उस जाले का एक सिरा उसने अपने दोस्त को पकड़ा कर कहा — "मेरा प्लान यह है कि मेरे इस जाले के एक सिरे को तुम अपने गॉव ले जाओ। जब खाना बन जाये और सबको परसने के लिये तैयार हो जाये तब मेरा यह जाला खींच देना इससे मुझे पता चल जायेगा कि खाना तैयार हो गया है तो मैं उसी समय तुम्हारे घर चला आऊँगा।"

और इस तरह से ऐलनटाकुन के जाले का एक सिरा लिये हुए उसके दूसरे दोस्त ने भी उसको विदा कहा और उसके बॉये हाथ के गॉव की तरफ चल दिया।

ऐलनटाकुन के दॉये तरफ के गॉव में रहने वाले दोस्त ने अपने घर पहुॅचने के कुछ देर बाद ही खाना बना लिया। इत्तफाक से उसके बॉये तरफ के गॉव में रहने वाले दोस्त ने भी उसी समय अपना खाना बना लिया था।

दॉये तरफ वाले गॉव में रहने वाले दोस्त ने ऐलनटाकुन का दिया हुआ जाले का सिरा खींचना शुरू किया। अब क्योंकि उसके बॉयी तरफ रहने वाले दोस्त ने भी उसी समय अपना खाना बनाना खत्म किया था सो उसने भी ऐलनटाकुन के दिये हुए जाले का सिरा खींचना शुरू किया।

ऐलनटाकुन ने दोनों दोस्तों की तरफ से जाले की खींच महसूस की। जितना वे दोनों जाले को खींचते जाते थे उतना ही ऐलनटाकुन अपने बुने हुए जाले में फॅसता जाता था।

अब वह खिंचाव इतना ज़्यादा हो गया कि वह बेचारा चिल्लाने लगा और उसमें से छूटने की कोशिश करने लगा। पर उसके दोनों दोस्तों में से कोई भी उसकी चीखें नहीं सुन सका।

जब उन दोनों में से कोई उसे अपनी अपनी दावत में आते नहीं देख सका तो उन्होंने उसके दिये जाले के सिरे को और ज़ोर से खींचना शुरू कर दिया क्योंकि उन दोनों को लगा कि उनका दोस्त मकड़ा सो गया होगा।

उनको तो यह भी पता नहीं था कि वह उस समय कितने बुरे समय का सामना कर रहा था। मकड़ा अपने जाले में अपने आप ही

फॅस गया था। वह कितनी भी कोशिश करे वहॉ से निकल भी नहीं पा रहा था।

अब ऐलनटाकुन को पता चला कि वह अपने ही जाले में क्यों फॅस गया था क्योंकि वह बहुत ही लालचीपने से काम कर रहा था।

11 बढ़िया जज अनन्सी[52]

अनन्सी की कमर पतली क्यों की एक और लोक कथा।

अनन्सी अपने बड़े बड़े कामों की वजह से बहुत दूर दूर तक मशहूर हो चुका था और बहुत सारे लोग उसको एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी समझते थे।

इसका नतीजा यह हुआ कि जंगल के राजा ने उसको दो गॉवों का जज बना दिया। अनन्सी ने अपने इस नये काम को बड़ी गम्भीरता से लिया।

वह हर रोज किसी एक गॉव में अपनी कचहरी लगाता और लोगों के साथ ठीक से न्याय करता। कुछ ही दिन में वह अपने बढ़िया न्याय के लिये भी मशहूर हो गया।

एक गुरुवार को उसके पास के एक गॉव से कुछ लोग आये। वे उसको उस गॉव में होने वाली शादी की रस्म में शामिल होने के लिये बुलावा देने के लिये आये थे। उन्होंने कहा कि वह वहॉ शनिवार को जरूर आये। अनन्सी ने खुशी खुशी वह बुलावा मान लिया।

वे लोग मुश्किल से ही वहॉ से गये होंगे कि तभी दूसरे गॉव के सरदार के भेजे कुछ और लोग वहॉ आये जो उसको सरदार की

[52] Ananse the Even-handed Judge. A folktale from Ghana, West Africa. Adapted from the Book : "The Pot of Wisdom: Ananse Stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

चाची के दफ़न में बुलाने के लिये आये थे और वह भी उसी दिन था जिस दिन दूसरे गॉव में शादी थी।

अनन्सी बोला — "यह तो थोड़ी सी समस्या हो गयी। मैंने अभी अभी किसी को यह कह दिया है कि मैं एक दूसरे गॉव में शादी में शामिल होने जाऊॅगा।"

आये हुए आदमियों में से एक आदमी बोला — "तो इसका मतलब यह है कि आप सरदार की चाची के दफ़न में शामिल होने से मना कर रहे हैं और शादी की रस्म में जायेंगे। यह तो आप हमारे सरदार की बेइज़्ज़ती कर रहे हैं।"

अनन्सी बोला — "आप मुझे माफ करें पर मैं वहॉ जरूर आऊॅगा आप चिन्ता न करें। नाना को कहना कि उनके साथ उनकी चाची के मरने का दुख मनाना मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी।"

यह सुन कर वे लोग भी उसी समय वहॉ से चले गये।

अब अनन्सी सोचने लगा कि अब वह क्या करे। एक अच्छे जज होने के नाते उसको अपनी बात को रखना चाहिये पर उसको ऐसा कोई रास्ता दिखायी नहीं दे रहा था जिससे वह एक बुलावे को चुन सके और दूसरे को मना कर सके या दोनों जगह जा सके।

उसको दोनों को एक सा समझने के लिये कोई न कोई रास्ता तो निकालना पड़ेगा। सोचते सोचते उसके दिमाग में एक प्लान आया।

वह दोनों गॉवों में अपने एक एक बेटे को समय से पहले ही भेजेगा। उसका हर बेटा एक एक लम्बी और मजबूत रस्सी ले कर जायेगा जो मकड़े की सिल्क के धागे की बनी होगी।

अनन्सी उन दोनों रस्सियों का एक एक सिरा अपनी कमर में बॉध लेगा और दूसरा हिस्सा उसके बेटे के हाथ में होगा।

जब दावत शुरू होगी तो उसके बेटे को केवल इतना ही करना है कि वह उस रस्सी को खींचेगा। इससे अनन्सी को पता चल जायेगा कि उसका कौन सा बेटा उसको बुला रहा है।

जिस गॉव से भी उसकी रस्सी पहले खिंचेगी वह पहले उसी गॉव चला जायेगा। और वहॉ से फिर पहला मौका पाते ही वह दूसरे गॉव के लिये चल देगा। यह ठीक रहेगा।

शनिवार आया। दोनों गॉवों में तैयारियॉ शुरू हुईं। इधर अनन्सी नहाया धोया और ऐसे कपड़े पहने जो दोनों मौकों पर पहने जा सकते थे – गहरे रंग के दुख वाले और चमकीले रंग के शादी के लिये।

फिर उसने अपनी कमर में दोनों रेशमी रस्सियॉ बॉधीं और उनका दूसरा सिरा अपने दोनों बेटों को दे कर दोनों गॉवों में भेज दिया।

बेटों को गॉव भेज कर वह बैठ गया और इन्तजार करने लगा कि उसका कौन सा बेटा उसकी रस्सी पहले खींचता है। वह अपने इस इन्तजाम से काफी खुश था।

कुछ देर बाद उसने अपने बॉयी तरफ की रस्सी खिंचती महसूस की। इसका मतलब शादी की रस्म शुरू हो चुकी थी। उसने सोचा "अब मुझे वहॉ चलना चाहिये।" सो वह शादी वाले गॉव की तरफ चल दिया।

पर यह क्या...?

तभी उसने अपने दॉयी तरफ वाली रस्सी खिंचती महसूस की। और फिर दोनों तरफ की रस्सियॉ उसको इतनी ज़ोर से खींचती रहीं कि उसको तो सॉस लेना मुश्किल हो गया।

अक्लमन्द जज अपने बेटों से यह कहना भूल गया था कि अगर वह एक या दो बार रस्सी खींचने के बाद उनकी तरफ न चल दे तो वह रस्सी खींचना रोक दें। पर अब तो दोनों भाई अपनी अपनी रस्सी खींचे जा रहे थे जिससे उसके बस दो हिस्से हो ही जाने वाले थे।

अनन्सी की अच्छी किस्मत से कुछ लोग उधर से गुजर रहे थे। उन्होंने जब जज अनन्सी की यह हालत देखी तो उन्होंने उसको उन रस्सियों से आजाद कराया।

पर फिर भी वह उन दोनों में से किसी भी रस्म में नहीं जा पाया और उसकी जो इज़्ज़त एक अक्लमन्द की हैसियत से फैली हुई थी इस घटना की वजह से सब बर्बाद हो गयी थी।

लोग उसकी इस बेवकूफी पर हॅस रहे थे। डर के मारे कि अब उसके न्याय के फैसलों को कोई नहीं सुनेगा वह अपने घर के एक कोने में जा कर छिप गया।

आज भी मकड़े कोनों में रहते दिखायी देते हैं।

12 मकड़े की टॉगें पतली क्यों?[53]

यह लोक कथा यह बताती है कि मकड़े की टॉगें इतनी पतली क्यों होती हैं।

बहुत पहले की बात है कि अफ्रीका के घाना देश में अनन्सी नाम का एक मकड़ा रहता था। हालॉकि अनन्सी की पत्नी खाना बहुत अच्छा बनाती थी पर फिर भी अनन्सी को वह खाना खाने में बहुत अच्छा लगता था जो दूसरे लोग खाना अपने घरों में अपने लिये बनाते थे।

खरगोश अनन्सी का बहुत अच्छा दोस्त था सो अनन्सी एक दिन खरगोश के घर गया। वहॉ उसको उसके एक बर्तन में कुछ हरे पत्ते रखे दिखायी दे गये।

अनन्सी को हरे पत्ते बहुत अच्छे लगते थे। वह खुशी से चिल्ला कर बोला — "अरे खरगोश भाई, तुम्हारे बर्तन में तो हरे पत्ते रखे हुए हैं।"

खरगोश बोला — "हॉ पर अभी वे ठीक से बने नहीं हैं पर कुछ ही देर में बन जायेंगे। तुम बैठो, खाना खा कर जाना।"

---

[53] Why Anansi Has Eight Thin Legs? - a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the Web Site : http://africa.mrdonn.org/anansi.html

अनन्सी जल्दी से बोला — "खरगोश भाई, मुझे यह खाना खाने में बहुत अच्छा लगता पर मुझे अभी किसी जरूरी काम से जाना है।"

उसने सोचा कि अगर वह खरगोश के घर बैठा तो खरगोश उसको जरूर ही कोई न कोई काम करने को दे देगा और उस समय वह किसी भी काम करने के बिल्कुल मूड में नहीं था। उसे मालूम था कि उसे क्या करना है।

उसने खरगोश से फिर कहा — "मैं ऐसा करता हूँ एक जाला बुनता हूँ जिसका एक सिरा मैं अपनी एक टाँग में बाँधता हूँ और दूसरा सिरा तुम्हारे बर्तन में बाँधता हूँ। जब तुम्हारे ये पत्ते बन जायें तो उस जाले को खींच देना मैं भागा भागा आ जाऊँगा।"

खरगोश को लगा कि यह तो बड़ा अच्छा विचार है सो वह तैयार हो गया। और अनन्सी वहाँ से जाला बुनता हुआ चला गया।

चलते चलते रास्ते में उसको कहीं से बीन्स[54] बनने की खुशबू आयी। अरे यह तो बड़ी स्वाददार बीन्स लगती हैं जिनकी खुशबू इतनी तेज़ उड़ रही है। अनन्सी को बीन्स भी बहुत स्वादिष्ट लगती थीं।

तभी बन्दरों ने अनन्सी को आवाज लगायी — "आओ अनन्सी, हमारे साथ बीन्स खा लो। वे बस तैयार होने ही वाली हैं।"

[54] Beans – there are two types of beans – green and dried. Anansi liked the dried beans. See its picture above.

अनन्सी बोला — "मुझे तो बीन्स बहुत ही अच्छी लगती हैं। पर अभी मुझे किसी काम से जाना है सो मैं ऐसा करता हूँ कि एक जाला बुनता हूँ जिसका एक सिरा मैं अपनी एक टाँग में बाँधता हूँ और दूसरा सिरा तुम्हारे बर्तन में बाँधता हूँ। जब तुम्हारी ये बीन्स बन जायें तो उस जाले को खींच देना मैं भागा भागा आ जाऊँगा।"

बन्दरों को भी यह विचार बहुत अच्छा लगा और वे भी तैयार हो गये। और अनन्सी वहाँ से भी जाला बुनता हुआ चला गया।

आगे जा कर उसको शकरकन्दी[55] के पकने की खुशबू आयी। कहीं कोई शकरकन्दी शहद के साथ बना रहा था।

उसके दोस्त जंगली सूअर ने उसको पुकारा — "ओ अनन्सी आओ, मेरे साथ शकरकन्दी खा लो। मेरा बर्तन शकरकन्दी और शहद से भरा हुआ है, आओ मेरे साथ खाना खा लो।"

अनन्सी ने कहा — "मुझे तुम्हारे साथ खाना खाने में बहुत अच्छा लगता पर ..." और उसने यहाँ भी वही बहाना बना कर जाला बुन दिया कि अभी उसको कुछ काम था। जब उसकी शकरकन्दी पक जायें तो वह उसका जाला खींच दे वह तुरन्त ही वहाँ आ जायेगा।

कह कर उसने उस जाले का एक सिरा अपनी टाँग में बाँध लिया और दूसरा सिरा उस सूअर के शकरकन्दी के बर्तन में बाँध

[55] Translated for the words "Sweet Potatoes". See its picture above

दिया। जंगली सूअर को भी यह विचार बहुत अच्छा लगा सो वह भी मान गया।

जब तक अनन्सी नदी के किनारे पहुँचा तो उसकी आठों टाँगों में आठ जाले बँधे थे। और वह सोच रहा था कि पता नहीं कौन सा खाना पहले तैयार होगा।

उसी समय अनन्सी ने अपनी एक टाँग में झटका महसूस किया। उसने जान लिया — "ओह यह तो खरगोश के हरे पत्ते वाला जाला है। लगता है कि उसके हरे पत्ते तैयार हो गये।"

बस वह खरगोश के घर की तरफ चलने ही वाला था कि तभी उसने अपनी दूसरी टाँग में झटका महसूस किया, और उसके बाद तीसरा झटका भी महसूस किया। फिर तो उसकी हर टाँग में झटके ही झटके लगने लगे।

सबका खाना एक साथ ही तैयार हो गया था सो अब उसकी आठों टाँगों में झटके लग रहे थे। हर जानवर अनन्सी की टाँग अपनी तरफ खींच रहा था। और इस खींचने में उसकी सब टाँगें पतली होती जा रही थीं।

किसी तरह अनन्सी लुढ़क कर नदी में घुस गया।

जब उसके सारे जाले पानी में बह गये तो वह दर्द से कराहता हुआ पानी से बाहर आ गया। अनन्सी ने सोचा शायद उसका यह जाला बर्तन में बाँधने का विचार बिल्कुल ही अच्छा नहीं था।

आज तक मकड़े की आठों टॉगें उन जालों के खींचे जाने की वजह से बहुत पतली हैं। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह किसी के घर भी खाना नहीं खा सका। बेचारा अनन्सी।

13 मकड़े का पिछवाड़ा बड़ा क्यों?[56]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार अनन्सी मकड़ा अपने और अपने परिवार के लिये खाना ढूँढने के चक्कर में एक जंगल से गुजर रहा था। जाते जाते उसने दूर कुछ आवाजें सुनीं — "हम नदी में मछलियॉ पकड़ने के लिये छपका मारते हैं। हम अपने सिर पानी पर मारते हैं।"

अनन्सी ने बहुत कोशिश की उन शब्दों को समझने की पर वह समझ ही न सका कि वे लोग क्या कह रहे थे। पर वह धीरे धीरे उन आवाजों की तरफ खिसकता रहा।

उसने फिर कुछ सुना — "हम नदी में मछलियॉ पकड़ने के लिये छपका मारते हैं। हम अपने सिर पानी पर मारते हैं।" पर वह फिर भी कुछ समझ नहीं सका कि वे क्या कह रहे थे।

सो वह उन आवाजों के और पास खिसका तब कहीं जा कर उसको समझ में आया कि वे क्या कह रहे थे — "हम नदी में मछलियॉ पकड़ने के लिये छपका मारते हैं। हम अपने सिर पानी पर मारते हैं।"

---

[56] Why the Spiders Have Big Rear Ends – a folktale from Ghana, Africa.
Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=52

इस बार वह उन आवाजों को समझने के लिये नदी के काफी पास था। अनन्सी एक पेड़ के पीछे खड़ा हो गया जहॉ से वह नदी साफ साफ देख सकता था।

उसने नदी की आत्माओं को अपना सिर उतारते और उनको अपने हाथों में रखते देखा। वे आत्माऐं अपने सिर नदी के पानी के ऊपर मारे जा रहीं थीं और साथ में वह गाना भी गाती जा रही थीं।

जब वे गाना गाती थीं तो मछलियॉ पानी से निकल कर बाहर उछलतीं और वे आत्माऐं उनको खाने के लिये पकड़ लेतीं। उसको देख कर अनन्सी के मुॅह से निकला "वाह, यह तो बड़ा अच्छा तरीका है मछलियॉ पकड़ने का।"

जैसे ही मकड़े ने वाह कहा तो उन आत्माओं ने ऊपर देखा। उस समय सारे लोग, जानवर और आत्माऐं, अनन्सी को जानते थे सो उन्होंने अनन्सी से कहा — "आओ अनन्सी, तुम भी हमारे साथ आओ न। तुम भी कुछ मछली पकड़ लो।"

अनन्सी बोला — "मुझे तुम्हारे साथ आने में बड़ा अच्छा लगता पर मेरे साथ एक परेशानी है कि मुझे अपना सिर उतारना नहीं आता।"

आत्माऐं बोलीं — "अरे यह तो बड़ा आसान है। हम इस काम में तुम्हारी सहायता कर देंगे। तुम आओ तो।"

बस अनन्सी नदी में पहुॅच गया और उन आत्माओं ने बहुत ही आसानी से अनन्सी का सिर उतार कर उसके हाथों में दे दिया।

अब क्या था अनन्सी ने भी अपना सिर पानी के ऊपर छप छप कर के मारना शुरू कर दिया और वही गाना गाना शुरू कर दिया — "हम नदी में मछलियॉ पकड़ने के लिये छपका मारते हैं। हम अपने सिर पानी पर मारते हैं।"

जैसे ही अनन्सी ने यह गाना गाते हुए पानी में छपका मारा तो मछलियों ने ऊपर कूदना शुरू कर दिया। अब अनन्सी उनको आसानी से पकड़ सकता था।

क्योंकि उस समय वह मकड़ा था वह अपनी आठ टॉगों से मछलियॉ पकड़ सकता था। वह बार बार वह गाना गाता और बार बार मछलियॉ पकड़ता और उनको किनारे पर फेंकता जाता।

"वाह, कितना मजा आ रहा है।"

फिर उसने अपनी मछलियों के ढेर की तरफ देखा। वह बहुत लालची था उसको और बहुत सारी मछलियॉ चाहिये थीं पर वह उन सबको उठा कर घर ले जाने के लिये आलसी भी बहुत था।

सो वह बोला — "मेरे ख्याल में मेरे लिये ये इतनी मछलियॉ ही काफी हैं।" कह कर उसने अपनी मछलियॉ बॉधी और घर जाने लगा।

नदी की आत्माऐं बोलीं — "फिर जल्दी आना अनन्सी।"

अनन्सी बोला — "अरे हॉ जाने से पहले मेरा एक काम तो कर दो।"

आत्माओं ने पूछा — "क्या काम?"

अनन्सी बोला — "मुझे अपना सिर वापस रखना नहीं आता। तुम ज़रा मेरा सिर तो मेरे शरीर पर वापस रख दो।"

आत्माओं ने कहा — "अरे इसमें क्या बात है। लाओ हम रख देते हैं।" और उन्होंने बिना किसी परेशानी के तुरन्त ही उसका सिर उसके शरीर पर रख दिया और बोलीं — "पर एक बात है..."

"वह क्या?"

आत्माओं ने कहा — "अब तुम कभी हमारा यह गाना नहीं गाना।"

अनन्सी ने पूछा — "मगर क्यों? वह गाना तो बहुत अच्छा है। मुझे तो वह गाना बहुत अच्छा लगा।"

आत्माओं ने उसको बताया — "क्योंकि जब तुम वह गाना गाओगे तो तुम्हारा यह सिर अपने आप नीचे गिर जायेगा। और जब हम नहीं होंगे तो तुमको तो अपना सिर ऊपर रखना आता नहीं तो फिर कौन तुम्हारा सिर ऊपर रखेगा?"

अनन्सी बोला — "यह तो तुमने ठीक कहा। फिर मैं ऐसा नहीं करूँगा।" कह कर उसने अपनी मछलियॉ अपनी पीठ पर लादीं और घर चल दिया।

पर जैसे ही वह अपने घर की तरफ चला उसको फिर से आत्माओं की आवाजें सुनायी पड़ीं — "हम नदी में मछलियॉ पकड़ने के लिये छपका मारते हैं। हम अपने सिर पानी पर मारते हैं।" वे आत्माऐं अभी भी नदी से मछलियॉ पकड़ रही थीं।

बस अनन्सी से नहीं रहा गया और वह भी गाने लगा — "हम नदी में मछलियॉ पकड़ने के लिये छपका मारते हैं। हम अपने सिर पानी पर मारते हैं।"

जैसे ही अनन्सी यह गीत गाया कि अनन्सी का सिर तुरन्त ही उसके कन्धे से नीचे गिर पड़ा। उसने कितनी कोशिश की कि वह अपना सिर अपने ऊपर रख ले पर वह अपना सिर अपने ऊपर रख ही नहीं सका।

वह वापस नदी पर आत्माओं की सहायता लेने के लिये भी गया पर तब तक वे वहॉ से चली गयी थीं। सो अनन्सी ने अपना सिर अपने पीछे की तरफ रख लिया और अपनी मछलियॉ ले कर घर चल दिया।

जैसे ही वह घर पहुँचा तो उसके बच्चे बाहर निकल कर आये और हॅस कर बोले — "हा हा हा हा। देखो, ज़रा पिता जी को तो देखो। उनका सिर तो उनके पीछे लगा हुआ है।"

अनन्सी चिल्लाया — "चुप। एक तो मेरा सिर ठीक से नहीं रखा हुआ और ऊपर से तुम लोग मेरा मजाक बना रहे हो। चलो मेरा सिर ठीक से रखने में मेरी सहायता करो।" पर बहुत कोशिश करने के बावजूद वे भी उसके सिर को उसके पीछे से हटा कर आगे नहीं रख सके।

वे बस यही कर सके कि उन्होंने उसके सिर से उसकी ऑखें निकाल कर आगे उसकी गर्दन पर लगा दीं। उन्होंने उसकी नाक

खोल कर उसको भी आगे लगा दिया। वे उसके कान नहीं निकाल सके सो वे उन्होंने अन्दर घुसा दिये। इसी लिये मकड़े के कान भी नहीं होते।

जब वे यह सब कर चुके तो अनन्सी के पास छोटा सा सिर आगे था और बड़ा सा पिछवाड़ा पीछे था और उसके कान गायब थे।

14 मकड़े छत में ही क्यों रहते है?[57]

एक बार की बात है कि बारिश के मौसम में जंगल में हर साल से बहुत ज़्यादा बारिश हुई। इतनी ज़्यादा बारिश पहले कभी किसी ने नहीं देखी थी।

सुबह में तो बारिश इतनी तेज़ होती कि पेड़ों की शाखाओं की सारी पत्तियॉ झड़ जातीं और छोटे छोटे नाले चौड़ी और गहरी नदियॉ बन जाते।

जंगल के सारे जानवर ऐसी बारिश देख कर बहुत डर गये। अनन्सी मकड़े ने आलसी होने की वजह से अपना खेत ही नहीं लगाया था और मछली पकड़ने का जाल भी नहीं बिछाया था। इस लिये अब उसके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था।

और सबसे ज़्यादा बुरी बात तो यह थी कि चीता जो रात को अपना शिकार करता था वह भी भूखा था और उसको भी अब रात की बजाय दिन में ही अपना शिकार ढूँढने के लिये निकलना पड़ रहा था।

काफी दिनों बाद बारिश रुकी तो अनन्सी कुछ खाने की तलाश में बाहर निकला। वह नदी की तरफ चल दिया। इत्तफाक से उस दिन चीता भी उसी रास्ते से अपना शिकार ढूँढने जा रहा था सो दोनों एक दूसरे से उस रास्ते पर टकरा गये।

[57] Why Spiders Live in Ceilings? – a folktale from Ghana, Africa.

चीते को मोटे और रसीले मकड़े खाना बहुत अच्छा लगता था पर उस दिन चीते ने सोचा कि इस भूख की हालत में वह यह पतला सा मकड़ा खा कर भी अपना काम चला लेगा सो उसने मकड़े के साथ दोस्ती का बर्ताव किया।

चीता बोला — "नमस्ते अनन्सी भाई। तुम इस बारिश के मौसम में कैसे रहे?"

अब अनन्सी आलसी और शैतान तो जरूर था पर वह बेवकूफ नहीं था। वह बोला — "चीते भाई, मैं बिल्कुल ठीक हूँ पर अभी मैं ज़रा जल्दी में हूँ फिर बात करते हैं।"

यह कह कर वह कूद कर नीचे पड़े एक पाम[58] के पत्ते के पीछे जा कर छिप गया। चीता उसको ढूँढ नहीं सका तो वह गुस्से से इतनी ज़ोर से दहाड़ा कि उसकी दहाड़ से सारा जंगल ही काँप गया।

कुछ पल के बाद चीता अपने आपसे बोला — "कोई बात नहीं। मैं इस अनन्सी के घर जाता हूँ और उसके घर के दरवाजे के पीछे छिप कर वहीं उसका इन्तजार करूँगा। कभी तो वह अपने घर आयेगा ही।"

[58] Palm trees are of many types, such as date Palm, and others. In Florida, USA, they have 80 types of palm trees. See the picture of one type of Palm tree above.

यह सोच कर वह चीता अनन्सी के घर चल दिया। उसके छोटे से घर पर पहुँच कर वह अपनी नाक अपने पंजों में छिपा कर बैठ गया और अनन्सी के आने का इन्तजार करने लगा।

पर अनन्सी ने यह पहले ही भाँप लिया था कि चीता अब क्या करेगा। सो थोड़ी देर में जब वह चीता वहाँ से चला गया तो वह भी अपने पाम के पत्ते के नीचे से निकला और अपने घर की तरफ चल दिया। उसको मालूम था कि उसको क्या करना है।

जब वह गुनगुनाता हुआ अपने घर की तरफ जा रहा था तो घर के पास पहुँच कर उसने ज़ोर से आवाज लगायी — "ओ मेरे केले के पत्तों के घर। कैसे हो तुम?" पर किसी ने जवाब ही नहीं दिया। सब जगह खामोशी ही खामोशी थी।

शेर ने भी सुना तो सोचा कि यह अनन्सी तो पागल हो गया लगता है। भला घर भी कहीं बोलते हैं। इसलिये वह चुप ही रहा।

कोई जवाब न सुन कर मकड़ा फिर ज़ोर से बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। मैं जब भी अपने घर को पुकारता हूँ तो वह जरूर ही जवाब देता है पर आज उसे क्या हुआ। आज उसने मुझे जवाब क्यों नहीं दिया? क्या गड़बड़ है?"

सो एक बार फिर वह ज़ोर से चिल्लाया — "ओ मेरे केले के पत्तों के घर। कैसे हो तुम?"

इस बार मकड़े के घर में से एक छोटी सी और ऊँची सी आवाज आयी — "मैं ठीक हूँ मकड़े भाई, आओ अन्दर आ जाओ।"

अनन्सी हँसा और बोला — "अब मुझे पता चल गया कि तुम कहाँ छिपे हो चीते भाई। पर अगर तुम मुझे पकड़ सकते हो तो पकड़ लो।"

इतना कह कर वह तुरन्त ही अपनी खिड़की पर चढ़ा और अपनी छत पर पहुँच गया[59]। तब से आज तक वह वहीं बैठा है।

[59] See the picture of a spider sticking on to the ceiling above

15 मकड़े कोनों में क्यों छिपे रहते हैं?[60]

अनन्सी मकड़े की ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं जिनसे यह पता चलता है कि वह कितना अक्लमन्द है और ये कहानियॉ सच भी हैं।

पर उसकी कई कहानियॉ ऐसी भी हैं जिनसे यह पता चलता है कि वह कभी कभी कितना आलसी और धोखा देने वाला भी हो सकता है और उसकी ये कहानियॉ भी सच हैं।

ईग्या अनन्सी[61] एक बहुत ही होशियार किसान था। एक बार उसने, उसकी पत्नी ने और उसके बेटे ने खेती करने के लिये एक जमीन को साल भर तक साफ किया।

हालॉकि उन्होंने इससे पहले भी खेती के लिये जमीन के छोटे छोटे टुकड़े कई बार साथ साथ साफ किये थे पर यह जमीन का टुकड़ा उनके लिये पहले सब जमीन के टुकड़ों से सबसे बड़ा टुकड़ा था इसलिये उनको इसे साफ करने में उन्हें काफी दिन लग गये।

---

[60] Why Spiders Hide in Corners? – a folktale from Ghana, Africa. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=94
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
He adapted this story from "Why Spiders Are Always Found in the Corners of Ceilings" in "West African Folktales" by William H. Barker, 1917. Hindi translation of this book is available from : hindi-folktales@gmail.com .

[61] Egya Anansi – another name of Anansi Spider in Ghana

उन्होंने उस जमीन में याम[62], मक्का और बीन्स बो दीं। उनकी यह फसल भी पहली फसलों की तरह बहुत अच्छी हुई।

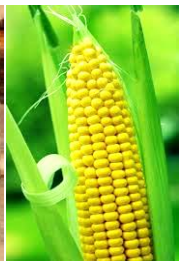

अनन्सी अपनी मक्का और बीन्स की फसल देख कर बहुत खुश था और उसको विश्वास था कि जब याम भी खोदे जायेंगे तो वे भी बहुत अच्छे होंगे।

अचानक अनन्सी की यह खुशी लालच में बदल गयी। वह अपनी इतनी अच्छी बड़ी फसल किसी के साथ भी बॉटना नहीं चाहता था, यहॉ तक कि अपनी पत्नी और बेटे के साथ भी नहीं।

जब उसकी फसल पक गयी और कटने के लिये तैयार हो गयी तो उसने अपनी पत्नी और बेटे से कहा — "हम सब लोगों ने मिल कर इस खेत पर इन फसलों को उगाने में बहुत मेहनत की है। अब हमें इनको काट कर अपने अनाजघर में रख देना चाहिये। उसके बाद हम सब लोग फिर थोड़ा आराम करेंगे।

तुम और हमारा बेटा हमारे गॉव में कुछ हफ्तों के लिये अपने घर चले जाओ। मुझे भी कुछ काम से दूर जाना है। जब मैं घर वापस आ जाऊँगा तब हम सब यहॉ खेत पर आयेंगे और एक बड़ी

[62] Yam is a root vegetable mostly grown in tropical countries. It is a main vegetable in West African countries, expecially in Nigeria, Ghana etc countries. See the pictures of yam, maize (corn) and beans above in this sequence.

सी दावत करेंगे।" अनन्सी की पत्नी और बेटे ने सोचा कि यह तो अच्छा विचार है सो वे दोनों गॉव चले गये।

अब अनन्सी के पास शरारत करने का खूब समय था। उसने अपने खेत के पास ही एक बहुत आरामदेह झोंपड़ी बनायी और उसमें रह कर अपने खेत की फसल का अकेले ही आनन्द लेने लगा।

वह दिन की गर्मी में अपनी झोंपड़ी में सोता और रात को बाहर निकल कर अपना खाना पकाता और उसको आनन्द ले ले कर खाता। उसके खाने को कोई और खाने वाला तो था नहीं सो वह अकेला ही अपनी फसल का आनन्द ले रहा था।

बहुत समय नहीं गुजरा था कि अनन्सी के बेटे को बिना किसी काम के गॉव में रहते हुए कुछ खराब सा लगने लगा कि उसका पिता तो काम से बाहर गया हुआ था और वह वहॉ पर आलसियों की तरह से आराम कर रहा था।

उसने सोचा कि जब तक उसका पिता अपने काम से घर वापस आता है तब तक वह अपने खेत की जमीन की घास फूस ही निकाल आता है।

यह सोच कर वह अपने खेत की घास फूस निकालने के लिये अपने घर वापस आ गया ताकि वह उसको आगे आने वाले मौसम के लिये तैयार कर सके।

जब वह खेत पर काम करने गया तो वह अपने अनाजघर के सामने से भी गुजरा तो उसने देखा कि जितनी फसल उन सबने मिल कर काट कर रखी थी उसमें से बहुत सारी फसल तो गायब ही हो चुकी है।

पहले तो उसको लगा कि यह उसकी ऑखों का धोखा है पर बाद में ठीक से देखने से पता चला कि नहीं वह ठीक ही देख रहा था। इसका मतलब ऐसा लगता है कि उसे चोरों ने चुरा लिया है।

अनन्सी का बेटा तुरन्त ही गॉव वापस आया और आ कर गॉव के लोगों को सब कुछ बताया। गॉव वालों ने एक डंडे के ऊपर एक पुतला बनाया और उसको भूसे से ढक कर एक आदमी की शक्ल दे दी।

फिर उस भूसे को एक चिपकने वाली तारकोल से ढक कर उसको शाम को खेत में ले जा कर खड़ा कर दिया। गॉव के कुछ लोग अनन्सी के बेटे के साथ ही रहे ताकि वह उस पुतले को देखते रह सकें और उसकी चोर पकड़ने में सहायता कर सकें।

ईग्या अनन्सी को इस बात का कुछ पता ही नहीं था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा था सो जब रात हुई तो वह रोज की तरह अपनी झोंपड़ी में से अनाजघर में से खाना लेने के लिये बाहर निकला।

वह जब अनाजघर की तरफ जा रहा था तो उसने अपने खेत में भूसे का बना वह आदमी का पुतला खड़ा देखा।

अनन्सी तुरन्त उसकी तरफ दौड़ता हुआ गया और उससे बोला — "यह खेत मेरे परिवार का है। तुम कौन हो और यहॉ क्या कर रहे हो? चले जाओ यहॉ से।"

पर जब वह भूसे का आदमी का पुतला हिला भी नहीं और बोला भी नहीं तो उसने उसको अपने दॉये हाथ से मारा। जैसे ही उसने उसको अपना हाथ मारा तो वह जा कर उस पुतले से चिपक गया।

यह देख कर वह और ज़ोर से चिल्लाया — "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मेरा हाथ पकड़ो। मैं तुम्हें और बहुत मारूॅगा।" कह कर अबकी बार उसने उसको अपने बॉये हाथ से मारा। पर उसका वह हाथ भी उससे जा कर चिपक गया।

फिर उसने अपने दोनों हाथ छुड़ाने के लिये उसके बीच में अपना पैर मारा तो वह भी चिपक गया। फिर उसने अपना दूसरा पैर मारा तो वह भी चिपक गया और अब वह जमीन पर नहीं था बल्कि पूरा का पूरा जमीन के ऊपर उस आदमी के पुतले से चिपका हुआ था।

सुबह होने तक वह इसी हालत में वहीं चिपका रहा। सुबह होने पर अनन्सी का बेटा और उसके गॉव वाले वहॉ यह देखने के लिये

आये कि चोर कौन था। उनके हाथों में चोर को सजा देने को लिये डंडे और डंडियॉ थे।

वहॉ आ कर और चोर को देख कर तो वे सब बहुत आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि वह चोर कोई और नहीं बल्कि उनका अपना अनन्सी था।

सारे लोग उसको देख कर ज़ोर से हॅस पड़े, सिवाय अनन्सी के बेटे के जो अपने पिता के लालची होने की इस करतूत पर बहुत शर्मिन्दा था।

अनन्सी को खुद को इतना बुरा लगा कि क्या वह इतना ज़्यादा लालची और मतलबी हो गया था कि उसके गॉव वालों को उस पर हॅसना पड़ा और उसके बेटे को उसकी वजह से शर्मिन्दा होना पड़ा?

यह सोच कर उसे इतनी शर्म आयी कि उसकी वजह से वह जो पहले एक आदमी था अब एक मकड़ा बन गया और इधर से उधर भागता फिरा। अब जब भी कभी कोई अनन्सी को देखता तो वह उसके ऊपर हॅसता।

यह उसके साथ हमेशा होता रहा। लोगों के हॅसने से तंग हो कर वह छत के अॅधेरे धूल भरे कोनों छिप कर रहने चला गया जहॉ उसको कोई देख न सके।

और आज भी वह वहीं छिपा हुआ है और वहीं मिल सकता है। अगर तुम उससे मिलना चाहते हो तो उसको किसी छत के कोने में ढूॅढ सकते हो। वह तुमको वहीं मिलेगा।

पर देखो तुम उस पर हॅसना नहीं। वह बेचारा तो वैसे ही किस्मत का सताया हुआ है और अगर तुम भी उसके ऊपर हॅसोगे तो उस बेचारे का क्या होगा।

16 मकड़े दरारों में क्यों रहते हैं?[63]

पुराने समय में सूअर को लोग छोटा हाथी समझते थे क्योंकि उसके भी हाथी जैसी एक सूँड़ थी। और हालाँकि उसके कान हाथी के कान जितने बड़े तो नहीं थे पर उसका शरीर बहुत मोटा था और उसकी पूँछ थोड़ी सी छोटी थी।

उन दिनों कलाकार चीते[64] ने अपने और अपने परिवार के लिये कई डिजाइन बनाये थे। कभी कभी जब जानवर किसी खास मौके, जैसे किसी की शादी या कोई नाच के लिये जाते थे तो वे चीते को ही बोलते थे कि वही उनके लिये एक अच्छा सा डिजाइन तैयार करे।

बाद में चीते ने ये डिजाइन कपड़ों में भी बना दिये थे जिनको उसका परिवार पैसा कमाने के लिये बेचता था।

एक दिन चीते ने एक बहुत ही सुन्दर कपड़ा बनाया जिसमें बड़ा खास रंग लगा हुआ था जो उसने किसी दूर देश से मँगवाया था।

कई दिन बाद की बात है कि मिस्टर मकड़े के पिता जी मर गये तो वह चीते के पास एक कपड़ा लेने के लिये आया।

---

[63] How the Pig Got Its Snout – a folktale from Togo, Africa.
Taken from the book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[64] Translated for the word "Leopard". See his picture above.

मकड़ा बोला — "मिस्टर चीते नमस्ते।"

चीते ने पूछा — "यह मुझे कौन नमस्ते कर रहा है?"

मकड़ा बोला — "यह मैं हूँ मिस्टर चीते, अनन्सी मकड़ा।"

चीता बोला — "मेरे दोस्त, तुम इतने उदास क्यों लग रहे हो? क्या बात है? हँसो न।"

मकड़ा बोला — "यह तो तुम मुझे ऐसे ही हँसने को कह रहे हो। क्या तुमको सचमुच पता नहीं कि मैं क्यों उदास हूँ?"

चीता बोला — "नहीं, मुझे सचमुच ही नहीं पता कि तुम क्यों उदास हो। और मैं यकीनन जानना चाहता हूँ कि तुम क्यों उदास हो। बोलो क्या बात है तुम क्यों उदास हो?"

मकड़ा बोला — "शायद तुम वह अकेले ही हो जिसको यह पता नहीं है कि मेरे पिता गुजर गये हैं। बेचारे। बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी थे और मेरे पास कुछ नहीं है जिससे मैं आखिरी बार उनको विदा कर सकूँ।"

चीता बोला — "यह तुम क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो। तुम यकीनन ही उनको बहुत कुछ दे सकते हो। तुम तो बहुत ही मेहनती हो और इसके अलावा वह खुद भी तो तुम्हारे लिये काफी पैसा छोड़ गये होंगे।"

इस पर मकड़े ने चीते को बताया कि वह खुद भी कितना गरीब था और उसका पिता भी कितना गरीब ही मर गये थे। उसके ऊपर कितना कर्ज था यह तो अब उसको याद भी नहीं है।

वह आगे बोला — "मुझे अपने शरीर पर कुछ अच्छा सा कपड़ा पहनने की जरूरत है ताकि कम से कम उनके दफ़न में तो मैं ठीक से जा सकूँ।

मुझे मालूम कि तुम एक बहुत बड़े कलाकार हो। वह जो रस्सी पर कपड़ा टँगा है उससे मेरा काम चल जायेगा। पर मैं तुमको उसके पैसे नहीं दे सकता।" यह सब वह एक साँस में ही बोल गया।

इस तरह से वे दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। आखीर में चीते ने निश्चय किया कि उसके लिये इस समय सबसे अच्छा यही रहेगा कि वह मकड़े को वह कपड़ा उधार दे दे।

चीता वह कपड़ा उसको देते हुए बोला — "मेहरबानी कर के इस कपड़े का ज़रा ख्याल रखना मकड़े भाई, यह मेरा बड़ा खास कपड़ा है। इसका रंग दूसरे देश से आया है और मुझे पूरा भरोसा है कि इसको बेचने पर मुझे इसकी बहुत अच्छी कीमत मिलेगी।"

मकड़ा तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया और खुशी से ऊपर नीचे कूदने लगा। उसने चीते को धन्यवाद दिया और उससे वायदा किया कि अगर जरूरत पड़ी तो वह उस कपड़े की जान दे कर भी रक्षा करेगा।

वह कपड़ा ले कर वह अपने पिता के दफ़न में चला गया।

सब कुछ ठीक हो गया और सब लोग मकड़े को ही देखते रहे क्योंकि हर एक को उसका वह कपड़ा बहुत अच्छा लगा।

दफ़न के बाद मकड़े ने अपने पिता की पत्नियों को विदा किया और अपने कुछ दोस्तों के साथ जिनके साथ वह आया था घर जाने लगा। वे लोग कुछ दूर ही चले थे कि भारी बारिश होने लगी।

सो मकड़े ने आधा कपड़ा अपने सिर पर लपेट लिया और बाकी आधा उसके शरीर को बहुत ही कम ढक पा रहा था। बारिश बहुत ज़ोर की थी। मकड़ा और कपड़ा दोनों ही पानी में तर बतर हो गये।

मकड़े के सिर पर लपेटे कपड़े में से टपक टपक कर पानी उसके मुँह पर गिरने लगा तो उसने उस पानी को अपने मुँह पर से पोंछने की कोशिश की।

इस पोंछने में उस कपड़े में से कुछ पानी उसके होठों तक आ गया। अनजाने में वह पानी उसके मुँह में चला गया। उसने देखा कि वह पानी तो बहुत स्वादिष्ट था।

फिर उसने कपड़े पर पड़ा पानी चाटा तो वह भी उतना ही स्वादिष्ट था। अब वह बार बार उस कपड़े पर पड़ा पानी चाट रहा था।

उसको अपने साथियों के सामने यह सब करना बहुत अजीब लग रहा था सो उसने अपने साथियों से कहा — "मुझे कुछ समय के

लिये माफ करना भाइयो।" कह कर वह जंगल की तरफ चला गया।

वहाँ जा कर उसने वह कपड़ा अपने सिर पर से उतारा और उसका एक छोटा सा टुकड़ा खा लिया। उसने देखा कि वह कपड़े का टुकड़ा तो उस पानी से भी ज़्यादा स्वादिष्ट था जो उसमें से टपक रहा था।

अब उसने उस कपड़े में से दूसरा टुकड़ा काटा, फिर तीसरा, फिर चौथा, और फिर तो वह उस कपड़े को खाता ही चला गया। जल्दी ही वह सारा कपड़ा खा गया।

इसके बाद उसको महसूस हुआ कि वह तो नंगा खड़ा था। अपने आपको सबके सामने नंगा न दिखाने के लिये वह वहाँ से अकेला ही चल दिया।

तभी उसने अपने पीछे किसी के आने की आवाज सुनी तो वह एक झाड़ी में छिप गया। उसने देखा कि उसके पीछे पीछे हाथी चला आ रहा था।

"शशशश।" उसने उस घनी झाड़ी के पीछे से हाथी का ध्यान अपनी तरफ खींचने की कोशिश की।

हाथी ने पूछा — "कौन है वहाँ?"

"यह मैं हूँ अनन्सी मकड़ा।" मकड़ा बहुत ही धीमी आवाज में बोला।

हाथी फुसफुसाया — "पर तुम बाहर क्यों नहीं निकल रहे? तुम वहॉ उस झाड़ी के पीछे छिप कर क्या कर रहे हो? और तुम क्या कह रहे हो यह भी मुझे बड़ी मुश्किल से सुनायी पड़ रहा है। क्या तुमने कोई जुर्म किया है?"

मकड़ा फुसफुसाया — "नहीं नहीं। मैं यहॉ नंगा खड़ा हूँ।"

हाथी बोला — "मुझे हॅसाओ नहीं मकड़े भाई। हा हा हा हा।"

हाथी का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिये मकड़े ने हाथी से कहा कि उसकी चीते से लड़ाई हो गयी थी और उसने उसके कपड़े फाड़ दिये थे इसलिये वह वहॉ नंगा खड़ा था।

फिर उसने हाथी से प्रार्थना की कि वह अपने कान का एक टुकड़ा उसके शरीर को ढकने के लिये दे दे। वह घर जा कर अपने कपड़े पहन कर उसे उसके कान का टुकड़ा वापस कर देगा।

हाथी को दया आ गयी तो उसने मकड़े को अपना एक कान दे दिया। मकड़े ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसका कान ओढ़ कर वह अपने घर चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी उसका प्रिय सूप बना रही थी। उस सूप की खुशबू से उसका दिल खुश हो गया।

पर मकड़े ने तो अपने पिता के दफ़न पर जो कुछ भी उसके पास था सब खर्च कर दिया था। इसलिये उसको ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ जब उसकी पत्नी ने उसको बताया कि उस दिन वह सूप

उतना स्वाददार नहीं बनेगा जितना पहले बनता था क्योंकि आज उसमें खुशबू के लिये उसके पास मॉस ही नहीं था।

मकड़ा तुरन्त बोला — "कोई बात नहीं प्रिये, हमारी किस्मत अच्छी है। तुमको जो चाहिये वह मेरे पास है।" यह कह कर मकड़े ने हाथी का वह कान जो वह ओढ़ कर आया था अपनी पत्नी को दे दिया।

मकड़े की पत्नी ने हाथी के उस कान को साफ किया, काटा और सूप में डाल दिया। उस सूप को पीने के बाद दोनों ने महसूस किया कि इतना स्वाददार सूप तो उन्होंने पहले कभी नहीं पिया था।

इस बीच हाथी अपने कान को लौटाने लिये मकड़े का बहुत देर तक इन्तजार नहीं कर सका क्योंकि मक्खियॉ उसके कटे हुए कान पर भिनभिना रहीं थीं।

उसने उनको हटाने के लिये अपने दूसरे कान को भी इधर उधर हिलाया, अपने पैर भी पटके, चिंघाड़ा भी, अपना शरीर भी हिलाया पर मक्खियॉ नहीं गयीं।

हाथी ने सोचा कि "मुझे खुद ही उसके घर जाना चाहिये और अपना कान वापस लाना चाहिये।" सो वह मकडे के घर चल दिया। मकड़ा भी उसका इन्तजार ही कर रहा था। उसने अपने परिवार के साथ मिल कर हाथी के साथ एक चाल खेली।

उसने अपनी पत्नी और बच्चों से कहा — "हाथी का कान वापस करने का मेरा समय आ गया था और चला भी गया। वह

अब किसी समय भी यहाँ आता होगा। जब वह आयेगा तो हम सब अपने सुँघनी वाले बक्से में छिप जायेंगे। उसके बाद मैं उसे देख लूँगा।"

इतने में हाथी गुस्से में भरा फू फू करता वहाँ आ पहुँचा।

मकड़ा बोला — "आओ मेरे दोस्त। मैं तो तुम्हारा इन्तजार ही कर रहा था। तुम यहाँ बैठो मैं तुम्हारे लिये कुछ कोला नट[65] और कुछ सूँघने के लिये ले कर आता हूँ।"

हाथी बोला — "मैं यहाँ तुम्हारे घर तुमसे मिलने नहीं आया हूँ। अभी तो मैं यहाँ अपना कान वापस लेने आया हूँ। वह जो उधार लेता है और फिर उसको वापस दे देता है वही दोबारा उधार माँग सकता है। तुमको मालूम है न?"

मकड़ा बोला — "हाँ हाँ मालूम है। मुझे अफसोस है कि मुझे तुम्हारा कान लौटाने में थोड़ी देर हो गयी है पर यह सब मेरे दुख के समय की वजह से हुआ। मैं अभी तुम्हारा कान ले कर आता हूँ।"

मकड़े ने वहीं से अपने एक बच्चे को पुकारा और कहा — "हमारे मेहमान के लिये सुँघनी ले कर आओ। लौर्ड हाथी जैसे खास मेहमान कोई रोज रोज थोड़े ही आते हैं।"

---

[65] Kola Nut (or Cola Nut) is the seed of an abundantly found fruit Kola in Nigeria and West African countries. It is used there like Indian betel nut (Supaaree). People chew it all day long. See its picture above.

यही इशारा मकड़े के बच्चे के लिये काफी था। वह गया और सुँघनी वाले डिब्बे में जा कर छिप गया। जब वह कुछ देर तक नहीं आया तो उसने अपने दूसरे बच्चों को बारी बारी से भेजा। पर वे सब भी जा कर उसी डिब्बे में छिप गये।

अब हाथी का धीरज छूटा जा रहा था सो मकड़े ने अपनी पत्नी को भेजा पर वह भी वापस नहीं आयी।

मकड़ा गुस्से से चिल्लाया — "आजकल के बच्चों से जो कहा जाता है वह वे सुनते ही नहीं। बच्चे तो बच्चे पर यहाँ तो पत्नियाँ भी ऐसी ही हो गयी हैं कि उन्होंने भी सुनना बन्द कर दिया है।

हमारे बड़े लोग ठीक कहते थे अगर तुमको कोई काम ठीक से कराना है तो अपने आप ही करो दूसरों पर भरोसा मत करो। मैं खुद ही जाता हूँ और उस सुँघनी के बक्से को ले कर आता हूँ। अपने पत्नी और बच्चों को तो तुम्हारे जाने के बाद मुझे सबक सिखाना पड़ेगा।"

मकड़ा अन्दर गया और वह भी अपने परिवार के साथ उस सुँघनी वाले बक्से में बन्द हो कर बैठ गया।

हालाँकि मक्खियाँ हाथी को बहुत तंग कर रहीं थीं पर फिर भी वह बड़े धीरज के साथ इन्तजार करता रहा, करता रहा। पर जब मकड़ा और उसके परिवार में से कोई बाहर नहीं आया तो वह उठा और मकड़े के अन्दर वाले कमरे में चला गया।

"कहॉ हो तुम? मुझे मेरा कान चाहिये और अभी चाहिये।" पर उसे कोई जवाब नहीं मिला। फिर उसने मकड़े और उसके परिवार को उसके सारे घर में ढूँढने की कोशिश की पर वहॉ तो कोई भी नहीं था।

उसने अपना कान भी सब जगह ढूँढा पर वह भी उसको कहीं नहीं मिला। उसने फिर कोई ऐसी चीज ढूँढी जिसको वह वहॉ से ले जा सके पर वह भी उसको वहॉ नहीं मिली क्योंकि मकड़ा वाकई में बहुत गरीब था।

तब उसको वह सुँघनी का बक्सा दिखायी दे गया जिसमें मकड़ा और उसका परिवार छिपे बैठे थे। "केवल एक सुँघनी का बक्सा? अब अगर यही इसके पास है तो यही सही। मैं यही ले जाता हूँ।" कह कर उसने वह सुँघनी का बक्सा उठाया, उसको अपनी जेब में रखा और चल दिया।

जब हाथी काफी दूर चला गया तब मकड़े और उसके परिवार ने गाना शुरू किया —

मॉ हथिनी मॉ हथिनी, वह भी क्या चीज़ थी
वह कितनी बुरी मौत मरी और उसका बेटा कहीं नहीं मिला

हाथी ने उस आवाज को ढूँढने की कोशिश की कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी पर उसको आस पास में कोई दिखायी नहीं दिया जो यह गाना गा रहा होता।

जब उसको पता चला कि वह आवाज तो उस सुँघनी के बक्से में से आ रही थी जो उसके पास था तो उसने उस बक्से को एक चट्टान पर मार कर तोड़ दिया।

बक्सा टूट गया और मकड़ा और उसका परिवार उसमें से निकल कर चट्टानों की दरारों में जा कर छिप गया।

यह देख कर हाथी को बहुत गुस्सा आया कि वह मकड़ा ही था जो उसके साथ चाल खेल रहा था। उसने उस मकड़े को उन दरारों में से निकालने की बहुत कोशिश की पर उसकी सारी कोशिशें बेकार गयीं।

तब उसने अपने भाई सूअर और अपने दोस्त हयीना[66] से सहायता माँगी जो वहाँ जल्दी ही आ गये थे।

सूअर बोला — "ओइंक ओइंक। मकड़े भाई तुम बाहर आ जाओ मैं तुम्हारी हाथी से सुलह आसान करा दूँगा।"

पर मकड़ा बाहर नहीं आया। बल्कि उसने एक बड़ा तेज़ चाकू लिया और सबको धमकी दी कि अगर कोई उसके पास भी आया तो वह अपने उस चाकू का इस्तेमाल करेगा।

सूअर ने सोचा कि शायद वह मजाक कर रहा था सो उसने वह चट्टान अपनी सूँड़ से हटाने की कोशिश की जिसकी दरार में मकड़ा

[66] Hyena – a tiger-like animal. See its picture above.

छिपा हुआ था और मकड़े को बाहर निकालने की कोशिश की। मकड़े ने तुरन्त ही अपना तेज़ चाकू निकाला और उसकी सूँड़ काट दी।

यह देख कर कि मकड़ा अपने तेज़ चाकू से क्या कर सकता था सारे जानवर डर गये। किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि वह मकड़े को उन चट्टानों की दरार से निकाले। धीरे धीरे वे सब इधर उधर चले गये।

आज भी मकड़े दरारों में रहते दिखायी देते हैं क्योंकि उनको डर है कि अगर उनको कहीं हाथी मिल गया तो वह उनको पकड़ लेगा।

और उस दिन के बाद से सूअर की तो सूँड़ ही चली गयी और उसकी जगह बस केवल उसकी छोटी सी थूथनी ही रह गयी।

हयीना आज भी जंगल में अपने दोस्त सूअर के लिये रोता पाया जाता है।

17 सूअर की थूथनी छोटी क्यों[67]

"सूअर की थूथनी छोटी क्यों" नाम की यह लोक कथा "मकड़े दरारों में क्यों रहते हैं" जो हमने इस लोक कथा से पहले दी हुई है से बिल्कुल अलग है।

यह कुछ ज़्यादा पुरानी बात नहीं है जब सूअर के भी हाथी जैसी लम्बी सूँड़ हुआ करती थी। और उसको अपनी उस लम्बी सूँड़ पर बड़ा नाज़ था।

उससे वह पानी ले कर अपने आप नहा सकता था, अपने बागीचे में पानी दे सकता था, कोई डराने वाली धुन भी निकाल सकता था और उसको घुमा कर वह उससे गॉठ भी बॉध सकता था।

उन दिनों सूअर एक पैसा उधार देने वाले का काम भी करता था। इस काम में वह इसलिये भी बहुत मशहूर हो गया था कि किसी ने अभी तक उसके पैसे नहीं मारे थे।

वह अपनी सूँड़ से सूँघता और जो भी अपराधी होता उसको उसके छिपी हुई जगह से घसीट लाता। इसलिये उसको अपनी सूँड़ पर बहुत ही घमंड था।

---

[67] Why Pig Has a Short Snout. A folktale from Ghana, Africa.
This story taken from the book : "The Pot of Wisdom: Ananse Stories". By Adwoa Badoe. Toronto: Douglas & McIntyre. 2011. 63 p.

एक बार अनन्सी ने अपने बेटे का दहेज[68] देने के लिये सूअर से कुछ पैसे उधार लिये और क्योंकि अनन्सी को अपनी इज़्ज़त बना कर रखनी थी इसलिये उसने और भी बहुत सारा पैसा उधार लिया था।

एक महीना बीत गया। अनन्सी का सूअर को पैसा वापस करने का समय आ गया था पर ऐसा लगता था कि अनन्सी तो पैसा ले कर वापस करना ही भूल गया था।

सो एक दिन सूअर अनन्सी के घर की तरफ गया और बोला — "मैं अपनी लम्बी सूँड़ के साथ तुमको ढूँढने आ गया हूँ।"

पर जब वह अनन्सी के घर पहुँचा तो अनन्सी ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको एक हफ्ते का समय और दे दे। उसने कहा — "तब तक मैंने जिन जिन को पैसा उधार दे रखा है वे भी मेरा पैसा वापस कर देंगे और फिर मैं तुम्हारा पैसा वापस कर दूँगा।"

सूअर ने उसको धमकी दी — "तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम एक हफ्ते बाद मेरा पैसा वापस कर दो नहीं तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी दूभर कर दूँगा।"

कह कर उसने अपनी सूँड़ हवा में हिलायी और दूसरों से पैसा वसूल करने चल दिया।

[68] Dowry for the son – in many cultures it is a custom that at the time of marriage the boy's father pays the dowry to the girl's father. There it is called the "Bride Price".

अगले हफ्ते सूअर फिर आया — "मेरा पैसा अनन्सी, मुझे मेरा पैसा वापस चाहिये।"

अनन्सी पास में गड़े एक बॉस के डंडे के नीचे की तरफ देखता हुआ बोला — "तुमने तो मुझे डरा ही दिया। देखो मैंने तुम्हारा पैसा इस बॉस के डंडे के नीचे रख दिया है। अब मुझे देखना यह है कि मैं उसको अब निकालूँ कैसे।"

सूअर ने कहा — "मैं निकाल लूँगा। यह मेरी गलती थी जो मैंने तुमको पैसा उधार दिया। अब मैं अपनी सूँड़ नीचे डाल कर उसे अपने आप ही निकाल लूँगा।"

कह कर सूअर ने अपनी सूँड़ उस बॉस के डंडे के नीचे डाल दी पर वहाँ उसको कुछ मिला ही नहीं। अब वहाँ कुछ होता तो मिलता न। तो वह बोला — "यहाँ तो कुछ भी नहीं है।"

अनन्सी बोला — "थोड़ा और गहरा जाओ।" सो सूअर थोड़ा और नीचे तक गया। पर जब उसने देखा कि उसकी सूँड़ और नीचे तक नहीं जा सकती तो उसने उसे ऊपर खींचने की कोशिश की पर वह उसे ऊपर भी नहीं खींच सका। वह तो उस गड्ढे में फँस गयी थी।

उसने अपना सिर इधर हिलाया उधर हिलाया पर कुछ नहीं हुआ। वह अपनी सूँड़ नहीं निकाल सका। वह इधर लेटा उधर सिर पटका पर फिर भी वह अपनी सूँड़ नहीं निकाल सका।

वह चिल्लाया — "अरे कोई मेरी सहायता करो।"

पर अनन्सी तो तब तक अपने जाले में जा कर छिप गया था और दूसरा कोई उसकी कोई सहायता करने को वहॉ तैयार नहीं था। तो फिर सूअर को यह काम भी खुद ही करना पड़ा। उसने एक बार ज़ोर से अपना सिर हिला कर अपनी सूँड़ को ऊपर खींचा।

इस सूँड़ खींचने में बॉस का वह डंडा भी उसकी सूँड़ के साथ साथ उखड़ गया। सूअर की सूँड़ टूट गयी थी। पर अफसोस कि उसे अपना पैसा भी नहीं मिला और उसकी सूँड़ भी फिर नहीं बढ़ी।

उधर अनन्सी ने भी उसका पैसा नहीं चुकाया

इस तरह सूअर ने अपनी सूँड़ भी खोयी और उसका पैसा भी मारा गया। सूअर ने उसको अपने पैसे के लिये फिर कभी तंग नहीं किया। इस तरह से अनन्सी ने सूअर से अपनी जान बचायी।

18 अनन्सी और मौत[69]

एक बार की बात है कि अनन्सी जंगल में बहुत दूर तक चलता चला गया कि चलते चलते वह एक बहुत बहुत बहुत ही बूढ़े के घर के पास आ गया।

वह बूढ़ा उस घर के अन्दर अपने दरवाजे के पास बैठा हुआ था। वह बूढ़ा बहुत ही पतला दुबला और हड्डियों का ढाँचा जैसा लग रहा था।

अनन्सी हिम्मत कर के उससे जा कर बोला — "गुड डे जनाब। मैं सारी सुबह चलता रहा हूँ अगर मुझे थोड़ा बर्फ का पानी पीने को मिल जाता तो बड़ा अच्छा रहता।"

उस बूढ़े ने उसको इस बात का कोई जवाब नहीं दिया इससे अनन्सी को लगा कि उस बूढ़े को शायद कम सुनायी देता होगा। इसलिये वह उसके और पास तक गया और अपनी बात फिर से ज़ोर से दोहरायी — "जनाब मैंने कहा क्या मुझे थोड़ा सा ठंडा पानी मिल सकता है?"

फिर भी वह बूढ़ा कुछ नहीं बोला तो अनन्सी उसको वहीं छोड़ कर उसके घर के अन्दर चला गया। वहाँ जा कर उसने न केवल ठंडा पानी ही पिया बल्कि पेट भर खाना भी खाया।

---

[69] Anansi and Brother Death OR Why Spider's Webs Are Found on the Ceiling – a folktale from Ghana, Africa. Adapted from the Web Site : http://anansistories.com/Bro_Death.html
By Michael Auld.

खाना खत्म कर के अनन्सी बाहर आया तो उस बूढ़े को वहीं बैठे पाया जहाँ वह उसको छोड़ कर गया था। अनन्सी ने उसको उसकी मेहमानदारी के लिये धन्यवाद दिया और अपने घर वापस आ गया।

अगले दिन अनन्सी उस बूढ़े के घर फिर से गया और पेट भर कर खाना खाया पर फिर भी बूढ़े ने उससे कुछ नहीं कहा।

तीसरे दिन अनन्सी अपनी सबसे बड़ी बेटी को ले कर उस बूढ़े के घर गया।

जा कर उसने बूढ़े से कहा — "जनाब गुड मौर्निंग। आपने मेरे ऊपर इतनी दया की है तो मैं अपनी सुन्दर बेटी को आपके घर ले कर आया हूँ। यह बहुत अच्छा खाना बनाती है। मैं इसकी शादी आपके साथ करना चाहता हूँ।"

फिर उसने अपनी बेटी की तरफ देखा और कहा — "यह तुम्हारी शादी की अँगूठी है। अब तुम अन्दर जाओ और अपने पिता के लिये बहुत अच्छा खाना बना कर लाओ।"

इस पर भी वह बूढ़ा कुछ नहीं बोला।

अगले दिन अनन्सी बहुत जल्दी उठा और फिर से उस बूढ़े के घर पहुँच गया। वह बूढ़ा अभी भी वहीं बैठा हुआ था। वह उस दरवाजे से हिला भी नहीं था।

अनन्सी ने फिर उसे "गुड मौर्निंग" कहा और फिर से उसके घर में चला गया।

अन्दर जा कर उसने अपनी बेटी को आवाज लगायी पर उसको कोई जवाब नहीं मिला।

उसको मालूम था कि उसकी बेटी को ऑखमिचौली खेलना बहुत अच्छा लगता था सो उसने बूढ़े का सारा घर छान मारा – आलमारियॉ मेजें बक्से पलंग के नीचे पर वह उसको कहीं दिखायी नहीं दी।

उसको यह भी मालूम था कि वह एक खतरनाक जगह थी पर फिर भी उसने बूढ़े का बर्फ का बक्सा भी देखा पर उसको अपनी बेटी वहॉ भी दिखायी नहीं दी।

इस तरह अनन्सी ने उसका सारा घर देख लिया पर उसकी बेटी वहॉ कहीं नहीं थी। फिर उसको एक और जगह का ख्याल आया जहॉ उसको देखना चाहिये था।

"मुझे मालूम है कि वह कहॉ होगी। वह जरूर ओवन[70] में छिपी होगी।" वह भागा भागा रसोईघर में गया और ओवन खोल कर देखा तो वह तो सकते में आ गया।

उस ओवन में उसकी शादी की ऑगूठी पड़ी हुई थी। अनन्सी तुरन्त ही बाहर दौड़ा दौड़ा आया और बूढ़े को उसकी गर्दन से पकड़ कर उससे पूछा — "मेरी बेटी कहॉ है?"

[70] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

आखिर वह बूढ़ा बहुत ही गहरी आवाज में हॅस कर ऐसे बोला जैसे वह अपना हर शब्द अपने गले से चबा चबा कर बोल रहा हो — "क्या तुमको मालूम है कि मैं कौन हूॅ?"

अनन्सी बोला — "हॉ हॉ मुझे मालूम है कि तुम कौन हो। तुम मेरे दामाद[71] हो।"

बूढ़ा फिर हॅसा और अनन्सी की कमीज पकड़ते हुए बोला — "हा हा हा हा। तुम्हारा दामाद? मेरा नाम मौत है। और तुम ही मुझको ढूॅढते हुए यहॉ आये थे मैंने तुमको अपने घर में नहीं बुलाया था।

तुम मेरी तकलीफों को बढ़ाते हुए मेरी बेइज़्ज़ती करने के लिये अपनी बदसूरत बेटी को भी यहॉ ले कर आये थे। इसलिये मैंने उसे खा लिया और अब मैं तुम्हें खाने वाला हूॅ।"

अनन्सी ने अपनी कमीज के बटन तोड़ दिये और कमीज उतार कर अपनी जान बचा कर वहॉ से भाग लिया। वह अपने हिसाब से इतनी तेज़ी से भाग रहा था कि उसको लग रहा था कि अगर उस बूढ़े ने उसका पीछा किया तो वह उसको यकीनन पकड़ नहीं पायेगा।

पर जहॉ भी अनन्सी मुड़ता वहॉ वह बूढ़ा उसके पीछे ही होता। परेशान हो कर अनन्सी ने एक पेड़ की डाल देखी और उसके ऊपर जितना ऊॅचा चढ़ सकता था चढ़ गया।

[71] Translated for the words "Son-in-law", means daughter's husband.

बदकिस्मती से मौत अनन्सी के पीछे पीछे पेड़ पर नहीं चढ़ सका क्योंकि मौत को पेड़ पर चढ़ना आता ही नहीं था।

मौत ने उस समय जो कुछ भी उसको मिला वह उसने पकड़ा – पत्थर जूता और उसे अनन्सी पर फेंका पर अनन्सी को उनमें से एक भी नहीं लगा। वे सब इधर उधर चले गये।

एक बार मौत की नजर अनन्सी पर से हटीं तो डरा हुआ मकड़ा पेड़ से नीचे कूद गया और अपने घर भाग गया।

जैसे ही वह घर पहुँचा वह अपनी पत्नी से ज़ोर से चिल्ला कर बोला — "असो असो[72], जल्दी से बच्चों को लो और छत पर चली जाओ। मौत मेरे पीछे आ रहा है।"

उसकी पत्नी ने पूछा — "तुमने क्या कहा अनन्सी?"

अनन्सी फिर चिल्ला कर बोला — "जल्दी से बच्चों को लो और छत पर चली जाओ। मौत मेरे पीछे आ रहा है।"

उसकी पत्नी फिर बोली — "तुमने क्या कहा कि मैं आलू के छिलकों का क्या करूँ?"

अनन्सी ने परेशान होते हुए कहा — "कुछ नहीं।"

फिर वह खुद तुरन्त ही अपने घर के अन्दर घुसा अपनी पत्नी और बच्चों को उठाया और उन सबको ले कर घर की छत पर चढ़ गया। फिर उनसे कहा — "तुम सब छत में लगा लकड़ी का डंडा पकड़ लो और उसको कस कर पकड़े रहना।"

[72] Aso or Asso – name of the wife of Anansi

इतनी ही देर में बूढ़ा मौत वहॉ आ गया। अनन्सी और उसका परिवार सब सुरक्षित रूप से लकड़ी का डंडा पकड़े छत पर चढ़े हुए थे।

बूढ़े मौत ने शान्ति से एक थैला लिया और एक कुर्सी खिसका कर वहीं बैठ गया जहॉ मकड़ा और उसका परिवार छत से लटके हुए थे।

आधा घंटे बाद अनन्सी के बेटे ने अपने पिता से कहा — "पिता जी मेरे हाथ दुख रहे हैं। मैं अब यह डंडा नहीं पकड़ सकता।"

अनन्सी बोला — "बेटा कुछ देर और पकड़ कर रखो क्योंकि अगर तुम नीचे गिर पड़े तो मौत तुमको खा लेगा।"

पर वह बच्चा उस डंडे को और पकड़ कर नहीं रख सका सो वह नीचे गिर गया। मौत ने उसे उठाया ओर अपने थैले में रखते हुए बोला — "मुझे तो तुम्हारा पिता चाहिये तुम नहीं।"

कुछ देर बाद अनन्सी की एक बेटी बोली — "पिता जी मेरे भी हाथ अब थक गये हैं मैं अब गिरने ही वाली हूॅ।"

"गिरो बेटी, मौत तुमको भी ले जायेगा।"

वह गिर गयी तो मौत ने उससे भी वही कहा कि उसे उसका पिता चाहिये वह नहीं और उसको उसके भाई के साथ अपने थैले में रख लिया। उसके बाद अनन्सी के एक बेटा और एक बेटी और गिर गये और फिर उसकी पत्नी असो भी गिर गयी।

आखीर में अनन्सी के हाथ भी उस लकड़ी के डंडे को पकड़े पकड़े दुखने लगे। पहले उसका बॉया हाथ छूटा पर किसी तरह से वह अपने दॉये हाथ से वह डंडा पकड़े रहा।

बॉया हाथ उसने इसलिये रखा हुआ था कि जब उसका दॉया हाथ थक जायेगा तो वह अपना बॉया हाथ फिर से इस्तेमाल कर लेगा।

अनन्सी का दिमाग तेज़ी से चल रहा था। वह बोला — "भाई मौत, मैं तुम्हारा खाना खा खा कर इतना मोटा हो गया हूँ कि जैसे ही मैं नीचे गिरा तो मैं तो टुकड़े टुकड़े हो जाऊँगा। उस थैले में रखने के लिये मेरा तो कुछ बचेगा ही नहीं।

तुम्हारे पास तो केवल उतना ही मॉस बचेगा जिससे तुम केवल मकड़ा सैन्डविच बना सको। पर अगर तुम मेरे रसोईघर में जाओगे तो वहॉ एक बैरल[73] भर कर आटा रखा है।

तुम वह बैरल ले आओ और उसको ला कर यहॉ मेरे नीचे रख दो तो अगर मैं गिरूँगा भी तो उस बैरल में रखे आटे में गिरूँगा। इससे मेरे टुकड़े टुकड़े नहीं होंगे बस केवल थोड़ी सी ही चोट आयेगी।"

[73] Barrel – a barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above

मौत ने एक लम्बी सी साँस भरी अपनी ठोड़ी पर हाथ फेरा और अपने सारे साढ़े सैंतीस दाँत दिखाते हुए हँसा — "आहा खाने के लिये कैन्टकी फ्राइड मकड़ा। और या फिर मैं उसके सारे परिवार को ही खा लूँ।"

अनन्सी ने सोचा कि वह बैरल तो बहुत भारी है उसको उठाने के लिये तो चार आदमी चाहिये। अगर यह मौत उसको उठाने गया तो उसको यहाँ से भागने के लिये काफी समय मिल जायेगा।

उधर मौत अनन्सी के रसोईघर में से आटे का बैरल लाने चल दिया। जैसे ही मौत वहाँ से गया अनन्सी नीचे कूद गया।

पर यह क्या? मौत तो तुरन्त ही वापस भी आ गया। मौत के बारे में अनन्सी का अन्दाज गलत निकला। वह तो बहुत जल्दी ही आ गया था।

जब मौत उस बैरल को हिलाता डुलाता वहाँ ले कर आ रहा था तो रखने से पहले वह झुक कर देख कर यह पक्का कर लेना चाहता था कि वह उसको कहाँ रखे ताकि वह अनन्सी के ठीक नीचे रहे। पर तभी अनन्सी नीचे कूद रहा था।

चालाक अनन्सी छत से कूदा तो वह उस बूढ़े मौत के सिर पर कूद गया। उसके गिरने के बोझ से मौत का सिर आटे में घुस गया और बहुत सारा आटा उसकी आँखों में चला गया जिससे उसको कुछ देर के लिये कुछ दिखायी देना बन्द हो गया।

अनन्सी तुरन्त ही उसके सिर पर से कूद गया। मौत के सिर पर से कूद कर उसने अपने परिवार को उसके थैले में से बाहर निकाला और सब अपनी जान बचा कर वहॉ से भाग लिये।

मौत अनन्सी मकड़े को फिर कभी नहीं पकड़ सका इसी लिये आज अनन्सी की कहानियॉ कही जाती हैं।

जब भी तुम कभी छत पर लगे मकड़े के जाले देखो तो समझ लो कि वे अनन्सी के हैं। वह आज भी मौत से बच कर भागने की कोशिश में है।

यह कहानी हमें यह बताती है कि कैसे अनन्सी ने अपने पिता न्यामे की तरह से मौत को जीता। न्यामे ने सब कुछ बनाया ज़िन्दगी भी और मौत भी। न्यामे ने मौत को उसके जहर का तोड़ इस्तेमाल कर के जीता था जबकि अनन्सी ने अपने जाले से मौत को जीता।

19 कुत्ता बिल्ला कबूतर और जादू की अँगूठी[74]

एक बार की बात है कि अफ्रीका के घाना देश में एक स्त्री रहती थी। वह उतनी ही गरीब भी थी जितनी बदकिस्मत थी। वह विधवा थी और उसके सब बच्चे भी एक एक कर के मर चुके थे। कुछ बीमारी से, कुछ ऐक्सीडैन्ट से और कुछ लड़ाई में।

अब उसके पास केवल उसका एक ही बेटा रह गया था और वह था उसका सबसे छोटा बेटा। वही उसकी दुखी ज़िन्दगी का अकेला सहारा था। उसका वह बेटा बहुत ही दयालु और अच्छे दिल वाला आदमी था।

एक दिन उसका बेटा रोज से पहले ही जाग गया। वह अपनी माँ के पास गया और उससे बोला — "माँ आज मुझे थोड़ा सा सोने का चूरा दो मैं समुद्र के किनारे वाले गाँव से थोड़ा सा नमक खरीद कर लाऊँगा।"

माँ को अपने बेटे पर पूरा विश्वास था सो उसने पूछा — "कितना चाहिये?"

बेटा बोला — "बस एक चुटकी।"

उसकी माँ ने उसको एक चुटकी सोने का चूरा दे दिया। उसने उन चीज़ों की एक गठरी बनायी जिनकी उसको अपनी यात्रा के

[74] The Dog, the Cat, the Pigeon and the Magic Ring – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, Africa. Taken from : "African Folktales". By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

लिये जरूरत थी और वह उस गॉव को चल दिया जहॉ से उसको नमक लाना था।

रास्ते में उसको एक आदमी मिला जो अपना एक काला और सफेद धब्बे वाला कुत्ता बाजार में बेचने के लिये ले कर जा रहा था। लड़के को कुत्ता बहुत अच्छा लगता था सो वह उस आदमी से बोला — "मैं इस कुत्ते को खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे अपना यह कुत्ता बेचोगे?"

वह आदमी बोला — "क्यों? तुम तो बहुत छोटे लड़के हो तुम इसकी कीमत कैसे दोगे?"

"तुम इसकी चिन्ता न करो बस यह बताओ कि यह है कितने का?"

"ठीक है। तुम इसके लिये एक चुटकी भर सोने का चूरा दे दो।"

"हा हा हा हा। लो यह लो एक चुटकी भर सोने का चूरा और यह कुत्ता मुझे दे दो।" कह कर उसने उस आदमी को सोने का चूरा दिया, उससे उसका कुत्ता लिया और घर वापस आ गया।

जब उसकी मॉ ने देखा कि उसका बेटा तो इतनी जल्दी वापस आ गया और वह भी एक कुत्ते के साथ तो उसको बहुत अजीब लगा। उसने पूछा — "तुमने उस समुद्र के पास वाले गॉव से नमक नहीं खरीदा, क्यों?"

"क्योंकि मैंने उस सोने के चूरे से यह सुन्दर कुत्ता खरीद लिया।"

मॉ ने एक लम्बी सॉस लेते हुए कहा "उफ़।" कुछ दिन बाद वह इस बात को भूल गयी।

पर करीब एक महीने बाद उस लड़के ने फिर से अपनी मॉ से कहा — "मॉ मुझे थोड़ी सा सोने का चूरा और दो। मैं आज यह देखने के लिये बाजार जाना चाहता हूँ कि शायद कहीं कोई अच्छा सौदा पट जाये।"

"मुझे डर है कि तुम उसे भी पिछली बार की तरह से बर्बाद कर दोगे।"

"मॉ चिन्ता न करो, तुम देखोगी कि मैं तुमको शिकायत का कोई मौका नहीं दूँगा।"

क्योंकि वह अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी इसलिये उसने उसको फिर से सोने का चूरा दे दिया। और वह लड़का फिर से चल दिया।

रास्ते में उसको एक आदमी मिला जो एक बिल्ले को अपनी गोद में लिये बैठा था। वह एक सुन्दर सा बिल्ला था सो वह लड़का उससे यह कहे बिना न रह सका — "मुझे यह बिल्ला खरीदना है। मुझे बिल्लों की चंचलता बहुत अच्छी लगती है। यही एक जानवर है जो अपने पैरों पर कूदता है।"

बिल्ले के मालिक ने कहा — "मैं यह बिल्ला तुम्हें बिल्कुल नहीं बेच सकता। मैने इसे अभी अभी इसलिये खरीदा है ताकि यह मेरे सोने के कमरे में से चूहों को भगा सके। और अगर मैं तुमको इसे बेच भी दूँ तो तुम इसकी कीमत कैसे चुकाओगे?"

"क्या तुम यह इसलिये कह रहे हो क्योंकि मैं केवल एक लड़का हूँ। उसकी तुम चिन्ता न करो। यह बताओ कि इसका तुम कितना पैसा लोगे?"

आदमी बोला — "अगर तुमको यह वाकई चाहिये तो तुम इसका दो चुटकी सोने का चूरा दाम दे दो।"

लड़के ने उसको दो चुटकी सोने का चूरा दिया, उससे बिल्ला लिया और अपने घर चला आया। उसकी माँ फिर से बहुत आश्चर्यचकित हो गयी कि उसका बेटा इतनी जल्दी घर वापस कैसे आ गया।

"देखो माँ, मैं कितना सुन्दर बिल्ला ले कर आया हूँ। यह मुझे इतना सुन्दर लगा कि मैं अपने आपको इसे खरीदने से रोक ही नहीं सका।"

"बेटा मैं तो सोचती थी कि तुम दूसरों से बहुत अलग हो।" कह कर उसने उसको बहुत डाँटा पर बाद में फिर उसको उसकी बात माननी ही पड़ी।

इस घटना के बाद फिर से करीब चालीस दिन निकल गये कि एक दिन फिर वह अपनी माँ के पास गया और बोला — "माँ मुझे

कुछ सोने का चूरा और दो अबकी बार मैं अपना कुछ काम शुरू करना चाहता हूँ।"

माँ बोली — "बेटा मेरे पास अब केवल तीन चुटकी ही सोने का चूरा रह गया है। तुम उसे चाहे जहाँ ले जाओ। मगर याद रखना कि इसके बाद बस सब खत्म।"

लड़का बोला — "माँ मेरे ऊपर भरोसा रखो।"

अगले दिन वह अपना सामान ले कर वहाँ से चल दिया। वह अभी थोड़ी दूर ही गया होगा कि उसको एक शिकारी मिला जिसके पास एक कबूतर था। लड़के को लगा कि वह शिकारी उस कबूतर को पकड़ कर अपने घर पकाने के लिये ले जा रहा था।

वह शिकारी से बोला — "मैं तुम्हारा यह कबूतर खरीदना चाहता हूँ। मुझे जब ये कबूतर आवाज निकालते हैं तो बहुत अच्छे लगते हैं।"

शिकारी बोला — "पर मैं इस कबूतर को बेचना नहीं चाहता।"

लड़का बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हें इसके अच्छे पैसे दूँगा।"

"क्या सचमुच? अगर मैं इसको बेचूँ तो मुझे इसके लिये कम से कम तीन चुटकी सोने का चूरा चाहिये।"

"लो यह लो तीन चुटकी सोने का चूरा।" लड़के ने उसको तीन चुटकी सोने का चूरा दिया, उससे कबूतर लिया और घर वापस आ गया।

कोई भी यह सोच सकता है कि जैसे ही उसकी मॉ ने उसको अपने कन्धे पर कबूतर रखे आते देखा होगा तो उस बेचारी का क्या हाल हुआ होगा।

वह बोली — "बेटा यह तुमने क्या किया? अब तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

लड़के को पता ही नहीं था कि वह अपनी मॉ से क्या कहे। अपनी करनी पर अफसोस करता हुआ वह अपने घर के दरवाजे के बाहर बैठ गया। कुत्ता उसके पैरों के पास बैठा था, बिल्ली उसकी गोद में बैठी थी और कबूतर उसके कन्धे पर बैठा था।

वह वहॉ बैठा बैठा सोच रहा था "अब मैं क्या करूॅ। अपने इन बेकार के विचारों को किस तरह सुधारूॅ? कैसे अपनी मॉ की सहायता करूॅ?" और जब वह अपनी गलती महसूस कर रहा था तो उसने अपने कान में एक धीमी सी आवाज सुनी।

यह कबूतर था — "शान्त हो जाओ। मैं तुम्हारी सहायता करूॅगा।" कबूतर ने इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि उसके कहने का लड़के पर क्या असर पड़ा।

वह आगे बोला — "मेरे अच्छे साथी, तुमको मालूम होना चाहिये कि मेरे अपने गॉव में मैं एक बहुत बड़ा सरदार था। एक दिन मैं ऐसे ही घूमने के लिये कहीं जा रहा था कि इस शिकारी ने मुझे पकड़ लिया।

अगर तुमने मुझे न खरीद लिया होता तो अब तक तो मैं मर ही गया होता और पका लिया गया होता। इसलिये तुम मुझे मेरे गॉव वापस ले चलो तो वहॉ मेरे लोग तुम्हारा ज़ोर शोर से स्वागत करेंगे।"

यह सुन कर लड़का कुछ समझ नहीं पाया। वह बोला — "कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम मुझे कोई कहानी बता कर मेरे पास से भाग जाना चाहते हो।"

"अगर तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो तुम मेरे एक पैर में रस्सी बॉध दो जिससे मैं उड़ कर कहीं नहीं जा पाऊॅगा।"

सो लड़के ने उसके एक पैर में रस्सी बॉधी और जिधर को भी वह कबूतर उसको ले गया वह उस कबूतर के पीछे पीछे चलता चला गया।

जब वे गॉव की हद के पास पहुॅचे तो वहॉ दो बच्चे रंगीन कंचों[75] से खेल रहे थे। चिड़िया को देखते ही वे तुरन्त ही उठे और वहॉ से

[75] Translated for the word "Marbles". See their picture above. They are little glass balls.

चिल्लाते हुए गॉव की तरफ भागने लगे "सरदार आ गये। सरदार वापस आ गये।"

यह सुन कर वहॉ के सारे आदमी और स्त्रियॉ उन दोनों से मिलने के लिये भागे। वे खुशी से चिल्ला रहे थे और उनके हाथों में शाही झंडे थे जो वे जब लेते थे जब वे राजा को लेने के लिये जाते थे। उन्होंने सबने मिल कर बहुत खुशियॉ मनायी।

कबूतर ने उनको फिर अपनी सारी कहानी बतायी। साथ ही यह भी बताया कि उस लड़के ने उसकी जान बचाने के लिये अपना आखिरी सोना तक दे दिया। यह सुन कर तो वहॉ के सारे बड़े और छोटे लोग उस लड़के के बड़े कृतज्ञ हुए।

पहले तो रानी मॉ और गॉव के बड़े लोगों ने लड़के को एक घड़ा भर कर सोने का चूरा दिया। उसके बाद एक जादूगर[76] आया। उसने अपनी अॅगुली में से एक अॅगूठी निकाली और उसे लड़के को देते हुए कहा — "लो, यह अॅगूठी लो। तुम इससे जो कुछ भी मॉगोगे यह अॅगूठी तुमको वही दे देगी।"

लड़का वहॉ तीन दिन और तीन रात तक मेहमान की तरह से रहा लेकिन फिर उसके जाने का भी दिन आया। उस दिन उसने कबूतर को एक बहुत ही मीठा सा विदा का सन्देश दिया। फिर

[76] Translated for the word "Witch Doctor". He is like Ojha in India who works on Bhoot, Pret and Spirits

उसने एक बड़ी सी भेड़ की खाल में सोने का चूरा भरा और अपने घर अपनी मॉ के पास चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी मॉ अनाज के दाने निकाले जाने वाली जगह पर बैठी मुर्गियों को दाना खिला रही थी। वह दौड़ा दौड़ा गया और जा कर अपनी मॉ को गले लगाया। उसने उसको अपना लाया सोने का चूरा और जादू की अँगूठी भी दिखायी।

उसने उन सबके बारे में उसको जल्दी जल्दी बता दिया ताकि वह बेचारी ज़्यादा आश्चर्य से कहीं बेहोश ही न हो जाये। फिर वह बोला — "अब मैं जंगल जाता हूँ और इस अँगूठी की सहायता से अपने रहने के लिये एक नया गॉव बसाता हूँ।"

वह घर के बाहर चला गया और घने जंगल में घुस गया। वहॉ भी वह काफी दूर तक चलता रहा। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ जंगल बहुत ही घना था और वहॉ से आगे जाना मुमकिन ही नहीं था।

वहॉ उसने अपनी जादू की अँगूठी जमीन पर रखी और उससे कहा — "अँगूठी, यहॉ पर एक बहुत बड़ी खुली जगह बनाओ जिसमें बहुत सारे पेड़ और ब्लैक बैरी[77] की झाड़ियॉ हों।"

[77] Blackberry is a kind of small fruit without any stone in it. See its picture above. The bigger black fruit is blackberry.

तुरन्त ही वहॉ के जंगली पेड़ नीचे गिर पड़े, जड़ से उखड़ गये और वहॉ की झाड़ियों को कुचल डाला। लड़के ने फिर ॲगूठी को हुक्म दिया — "अब इन सबको इकट्ठा कर के जला दो।"

पलक झपकते ही सारी लकड़ियॉ, पेड़ झाड़ियॉ उस साफ जगह में इकट्ठा हो गये और जल कर राख हो गये। लड़के ने फिर कहा — "ॲगूठी, अब यहॉ इस साफ जमीन पर बहुत सारे मकान बना दो।" तुरन्त ही उस जमीन पर छोटे बड़े मकान मुशरूम की तरह से निकलने लगे।

आखीर में उसने उसको कहा — "ओ ॲगूठी, इन घरों को खाली मत छोड़ो बल्कि इन सबको लोगों से भर दो।" तुरन्त ही जादू की तरह उन सब घरों में लोगों की चहल पहल शुरू हो गयी। ऐसा लग रहा था जैसे वे हमेशा से वहीं रहते आ रहे हों।

लड़का यह सब देख कर बहुत खुश हुआ। अब उसने अपने आपको उस गॉव का सरदार घोषित कर दिया।

इस नये गॉव से एक दिन की दूरी पर अनन्सी मकड़ा[78] रहता था। एक दिन उसने इस खुश गॉव के बारे में सुना जो जादुई ढंग से

जंगल के बीच में अपने आप ही प्रगट हो गया था।

[78] Anansi Spider is the most important and popular character of West Africam folktales. He is always a trickster, greedy and hungry. See his picture above.

अनन्सी उस गॉव के बारे में इतना ज़्यादा उत्सुक हो गया कि उसने निश्चय किया कि वह खुद जा कर उसको देखेगा। सो वह उस लड़के से मिलने चल दिया।

वहॉ जा कर इधर उधर देखते हुए वह उस लड़के से बोला — "बधाई हो तुमको। आखिर तुम खुशकिस्मत हो ही गये। मुझे याद है कि पहले तुम बहुत गरीब थे और पिछली बार तो जब मैंने तुमको देखा था तब तो तुम पतले भी बहुत थे। पर यह सब तुमने किया कैसे?"

वह लड़का सच बोलता था कुछ छिपाता नहीं था सो उसने उसको भी सब कुछ सच सच बता दिया। यह सब सुन कर अनन्सी उससे जलने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह उस लड़के की ऑगूठी ले ले पर बाहर से उसने ऐसा दिखाया कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

उसने बड़े प्यार से लड़के को विदा कहा ओर अपने गॉव वापस चला गया।

गॉव पहुॅच कर उसने अपने एक भतीजे[79] को बुलाया और उससे कहा — "भतीजे, मेरा एक काम को। तुम जंगल में अचानक प्रगट हुए उस नये गॉव में जाओ और उसके नौजवान सरदार से मिलो। उसको तुम यह एक घड़ा भर कर शराब भेंट में देना और उससे दोस्ती करना। फिर जितनी जल्दी हो सके उसकी ऑगूठी चुरा लाना।"

[79] Translated for the word "Nephew". In English it may mean anything – brother's son or sister's son.

उसका वह भतीजा अपने चाचा की तरह ही चालाक था। वहाँ उसने किसी भी चीज़ के बारे में कुछ भी बात नहीं की। बस उस नौजवान सरदार के लिये शराब ले कर सीधा उस नये गाँव की तरफ चल दिया।

अनन्सी का भतीजा और वह नौजवान सरदार दोनों जल्दी ही बहुत अच्छे दोस्त बन गये। उस नौजवान सरदार ने अनन्सी के भतीजे से कहा कि वह उस गाँव के मेहमान की तरह से उसके पास कितने भी दिन ठहर सकता है। सो अनन्सी का भतीजा उसके पास ही ठहर गया।

तीन दिन निकल गये। चौथे दिन सुबह सरदार तैरने के लिये नदी पर जाना चाहता था सो उसने अपनी अँगूठी उतार कर मेज पर रख दी और तैरने चला गया।

अब जब अनन्सी का भतीजा वहाँ अकेला रह गया तो उसने वह अँगूठी उठायी और अपने चाचा के गाँव जितनी तेज़ी से भाग सकता था भागा चला गया।

जैसे ही अनन्सी के हाथ में वह जादुई अँगूठी आयी उसने अँगूठी को हुक्म दिया कि वह उस नौजवान सरदार के नये गाँव से भी ज़्यादा बड़ा और सुन्दर गाँव बना दे। पल भर में ही उसकी यह इच्छा पूरी कर दी गयी।

इस बीच वह लड़का नदी से तैर कर घर वापस आ गया। उसने देखा कि उसकी अँगूठी और उसका मेहमान दोनों ही गायब

हैं। उसने उन दोनों को ही ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उसको वे दोनों ही नहीं मिले।

उसको बहुत चिन्ता हुई तो उसने सलाह के लिये जंगल की आत्मा[80] को बुलाया। जंगल की आत्मा आया और बोला — "तुम हर एक पर विश्वास कर लेते हो इसी लिये तुम बेवकूफ बन जाते हो। अनन्सी मकड़े ने तुम्हारी अँगूठी चुराने के लिये अपना भतीजा तुम्हारे पास भेजा था और अब वह अँगूठी उसके पास है।

उस अँगूठी की सहायता से उसने भी एक बहुत बड़ा गाँव बसा लिया है जो तुम्हारे गाँव से दोगुना बड़ा है और तुम्हारे गाँव से भी ज़्यादा सुन्दर है।"

"इसका मतलब यह है कि वही मेरी अँगूठी चुरा कर ले गया है। पर अब आप मुझे यह तो बताइये कि मैं अपनी अँगूठी उससे वापस कैसे लूँ?"

"अब तुम अपना कुत्ते ओकामैन और अपने बिल्ले ओका[81] को अनन्सी के घर भेजो। वे ही तुम्हारी इस समस्या को सुलझा सकते हैं।" इतना कह कर जंगल की आत्मा वहाँ से चला गया।

लड़का अपने घर गया और अपने कुत्ते और बिल्ले को बुलाया ताकि वह उनको उनका काम समझा सके।

[80] Spirit of the Forest

[81] Ocraman Dog and Ocra Cat

इस बीच अनन्सी भी एक आत्मा के पास गया तो उसने उसको दो आने वालों के बारे में चौकन्ना कर दिया। यह सुन कर उसने अपना प्लान बनाया।

उसने बहुत बढ़िया और बारीक पिसा मॉस लिया, उसमें एक रस मिलाया जिससे जो कोई भी उसे खाता वह गहरी नींद सो जाता। यह कर के उसने उस मॉस को अपने घर तक आने वाली सड़क पर बिखेर दिया और उन आने वालों के इन्तजार में बैठ गया।

ओकामैन और ओका दोनों ही अनन्सी के घर के लिये चल पड़े थे और चलते चलते वे अब उस जगह पर आ गये थे जहॉ से सड़क दो तरफ जाती थी।

वहॉ आ कर उन्होंने पहले एक तरफ सूँघा फिर दूसरी तरफ सूँघा। तुरन्त ही उन दोनों को उस मॉस की खुशबू आ गयी जो अनन्सी ने बॉयी तरफ की सड़क पर बहुत सारा बिखराया हुआ था।

बिल्ला बोला — "यहॉ कुछ अजीब सा है जो मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। चलो दॉयी तरफ से चलते हैं।"

पर कुत्ता मॉस की खुशबू को नहीं छोड़ सका। उसने बिल्ले की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वह बॉयी तरफ की सड़क ले कर चल दिया। रास्ते में उसको बहुत सारा मॉस मिल गया तो उसने उसे तुरन्त ही पेट भर कर खा लिया। उसको खाते ही तो उसको सो ही जाना था सो उसे खाते ही वह सो गया।

पर बिल्ले ने दॉयी सड़क ली और कुछ देर बाद ही वह अनन्सी के गॉव पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने अनन्सी का घर ढूॅढा और वह उसमें अन्दर चला गया। उसने देखा कि अनन्सी तो पत्तियों के मुलायम कालीन पर पैर फैला कर सो रहा है।

मौका अच्छा था। बिल्ले ने अॅगूठी के लिये उसका सारा घर ढूॅढ मारा पर उसको वह अॅगूठी नहीं मिली।

लेकिन फिर उसको वह अॅगूठी एक मजबूत बक्से में रखी मिल गयी। पर जैसे ही वह वह अॅगूठी निकालने लगा तो उसे लगा कि अनन्सी तो जागने वाला है सो उसने अॅगूठी वापस रख कर वह बक्सा बन्द कर दिया और वहीं पास में छिप गया।

पर तभी एक छोटा सा चूहा उसके पास से गुजरा तो उसने उसे तुरन्त ही अपने पंजे में दबोच लिया।

चूहा गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी कर के मुझे मत खाओ।"

बिल्ला बोला — "यह तो मैं सोच भी नहीं सकता जब तक कि तुम मेरी सहायता नहीं करोगे।"

"सहायता? कैसी सहायता? मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूॅगा। बताओ क्या सहायता चाहिये?"

"क्या तुमको वह मजबूत बक्सा दिखायी दे रहा है? इस अनन्सी मकड़े ने मेरे मालिक से चुरायी हुई एक अॅगूठी उसमें रखी हुई है। तुम जाओ और बिना कोई आवाज किये उसमें से वह अॅगूठी निकाल कर मुझे ला कर दे दो। मैं तुमको नहीं खाऊॅगा।"

चूहे को दोबारा नहीं कहना पड़ा। वह बिना कोई आवाज किये वहॉ से खिसक गया और उस मजबूत बक्से के ऊपर पहुँच गया। तुरन्त ही उसने उस बक्से को अपने तेज़ दॉतों से काटना शुरू कर दिया।

जैसे ही उसने उसमें छेद कर लिया वह उस बक्से में घुस गया, अपनी पूँछ में वह अँगूठी फँसायी और बिल्ले के पास वापस आ गया। ओक्रा ने चूहे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने वायदे के मुताबिक उसको छोड़ दिया।

बिल्ला वह अँगूठी ले कर उसी जगह पर वापस आया जहॉ वह कुत्ते को छोड़ कर गया था। वहॉ आ कर उसने देखा कि कुत्ता तो बड़ी गहरी नींद सो रहा था।

वह बोला — "सो तुम यहॉ सो रहे हो। और यहॉ जो इतना सारा मॉस पड़ा हुआ था वह कहॉ है?"

ओक्रामैन बोला — "इसका क्या मतलब है कि मैं सो रहा था? मुझे बस कुछ अच्छा सा नहीं लग रहा था सो मैं ऑखें बन्द किये पड़ा था। और जहॉ तक मॉस का सवाल है मॉस तो यहॉ कोई था ही नहीं। हम लोगों को गलती लग गयी थी कि यहॉ मॉस था।"

बिल्ले को लगा कि ओक्रामैन अपनी गलती छिपाने के लिये झूठ बोल रहा था पर उसने ऐसा दिखाया जैसे उसने उसका विश्वास कर लिया हो।

फिर कुत्ते ने उससे अँगूठी के बारे में पूछा तो उसने उसको सब कुछ सच सच बता दिया। सुन कर ओकामैन कुत्ता बोला — "बहुत अच्छे। पर अब हमको तो अभी नदी पार करनी है जहाँ वह सबसे गहरी है। तुम तो और सभी बिल्लों की तरह से पानी पसन्द नहीं करते तो तुम तो उसे कूद कर ही पार करोगे।

इस तरह कूद कर नदी पार करने में वह अँगूठी तुम्हारे पास से गिर भी सकती है। इसलिये अच्छा यही होगा अगर तुम उसे मुझे दे दो। मुझे तैरना आता है। मैं उसको अपने मुँह में रख लूँगा। वहाँ वह सुरक्षित रहेगी।"

बिल्ले को लगा कि कुत्ता ठीक कह रहा था सो उसने वह अँगूठी कुत्ते को दे दी।

जब वे दोनों नदी के किनारे पहुँचे तो कुत्ता तो नदी में कूद गया ओर तैरने लगा पर बिल्ला एक बड़े से पेड़ के तने पर कूद गया जो नदी के बहाव में बहा जा रहा था।

वहाँ से उसने एक और कूद लागयी और वह नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच गया। पर कुत्ता अभी नदी के बीच में ही था कि वह तैरते तैरते थकने लगा सो उसने साँस लेने के लिये अपना थोड़ा सा मुँह खोला कि वह अँगूठी उसके मुँह से निकल गयी और नदी के पानी में डूब गयी।

जैसे ही कुत्ता नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचा तो ओका बिल्ले ने उससे पूछा — "अँगूठी कहाँ है?"

ओकामैन कुत्ता कुछ बीमार सा बोला — "वह तो नदी के बीच में मेरे मुँह से नीचे गिर पड़ी।"

इस पर पहले तो ओका बिल्ला बहुत गुस्सा हुआ पर फिर बाद में कुछ शान्त हो गया। पर तभी एक बड़ी मछली किनारे पर आयी। ओका बिल्ले ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और उसकी पूँछ पकड़ कर उससे पूछा — "क्या तुमने इत्तफाक से कोई अँगूठी देखी है?" कहते हुए उसने उसकी पूँछ को अपने पंजे में और कस कर पकड़ लिया।

अब उस मछली के पास ओर कोई चारा नहीं था कि वह अपना मुँह खोले। और जैसे ही उसने अपना मुँह खोला अँगूठी उसके मुँह से बाहर निकल पड़ी। ओका बिल्ले ने तुरन्त ही अँगूठी उठा ली और मछली को वापस पानी में फेंक दिया।

अब ओकामैन कुत्ते की बारी थी। उसने ओका बिल्ले से प्रार्थना की कि वह मालिक से जा कर यह न कहे कि रास्ते में क्या हुआ था। पर बिल्ले ने उसको कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह उससे बहुत गुस्सा था।

सो जब वे दोनों घर वापस आये तो कुत्ते ने यह सोच कर कि बिल्ला मालिक से सब कुछ कह देगा मालिक से इस तरह से कुछ कहानी बनायी जैसे उसकी सारी मुश्किलों का जिम्मेदार बिल्ला ही था।

पर लड़के ने जंगल की आत्मा से सच जान लिया था इसलिये वह कुत्ते के किसी भी बहाने को नहीं सुन रहा था। उसने कुत्ते को बहुत डॉटा और बिल्ले को इनाम दिया। उसने बिल्ले को घर के अन्दर रखा जहॉ वह हमेशा गर्म रहता।

20 मारने वाली डंडी[82]

यह बहुत दिनों की बात नहीं है जब अनन्सी मकड़ा अपनी पत्नी असो और तीन बच्चों के साथ जंगल के पास वाले एक घर में रहता था। उसके बच्चों के नाम थे – पतली–टॉग, पूरा–पेट और बड़ा–सिर।[83] एक अच्छे पिता होने के नाते वह रोज सुबह सुबह खाना ढूँढने के लिये निकल जाता था।

एक दिन जब वह अपना खाना ढूँढने निकला हुआ था तो एक झाड़ी के पास उसको एक बहुत ही चमकती हुई और बहुत ही साफ प्लेट मिली। उसको देखते ही वह बोला — "वाह, कितनी सुन्दर प्लेट है।"

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वह प्लेट कुछ नाराजी से बोली — "मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

इस पर अनन्सी ने उत्सुकता से पूछा — "तो फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

प्लेट बोली — "मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

यह सुन कर अनन्सी ने कहा — "अच्छा भरो तो फिर देखते हैं।" तुरन्त ही वह कटोरा गर्म सूप से भर गया।

---

[82] The Spanking-Switch – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, Africa. Taken from : "African Folktales". By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[83] Asso was Anansi's wife's name. His children's names were – Skinny-Legs, Full-Belly and Big-Head.

अनन्सी ने भी अपना समय बर्बाद नहीं किया और तुरन्त ही उस सूप को सारा का सारा पी गया।

सूप पी कर उसने अपने भरे हुए पेट पर हाथ फेरा और प्लेट से कहा — "तुम तो एक जादू की चीज़ हो और हर उस चीज़ की तरह जो जादू की होती है उसकी ताकत को भी लेने वाला कुछ होता है। तो तुम मुझे वह बताओ कि वह क्या है।"

प्लेट बोली —"यह तो तुम ठीक कह रहे हो। मुझे बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई से और छोटे कैलेबाश[84] के प्याले से डर लगता है।

अनन्सी बोला — "ठीक है।" और उस प्लेट को ले कर चल दिया।

जब वह घर वापस आया तो वह सबकी ऑख बचाता हुआ अपने घर के सबसे ऊपर वाले कमरे[85] में गया और उस प्लेट को वहॉ छिपा कर रख दिया। उसके बाद वह चुपचाप

[84] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes. See the picture above of its one kind.

[85] Translated for the Word "Attic". Attic is a room or space that is just below the roof of a building and that is often used to store things, but sometimes it is used to live there if it is big enough. Normally it is in a conical shape. See its picture above.

फिर से जंगल की तरफ चला गया। वहॉ उसने खाना इकट्ठा किया और उसे घर ले कर आ गया।

उसकी पत्नी असो ने उसे पकाया और पका कर सबको खाने के लिये बुलाया तो अनन्सी बोला — "नहीं प्रिये, मुझसे ज़्यादा जरूरत खाने की तुम लोगों को है। तुम मेरा हिस्सा भी ले लो और आपस में बॉट लो। अगर तुम्हारा पेट भर गया तो समझो कि मेरा भी पेट भर गया।"

असो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसको मालूम था कि उसके पति की तो भूख ही बहुत थी। वह हमेशा से बहुत खाता था। पर इस समय वह कहीं नाराज न हो जाये इसलिये उसने उसका हिस्सा बच्चों में बॉट दिया और बच्चों ने खाना खा लिया।

इस बीच अनन्सी कुछ बहाना बना कर बाहर वाली सीढ़ियों से अपने घर के ऊपर वाले कमरे में गया और उस प्लेट से धीरे से कहा — "यह प्लेट तो सचमुच में बहुत सुन्दर है।"

प्लेट फिर बोली — "मैंने तुमसे कहा न कि मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

"अरे हॉ ठीक है मैं तो भूल ही गया। पर फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

"तो भरो और फिर देखते हैं।"

तुरन्त ही वह प्लेट भाप निकलते हुए गर्म मॉस के टुकड़ों और उनके सूप से भर गयी। अनन्सी ने तुरन्त ही उसको खा लिया।

इस तरह रोज वह छिप कर अपने ऊपर वाले कमरे में आता और पेट भर कर खाना खाता और नीचे चला जाता। रोज वह उस प्लेट को यह दिखाता कि वह उसका नाम भूल गया है, रोज वह उसकी जॉच करता और रोज उसका खाना पक्का था।

पर पतली–टॉग ने देखा कि उसका पिता कभी खाना नहीं खाता था पर फिर भी उसका वजन एक औंस भी कम नहीं हुआ था। उलटे वह तो और ज्यादा ताकतवर होता जा रहा था।

उसको लगा कि उसके पिता के पास खाना खाने की कोई और तरकीब थी सो उसने तय किया कि अबसे वह उसके आने जाने पर कड़ी नजर रखेगा।

कुछ समय बाद अनन्सी को जब लगा कि घर में सब सो गये हैं तो वह सबकी नजर बचा कर चुपचाप अपने ऊपर वाले कमरे में गया। पर उसको यह नहीं मालूम था कि उसका बड़ा बेटा उसके हर काम पर नजर रखे था। वह जब अपने ऊपर वाले कमरे में गया था तब भी उसके बेटे ने उसको देख लिया था।

एक दिन जब अनन्सी खाना लाने के लिये जंगल गया तो उसका बड़ा बेटा ऊपर गया। वहॉ जा कर उसने इधर देखा उधर देखा तो उसको वहॉ रखी एक प्लेट दिखायी दे गयी। उसने वहॉ

अपनी मॉ और भाइयों को भी बुला लिया और सबने वहॉ बात करनी शुरू कर दी।

पतली–टॉगें बोला — "इस प्लेट के बारे में तुम क्या सोचते हो? क्या यह सुन्दर नहीं है?"

यह सुनते ही प्लेट बोली — "मेरा नाम सुन्दर नहीं है।" यह सुन कर वहॉ खड़े सब लोग आश्चर्य में पड़ गये।

पूरे–पेट ने पूछा — "तो फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

इस पर बड़ा–सिर बोला — "तो भरो और फिर देखते हैं।"

बड़े–सिर के यह कहते ही वह प्लेट मूँगफली और पाम के सूप से भर गयी। बच्चों को वह सूप देखने में बड़ा स्वादिष्ट लग रहा था सो वे उसको पीने ही वाले थे कि...

मॉ ने सोचा कि यह प्लेट तो जादू की है सो उसने इशारे से बच्चों को वह सूप पीने से रोका।

फिर उसने उस प्लेट से कहा — "क्योंकि तुम जादू की प्लेट हो इसलिये तुम्हारे जादू का कोई तोड़ होगा। मुझे बताओ कि वह क्या है ताकि हम अनजाने में तुमको कोई नुकसान न पहुँचा सकें।"

प्लेट बोली — "यह तो तुम ठीक कहती हो। मुझे बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई से और छोटे कैलेबाश के प्याले से डर लगता है।"

तब असो ने बच्चों से कहा — "सो मेरे बच्चों, तो तुम्हारे पिता हम लोगों से खेलना चाहते हैं अब हम उनको सबक सिखायेंगे।" और उसने बच्चों से बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई और एक छोटे कैलेबाश का प्याला लाने के लिये कहा।

पतली–टॉगें जो अपने आपसे सन्तुष्ट था नीचे रसोईघर में गया और दोनों चीज़ें ले कर सीटी बजाता हुआ ऊपर वाले कमरे में आ गया।

मॉ ने वह रुई उस प्लेट से छुआ दी तो वह बोली "उफ़"। फिर उसने वह कैलेबाश का छोटा प्याला भी उस प्लेट से छुआ दिया तो वह फिर से बोली "उफ़"।

उसके बाद वे सब एक एक कर के नीचे चले गये और अनन्सी के आने का इन्तजार करने लगे। कुछ देर बाद ही अनन्सी रात का खाना ले कर घर आ गया।

जब उसकी पत्नी ने रोज की तरह उसको खाने के लिये बुलाया तो रोज की तरह ही उसने उससे कहा — "मुझसे ज़्यादा जरूरत खाने की तुम लोगों को है। तुम मेरा हिस्सा भी ले लो और आपस में बॉट लो। अगर तुम्हारा पेट भर गया तो समझो कि मेरा भी पेट भर गया।"

सो मॉ और बच्चों ने खाना खा लिया और वे सोने चले गये। अनन्सी जैसे रोज जाता था उसी तरह से चुपचाप अपने ऊपर वाले कमरे में चल दिया। वहॉ जा कर उसने वह प्लेट अपने हाथ में ली

और बोला — "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर उसकी प्लेट ने उसको कोई जवाब नहीं दिया।

वह फिर बोला — "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर फिर भी उसको कोई जवाब नहीं मिला। "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर वह प्लेट तो कोई जवाब ही नहीं दे रही थी।

तब अनन्सी ने कमरे में इधर उधर देखा तो उसको वहाँ एक कोने में बन्दूक की नली को बन्द करने वाली रुई और एक कैलेबाश का छोटा प्याला दिखायी दे गया।

अनन्सी को लगा कि असो और बच्चों को उसकी इस प्लेट का पता चल गया है। पर अनन्सी को यह महसूस ही नहीं हुआ कि इसमें जितनी गलती उसकी है उतनी ही गलती उसके परिवार की भी है क्योंकि उसने तो केवल खाना खाने की वजह से उनको नहीं बताया था पर उसके परिवार ने केवल उत्सुकता के लिये ही उसका इतना नुकसान कर दिया था।

वह अपने ऊपर के कमरे से नीचे आया और उनकी इस बात का बदला लेने के लिये फिर से जंगल चल दिया। काफी दूर चलने के बाद वह थक गया तो सुस्ताने के लिये एक बड़े पेड़ के नीचे बैठ गया। फिर वह वहीं लेट गया और अपने आप ही उनको धमकी देखने वाले प्लान बुड़बुड़ाने लगा।कुछ देर बाद उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं। उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

उसने सपने में देखा कि पेड़ पर बैठी एक चिड़िया उसको यह सलाह दे रही थी कि उसको अपनी ऐसे बेवफा परिवार से बदला कैसे लेना चाहिये।

उसके सपने में वह उससे कह रही थी — "अनन्सी, तुम्हारे पास जो पत्तियॉ पड़ी हैं उनको हटाओ। वहॉ तुमको एक अच्छी साफ चिकनी डंडी मिलेगी। तुम उसको उठा लो।"

सपने में ही अनन्सी ने अपने पास पड़ी पत्तियॉ हटायीं तो उसको चिड़िया की बतायी हुई वह डंडी मिल गयी। उसने उसको उठा लिया।

चिड़िया फिर बोली — "अब तुम इससे कुछ अच्छे शब्द बोलो।"

तो अनन्सी बोला — "ओ मेरी सुन्दर छोटी डंडी।"

वह डंडी बोली — "मेरा नाम "मेरी सुन्दर छोटी डंडी" नहीं है।"

अनन्सी बोला — "तो फिर अपना नाम बताओ।"

"मेरा नाम "मारने वाली डंडी है।"

"अगर ऐसा है तो थोड़ा सा मारो और फिर मैं देखता हूॅ।"

डंडी को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी बस उसने तो आव देखा न ताव और अनन्सी को दॉये बॉये मारना शुरू कर दिया।

बेचारे अनन्सी को पता ही नहीं था कि वह अब क्या करे। वह तो उसकी मार से बचने के लिये बस आगे पीछे कूदता रहा और

उफ ओह हाय चिल्लाता रहा पर वह डंडी उसको मारने से नहीं रुकी।

अनन्सी कराहता हुआ बोला "बचाओ। क्या इसको रोकने का कोई तरीका नहीं है?"

चिड़िया पेड़ के ऊपर से ही चिल्लायी — "अनन्सी, क्योंकि तुम बहुत ही बेवकूफ हो इसलिये तुमको यही मिलना चाहिये। पर अभी के लिये इतना ही काफी है। बोलो "सावधान" और यह डंडी मारना बन्द कर देगी।

अनन्सी चिल्लाया — "सावधान, सावधान" और डंडी ने तुरन्त ही मारना बन्द कर दिया। अब अनन्सी को लगा कि उसको अपने परिवार से बदला लेने का तरीका मिल गया है। उसने अपनी वह मारने वाली डंडी उठायी और अपने घर चल दिया।

घर पहुँच कर उसने रात का खाना पकाने के लिये उसे कुछ दिया और कहा कि उसको पका कर वह खुद खा ले और बच्चों को खिला दे क्योंकि उसको उस खाने की जरूरत नहीं थी। उसने यह भी कहा कि "अगर उन लोगों ने खा लिया तो उसने खा लिया।

कह कर वह अपनी डंडी ले कर अपने ऊपर वाले कमरे में चला गया। इस बार उसने यह ख्याल रखा कि उसकी पत्नी और बच्चे उसकी डंडी देख लें।

ऊपर वाले कमरे में पहुँच कर उसने अपनी डंडी कमरे के एक कोने में रख दी दरवाजा खुला छोड़ दिया और इन्तजार में बैठ गया। एक घंटा गुजर गया। फिर आया उसका बेटा पतली–टॉग।

वहाँ आ कर उसने ढूँढना शुरू किया तो उसको एक कोने में रखी डंडी मिल गयी। वह तुरन्त ही अपनी माँ और भाइयों को बुलाने दौड़ा।

उसने उनसे पूछा — "आप लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं? क्या यह एक सुन्दर डंडी नहीं है?"

डंडी बोली — "मेरा नाम सुन्दर डंडी नहीं है।"

पूरा–पेट बोला — "तो फिर क्या है तुम्हारा नाम?"

"मेरा नाम है "मारने वाली डंडी"।"

बड़ा–सिर बोला — "तो थोड़ा मारो फिर देखते हैं।"

काश उसने यह न कहा होता। उसके यह कहते ही डंडी ने सबको दॉये बॉये मारना शुरू कर दिया। चारों तरफ से आह ओह हाय की आवाजें आने लगीं।

यह देख कर अनन्सी ने सोचा "यही तुम लोगों के लिये ठीक है।" जब उसको लगा कि अब काफी हो गया तो वह बोला "सावधान सावधान"।

यह सुनते ही डंडी का मारना रुक गया और अनन्सी अपने सपने से जाग गया।

21 आदमी और लोमड़ा दुश्मन क्यों?[86]

बहुत पुराने समय में आदमी और जानवर सब साथ साथ रहते थे। वे सब आपस में बहुत खुश थे और एक दूसरे का बहुत खयाल रखते थे।

जब किसी को किसी चीज़ की जरूरत पड़ती तो वह दूसरे से उधार मॉग लेता। जानवरों को आदमियों से डर नहीं लगता था और आदमी भी जानवरों से प्यार से बर्ताव करते थे।

इसी समय में एक लोमड़ा और अनन्सी मकड़ा बहुत अच्छे दोस्त थे। वे अक्सर आदमियों के पास खाना खाने के लिये जाया करते थे।

खाना खाने के बाद मकड़ा आदमियों के बच्चों को हॅसी की कहानियॉ सुनाया करता था और कहानियॉ सुनाने के बाद लोमड़ा और मकड़ा दोनों अपने अपने घर चले जाया करते थे।

उन दिनों आदमी लोग खेती बहुत किया करते थे। उनके पास मुर्गे मुर्गियॉ, सूअर, बकरे, बकरियॉ और गायें भी रहा करती थीं। कभी कभी वे लोग उन जानवरों में से कुछ जानवरों का मॉस भी खा

[86] Why Man and Fox Are Enemies? – a folktale from Ghana, Africa.

लिया करते थे, खास कर के मुर्गे का, सो वह उसका सूप मकड़े को और उसके दोस्त लोमड़े को भी दे दिया करते थे।

जैसा कि हमारे बड़े कहते हैं कि "सारे कुत्ते मरा हुआ और सड़ा हुआ मॉस खाते हैं पर जो उसको अपने मुँह पर लगा छोड़ देता है वही लालची कहलाता है।" सो दोनों ही इस तरह का मॉस खाना पसन्द करते थे, खास कर के मुर्गे का मॉस।

मकड़े को भी मुर्गे का मॉस उतना ही पसन्द था जितना कि उसके दोस्त लोमड़े को पर मकड़ा कभी इस बात को कहता नहीं था जितना कि लोमड़ा।

मकड़ा यह इसलिये नहीं कहता था कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी कही बात उसी पर आ कर पड़ जाये पर वह अकेले में अक्सर सोचता कि काश कुछ मुर्गे केवल उसके अपने पास ही होते।

दूसरी तरफ लोमड़ा जब भी मुर्गा देखता तो उसके मुँह में पानी आ जाता और अपने मुँह में पानी लिये लिये वह वहीं का वहीं खड़ा रह जाता और उसको घूरता रहता।

उसके मुँह से पानी निकलता भी रहता तो फिर वह ज़ोर से बोल पड़ता — "काश ये मुर्गे मेरे अपने पास होते।"

एक दिन मकड़ा आदमी से मिलने गया पर जब वह वहॉ पहुँचा तो घर में कोई भी नहीं था सो वह वहॉ से वापस लौटने लगा। पर जैसे ही वह अपने घर जाने के लिये लौटने लगा कि उसने मकान के

पीछे मुर्गों की क्लक क्लक की आवाज सुनी। तुरन्त ही उसके मुँह में पानी आ गया।

उसने सोचा — "अगर घर में कोई नहीं है तो मैं..." उसने फिर एक बार दरवाजे की तरफ देखा और उसका दिमाग जल्दी जल्दी इधर उधर घूमने लगा।

उसने दरवाजा एक बार और खटखटाया ताकि उसको यकीन हो जाये कि घर में वाकई कोई नहीं है। यह पक्का करने के बाद कि घर में वाकई कोई नहीं था वह वापस जाने के लिये मुड़ा पर उसकी मुर्गा खाने की इच्छा बहुत तेज़ थी।

सो वह मकान के पीछे की तरफ चल दिया जहाँ वे मुर्गे थे। कभी वह पीछे की तरफ जाता और कभी रुक जाता पर जितना वह अपने आपको वह वहाँ जाने से रोकता उतनी ही उसकी मुर्गा खाने की इच्छा और ज़्यादा तेज़ होती जाती।

आखिर उसकी मुर्गा खाने की इच्छा जीत गयी और वह मकान के पीछे की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने देखा कि वहाँ तो मुर्गे सैंकड़ों में थे और कई साइज़ में थे।

एक लाल मुर्गे की तरफ देखते हुए उसने सोचा कि उस लाल वाले मुर्गे का सूप बहुत अच्छा बनेगा सो मकड़े ने जितने भी मुर्गे वह पकड़ सकता था उतने मुर्गे पकड़ लिये और आदमी के घर की चहारदीवारी से बाहर निकल आया।

उसने फिर इधर उधर देखा कि उसको कहीं कोई देख तो नहीं रहा था। यह पक्का करने पर कि कोई उसको नहीं देख रहा था वह झाड़ियों वाले रास्ते से अपने घर आ गया।

जब वह घर आ गया तो उसने कई बर्तन भर कर मुर्गों का सूप बनाया और उस शाम बहुत बढ़िया खाना खाया। खाना खा कर उसने पाम की शराब[87] पी और शराब पी कर वह सो गया।

जब मकड़ा जागा तो वह चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान, लगता है कि मैं तो सो गया था। मुझे तो अभी यह भी सोचना है कि मैं इतने सारे पंखों का क्या करूँ क्योंकि ये ही तो हैं वे जो मुझे मुर्गों की चोरी के जुर्म में पकड़वायेंगे।"

तुरन्त ही मकड़ा अपनी आराम कुर्सी से उठा और उसने सारे पंख समेट कर एक बड़े से थैले में डाले और उनको फेंकने के लिये बाहर चल दिया।

वह उसी रास्ते से गया जिस रास्ते पर लोमड़े का घर पड़ता था। मकड़े को पता था कि लोमड़ा जब उसे वह थैला ले जाते देखेगा तो अपनी उत्सुकता की वजह से उसके बारे में जरूर पूछेगा कि उस थैले में क्या है और यही वह चाहता भी था।

सो जैसे ही मकड़ा लोमड़े के घर के पास पहुँचा उसने लोमड़े के घर पर निगाह डाली और जब उसने उसको वहाँ नहीं देखा तो उसने

[87] Palm wine, also known as "palm toddy" or "toddy" is a fermented drink made from the sap collected from virtually any species of palm tree. Palm wine is well liked throughout West Africa.

ज़ोर ज़ोर से गाना शुरू किया ताकि अगर लोमड़ा कहीं पास में हो तो उसको पता चल जाये कि वह वहॉ था।

मकड़े का गाना सुन कर लोमड़ा अपने घर के पिछवाड़े से बाहर निकल कर आया और बोला — "हलो मेरे दोस्त, यह गाना तो तुम चिड़ियों के लिये छोड़ दो। पर ज़रा यह तो बताओ कि इतना भारी बोझ जो तुम्हारी गर्दन खींच रही है उसको ले जाते हुए भी तुम इतने खुश क्यों हो?"

मकड़ा बोला — "ओह, यह बोझ तो कुछ भी नहीं है।"

लोमड़ा बोला — "छोड़ो भी। तुमने कबसे आपस में चीज़ों को छिपाना शुरू कर दिया? हम लोग तो दोस्त हैं।"

मकड़ा बोला — "हॉ वह तो हैं पर यह दूसरी बात है। सचमुच में यह कुछ खास नहीं है।"

मकड़ा जितना ज़्यादा उस थैले को लोमड़े से छिपाता जा रहा था उतनी ही लोमड़े की उस थैले को देखने की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी कि उस थैले में क्या था।

लोमड़े की उत्सुकता और भी ज़्यादा बढ़ गयी जब उसने मकड़े से कहा कि वह उस बोझ को ले जाने में उसकी सहायता कर देगा और मकड़े ने उसकी सहायता लेने से साफ मना कर दिया।

आखीर में जब मकड़े ने देखा कि लोमड़े की उत्सुकता वहॉ तक बढ़ गयी थी जहॉ तक वह चाहता था तो वह बोला — "ठीक है

ठीक है। मुझे मालूम होना चाहिये था कि मैं तुमको बताये बिना नहीं रह सकता पर तुमने भी मेरे मुँह से बस कहलवा ही लिया।

इस थैले में असल में मक्का का आटा है और मैं इसको केक बनाने के लिये ले जा रहा हूँ। इसके अलावा इसमें कुछ मॉस भी है मूँगफली का सूप बनाने के लिये। इतने अच्छा खाना खाने के बाद मैं पाम की ताजा शराब पियूँगा जिसको पानी मिला कर पीते हैं और बस फिर मैं सो जाऊँगा।"

यह सुन कर लोमड़े के मुँह में भी पानी आ गया। जो कुछ मकड़े ने उससे अभी अभी कहा था उसको वह बार बार सोच कर ही मुस्कुरा रहा था।

वह बोला — "इसका मतलब है कि अगर मैं तुमको न मिला होता तब तो तुम मुझे यह सब बताते ही नहीं।"

मकड़ा ऑखें नचाता हुआ बोला — "मेरे बताने की तो छोड़ो। अब यह बताओ कि खाने के साथ साथ तुम मेरे साथ काम कराने भी आ रहे हो या केवल बातें ही करते रहोगे?"

लोमड़ा खुशी से बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

मकड़ा बोला — "तो लो यह बोझा मुझसे तुम ले लो और मेरे घर तक ले चलो। मैं इनमें से कुछ केक तुमको भी दे दूँगा।"

लोमड़े ने वह बोझ मकड़े से इतने उत्साह से लिया कि वह भारी बोझ भी उसको हल्का ही लग रहा था। उस बोझे को ले कर वह

मकड़े के घर की तरफ चल दिया और मकड़े के अपने पीछे आने का इन्तजार करने लगा।

मकड़ा बोला — "तुम चलो, मैं ज़रा थोड़ी सॉस ले लूँ। मैं इस बोझ को बहुत देर से ढो रहा हूँ।" यह सुन कर लोमड़ा उसके घर की तरफ चल दिया और मकड़े ने चैन की सॉस ली।

पीछे से वह फिर बोला — "तुम चलो मैं भी बस अभी आता हूँ।" लोमड़ा बहुत खुश था और उसने मकड़े को आराम से आने को कहा और आगे चल दिया।

लोमड़े के जाने के बाद जल्दी ही उधर वह आदमी भी आ गया जिसके घर ये मकड़ा और लोमड़ा जाया करते थे।

उसने देखा कि मकड़ा हॉफता सा वहॉ खड़ा है तो उसने हॉफते हुए मकड़े से पूछा — "अरे तुमको क्या हुआ? ऐसा लगता है कि तुम सारा दिन खेत पर काम करते रहे हो।"

मकड़ा बोला — "नहीं नहीं, कुछ नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं तो बस अपने ही ख्यालों में खोया हुआ हूँ।"

आदमी ने पूछा — "क्या सोच रहे हो?"

मकड़ा बोला — "अभी अभी लोमड़ा यहॉ से जा रहा था और एक बहुत भारी थैला ले कर जा रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसमें पंख भरे हों।"

आदमी आश्चर्य से बोला — "पंख?"

मकड़ा बोला — "हॉ पंख। यह सवाल मैंने भी अपने आपसे किया था कि उस थैले में पंख क्यों होने चाहिये पर मेरी कुछ समझ में नहीं आया।"

आदमी ने मकड़े से कहा कि वह ठीक से आराम करे और लोमड़े के पीछे दौड़ गया। यह विचार ही कि लोमड़े के पास पंखों का एक भारी थैला था उसके दिल को धड़का देने के लिये काफी था जबकि उसका दिमाग उससे कुछ ज़्यादा ही बुरा सोच रहा था।

उस थैले में इतने सारे पंख होने का केवल एक ही मतलब था और वह था कि जब वह अपने घर में नहीं था तो किसी ने उसके घर में घुस कर उसके मुर्गों को चुरा लिया था।

जल्दी ही उसने लोमड़े को पकड़ लिया और उससे पूछा कि वह अपने थैले में क्या ले जा रहा था।

लोमड़े ने भोलेपन से जवाब दिया — "इसमें मक्का है और मॉस है।"

आदमी ने पूछा — "मक्का और मॉस?"

लोमड़ा बोला — "हॉ हॉ मक्का और मॉस। मक्का केक बनाने के लिये और मॉस मूँगफली का सूप बनाने के लिये। मुझे यह थैला मेरे दोस्त ने दिया है कि मैं इस थैले को उसके घर तक ले जाऊँ।"

आदमी बोला — "तब तो तुमको इसे मुझे खोल कर दिखाने में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये।"

लोमड़ा बोला — "नहीं, बिल्कुल नहीं। भला मुझे ऐतराज क्यों होगा। क्योंकि यह थैला तो मेरा है ही नहीं।"

जब तक लोमड़े ने अपना वह थैला नीचे रखा वहॉ आस पास के कुछ और लोग भी जमा हो गये। आदमी ने अपना चाकू निकाला और उससे वह थैला काट कर खोल दिया। थैले के खुलते ही थैले के सारे पंख हवा में बिखर कर फैल गये।

लोमड़े को यह देख कर बड़ी शर्म आयी कि उस थैले में मॉस और मक्का की बजाय पंख भरे थे। और उन पंखों को देख कर तो उसका मुॅह खुला का खुला रह गया।

उसने सफाई भी देने की कोशिश की पर तभी आदमी ने गुस्से में आ कर अपने चाकू निकाला और उससे वह उस लोमड़े को मारने दौड़ा।

"झूठे, बदमाश।" चिल्ला कर उसने उसको कोसा — "तूने मेरे विश्वास और दोस्ती को धोखा दिया है इसका बदला तुझे अपनी जान दे कर देना पड़ेगा। मैं जानता था कि तू ऐसा करेगा क्योंकि मैं ने तुझे कई बार अपने मुर्गों की तरफ लालची निगाहों से देखते देखा था।"

लोमड़ा वहॉ से जितनी तेज़ भाग सकता था भाग लिया। और आज तक भी आदमी लोमड़े को मारने के लिये उसके पीछे भाग रहा है।

दूसरी तरफ लोमड़ा आदमी के मुर्गों की तरफ भागता रहता है। वह कहता है — "अगर मुझे उस काम के लिये मरना है जो मैंने किया ही नहीं तो मैं उस काम को कर के ही क्यों न मरूँ।

22 खोजने वाले और रखवाले[88]

एक नर गिलहरी बहुत ही अच्छा किसान था और खेती के मौसम में बहुत बड़ी बड़ी जमीनों में खेती करता था। जब फसल काटने का मौसम आता था वह अपनी फसल इकट्ठी करता और उसको अपने अनाजघर में सूखे के मौसम के लिये इकट्ठा कर लेता।

अगली बार भी वह ऐसा ही करता। जब उसके अनाजघर भर जाते तो बचा हुआ अनाज वह बेच देता।

कुछ समय बाद नर गिलहरी ने महसूस किया कि जो जमीनें वहॉ जानवरों के पास थीं वे कई बार जोती जा चुकी थीं और उनकी फसल अब बहुत कम हो गयी थी सो उसने किसी दूसरी नयी जगह जाने का विचार किया।

जैसा कि हम गिलहरियों को जानते हैं वे पेड़ पर चढ़ सकते हैं। वे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद कर भी जा सकते हैं और बहुत दूर तक जा सकते हैं। पेड़ के ऊपर से वे दूर तक यह भी देख सकते हैं कि उनको किधर जाना है आदि आदि।

सो एक दिन वह नर गिलहरी एक बहुत ऊॅचे पेड़ पर चढ़ गया और वहॉ से इधर उधर देख कर अपनी खेती के लिये कोई अच्छी

[88] Finders Keepers – a folktale from Ghana, Africa.

सी जमीन देखने लगा। वहॉ से उसको जमीन का एक टुकड़ा दिखायी दे गया।

उसको लगा कि वह जमीन का टुकड़ा उसकी मक्का[89] बोने के लिये बहुत अच्छा रहेगा। बस वह पेड़ों पेड़ों होता हुआ उस जमीन तक पहुॅच गया और जैसा कि उसने सोचा था उस जमीन की मिट्टी बहुत काली और उपजाऊ थी। वह उसकी मक्का की खेती के लिये बहुत अच्छी थी।

वह नीचे उतर कर उस जमीन पर गया और यह देखने के लिये वहॉ की थोड़ी सी मिट्टी खोदी कि वह जमीन कैसी थी। वह मिट्टी अच्छी थी। वह उस जमीन से सन्तुष्ट था।

"बस यह ठीक है। इस बार मैं अपनी मक्का यहीं बोऊॅगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस बार मेरी मक्का की फसल और सब मौसमों की मक्का की फसल से बहुत अच्छी होगी। पर इसमें से ये झाड़ियॉ साफ करना थोड़ा मुश्किल काम है।"

पर क्योंकि वह एक मेहनती जानवर था इसलिये वह तुरन्त ही अपने काम में लग गया। उसने वहॉ उगा हुआ सारा जंगल साफ कर दिया और झाड़ियॉ जला दीं।

इस काम को करते करते उसको कई दिन लग गये। काम खत्म कर के उसने उस जमीन को जोता और उसमें अपनी मक्का बो दी। जमीन बहुत अच्छी थी सो बहुत जल्दी ही मक्का निकल कर बढ़ने

[89] Translated from the word "Corn" (or Maize). See its picture above.

लगी। उसकी पत्तियॉ हरी भरी थीं। समय आने पर मक्का भी तैयार हो गयी और फिर जल्दी ही फसल काटने का समय भी आ ग या।

अब क्योंकि नर गिलहरी पेड़ों के ऊपर से हो कर वहॉ आया था तो उसने तो यह सोचा ही नहीं कि उसके खेत को एक सड़क की भी जरूरत थी।

उसे इस बात से भी कोई मतलब भी नहीं था कि उसका खेत कहॉ था क्योंकि वह तो हमेशा ही अपने खेत पर पेड़ों पर चढ़ कर आ सकता था।

एक दिन अनन्सी मकड़ा शिकार के लिये निकला। उससे जितना हो सकता था उसने अपने आस पास का सारा इलाका छान मारा पर उस दिन उसे कोई शिकार ही नहीं मिला।

वह फिर जंगल में और भी अन्दर तक चला गया जहॉ उसको शाम के खाने के लिये कुछ पाने की उम्मीद थी पर वहॉ भी उसको कोई शिकार तो नहीं मिला, हॉ वहॉ उसको उस नर गिलहरी का खेत दिखायी दे गया।

मकड़े ने अपने आपसे कहा — "आहा, देखो तो कुदरत का कितना अच्छा खेल है कि अब तक जितने भी मक्का के खेत मैंने देखे हैं उन सबमें यह खेत सबसे अच्छा है। यह खेत किसका हो सकता है।"

फिर उसने उस खेत में घुसने के लिये उसके चारों तरफ चक्कर लगाया तो न तो उसमें उसे घुसने का कोई दरवाजा मिला और न ही उसके मालिक के घर को जाने वाली कोई सड़क ही मिली।

वह बोला — "यह तो बड़ी अजीब बात है कि इतना सुन्दर खेत और उसमें जाने के लिये कोई सड़क नहीं? यह कैसे हो सकता है?

कोई इतना लापरवाह कैसे हो सकता है कि जिसने इतने अच्छे खेत में अपना इतना समय लगाया वही थोड़ा सा समय निकाल कर सड़क नहीं बना पाया?"

तब मकड़े ने यह देखना शरू किया कि मक्का के उस खेत को वह कैसे ले सकता था। उसने कई तरीके सोचे जिससे वह उस खेत पर अपना दावा कर सके।

उस रात जब वह सोने गया तो वह सो नहीं सका। रात भर वह बिस्तर में इधर उधर करवटें बदलता रहा और दिन में सोचे हुए अपने तरीकों को तौलता रहा कि उस खेत को लेने का कौन सा तरीका उसके लिये सबसे अच्छा रहेगा।

यही सोचते सोचते पता नहीं कब उसे नींद आ गयी। पर सपने में भी वह कुछ कुछ बड़बड़ाता ही रहा।

वह बोल रहा था — "मैंने उसको रात को जोता। ठीक? नहीं नहीं। इस पर तो कोई विश्वास ही नहीं करेगा।"

सुबह को उसकी पत्नी ने उसे जगाया — "उठो? तुम तो सोते में भी बात कर रहे थे। क्या बात है किससे बात कर रहे थे?"

वह चिल्लाया — "अब मुझे पता चल गया। पर तुम मुझे ज़रा यह तो बताओ कि किस तरह कई महीनों की मेहनत का फायदा तुम एक दिन में ही उठा सकती हो?"

अनन्सी की पत्नी बोली — "तुम तो मुझे जानते ही हो। मैं तो सबसे आसान तरीका लेती हूँ। बताओ तुम क्या करना चाहते हो?"

तब अनन्सी ने अपने परिवार को बुलाया। पहले तो उसने उन सबको यह बताया कि उसको वह मक्का का खेत मिला कैसे।

फिर वह बोला — "यह सब भगवान की दया है। मैं जब सुबह उठा और शिकार के लिये तैयार हुआ तो मेरी दाहिनी ऑख इतनी ज़ोर से फड़की जैसे मानो निकल कर गिर ही पड़ेगी।

और जब मैं इस बात का पता न लगा सका कि ऐसा क्यों हो रहा है तो मैं एक पुजारी[90] के पास गया। उसने मुझे बताया कि मेरी ऑख इसलिये फड़क रही थी कि मुझे कहीं से कुछ बड़ी सी चीज़ मिलने वाली थी। मैंने दूर दूर तक देखा पर मुझे तो कहीं एक चूहा भी नजर नहीं आया।

[90] Translated for the word "Diviner" – they are like our Indian Pandit who tell the future by divine means.

पर तभी मुझे एक खेत दिखायी दे गया। भगवान के भी बस काम करने के अपने ही तरीके हैं। जब वह सारे मौकों के दरवाजे बन्द कर देता है तो फिर वह कहीं कोई खिड़की खोल देता है।

मुझे उसने वह खेत दे दिया। अब हमको देखना यह है कि हम वह खेत किसी दूसरे के ले लेने से पहले ही अपने कब्जे में कर लें।"

फिर उसने अपने परिवार को अपने प्लान के बारे में बताया कि वह क्या करना चाहता था। सुबह सुबह सबसे पहले हम सबको वहाँ जा कर उस खेत तक पहुँचने का एक रास्ता बनाना चाहिये और फिर बिना समय बर्बाद किये उसकी फसल काट कर अपने अनाजघर में इकट्ठी कर लेनी चाहिये।

सो अगले दिन सुबह सुबह, मुर्गे के बाँग देने से भी पहले, अनन्सी और उसके परिवार के सौ मजबूत लोग अपने अपने बड़े बड़े चाकू[91] और हल ले कर उस खेत तक गये और उन सबने मिल कर अपने घर से ले कर उस खेत तक झाड़ियों में से हो कर सड़क बनायी।

इस सड़क को बनाने के लिये उन्होंने इतनी ज़्यादा मेहनत से काम किया जितना पहले कभी नहीं किया था। सड़क बना कर उन्होंने उस रास्ते के पास कुछ टूटे फूटे मिट्टी के बर्तन के टुकड़े और

[91] Translated for the word "Matchet" – it is very long blade knife, about two feet long, to cut the grass and bush. See its picture above.

सूखी झाड़ियॉ डाल दीं ताकि वह देखने में पुरानी और इस्तेमाल की हुई लगे।

इस सबको करने के तुरन्त बाद ही उन्होंने उसमें से कुछ मक्का भी काट ली और अपने अनाजघर में ले गये। अब वे रोज वहॉ आते और वहॉ से थोड़ी सी मक्का काट कर अपने घर ले जाते।

जैसे ही नर गिलहरी ने देखा कि कोई उसके खेत से उसकी फसल काट कर ले जा रहा है तो वह चिल्लाया — "मैं देखता हूँ इनको। कौन है जो यह सब कर रहा है?

मैंने इतनी मेहनत कर के इस जमीन पर खेत बनाया, फिर उस पर मक्का बोयी और अब उसमें से कोई मेरी मक्का ले जा रहा है। मैं ऐसा नहीं होने दे सकता। मैं उसको ढूँढ कर ही रहूँगा।"

सो अगले दिन नर गिलहरी अपने खेत के एक तरफ जहॉ से मकड़ा उसकी मक्का चुरा रहा था जा कर झाड़ियों में छिप गया। उसके हाथ में उसका बड़ा चाकू तैयार था और वह खुद भी उसको चलाने के लिये तैयार था।

अनन्सी और उसके परिवार के सब लोग अपने समय से सुबह सुबह वहॉ आये और बिना समय बर्बाद किये मक्का काट कर अपने अपने थैलों में भरने लगे।

तभी नर गिलहरी अनन्सी पर कूद पड़ा और चिल्लाया — "पकड़ लिया, पकड़ लिया। मैंने चोर पकड़ लिया। तो वह तुम हो जो मेरे भुट्टे चुरा रहे हो जो तुमने नहीं बोये?"

अनन्सी ने नर गिलहरी से अपने आपको छुड़ाते हुए कहा — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो? मुझे जाने दो। और इसका क्या मतलब है कि मैं वह काट रहा हूँ जो मैंने नहीं बोया? यह मेरा खेत है और मैं अपना खेत काट रहा हूँ तुम बीच में कहाँ से आ गये?"

नर गिलहरी ने आश्चर्य से पूछा — "तुम्हारा खेत? अरे यह तुम्हारा खेत कैसे और कबसे हो गया? यह मेरा खेत है और तुम मेरे भुट्टे चुरा रहे हो। समझे।"

अनन्सी हँसा — "हा हा हा हा। तुम्हारा खेत? और तुम्हारे भुट्टे? क्या तुम मुझे वह रास्ता दिखा सकते हो जो इन भुट्टों और इस खेत की तरफ जाता हो या जिस रास्ते से तुम यहाँ आते जाते हो?"

नर गिलहरी ने पूछा — "रास्ते का क्या मतलब? तुम जानते हो कि मुझे रास्ते की जरूरत ही नहीं है। मैं तो अपने आने जाने के लिये पेड़ इस्तेमाल करता हूँ और उन्हीं के ऊपर से आता जाता हूँ।"

अनन्सी ने अपने परिवार से कहा — "अपनी फसल उठाओ और घर चलो। इस नर गिलहरी की चिन्ता मत करो। कोई किसी खेत को अपना कैसे कह सकता है जिस तक पहुँचने के लिये कोई सड़क ही न जाती हो।"

परेशान नर गिलहरी ने अनन्सी और उसके परिवार को वहीं छोड़ा और उन सबको गालियॉ देता हुआ अपने घर चला गया — "मैं तुमको राजा शेर की अदालत में देखूॅगा। तुमको मेरी मक्का वापस लौटानी ही पड़ेगी।"

कई दिन बाद अनन्सी को जंगल के राजा शेर की अदालत में बुलाया गया और उससे नर गिलहरी के खेत के बारे में पूछा गया।

अनन्सी बोला — "हुजूर, यह मेरा खेत है। यह नर गिलहरी इसे अपना खेत कैसे कह सकता है जब उसके पास उस खेत तक जाने के लिये कोई सड़क तक नहीं है। यह कैसे मुमकिन है कि बिना किसी सड़क के उसने यह खेत कई महीनों तक जोता हो और उसको पानी दिया हो?

आप अपने आदमियों को भेजें हुजूर और वे आपको बतायेंगे कि उस खेत तक जाने वाली केवल एक ही सड़क है जो मेरे घर से उस खेत तक जाती है। इसलिये वह खेत मेरा है।"

यह सुन कर शेर ने अपने कुछ जानवर उधर भेजे। उन्होंने वापस आ कर बताया कि अनन्सी ठीक कह रहा था सचमुच में वहॉ एक ही रास्ता था जो अनन्सी के घर से उस खेत तक आता था।

नर गिलहरी ने भी यह मान लिया कि हॉ वही एक रास्ता था जो उस खेत तक जाता था पर साथ में उसने यह भी कहा कि उसको तो रास्ते की जरूरत ही नहीं थी इसलिये वह रास्ता क्यों

बनाता। वह तो अपने आने जाने के लिये पेड़ों का इस्तेमाल करता था।

पर शेर के पास उस समय इसके अलावा और कोई चारा ही नहीं था कि वह अपना फैसला मकड़े की तरफ सुनाये। उसने नर गिलहरी से कहा — "मुझे मालूम है कि यह खेत तुम्हारा है पर मेरे पास और कोई चारा ही नहीं है कि मैं इस मुकदमे का फैसला मकड़े की तरफ सुनाऊँ।

अपनी सारी ज़िन्दगी में मैंने कोई ऐसा खेत नहीं देखा जिस तक सड़क न जाती हो, और खास कर के वह वाला खेत जो खेत के मालिक घर से इतनी दूर हो।"

जैसे ही राजा शेर ने अनन्सी की तरफ अपना फैसला सुनाया अनन्सी और उसके परिवार वालों ने उस पूरे खेत को काटने का इरादा बना लिया।

अगले दिन वे सारा दिन उस खेत पर काम करते रहे। मक्का काटते रहे और उनको थैले में भर भर कर अपने अनाजघरों में ले जाते रहे। नर गिलहरी बेचारा कुछ नहीं कर सका सिवाय देखते रहने के और रोने के।

वह बेचारा चिल्लाता रहा — "क्या यही न्याय है? क्या यही न्याय है?"

जब अनन्सी और उसके परिवार ने सब भुट्टे काट लिये तो उन्होंने उनको बड़े बड़े गठ्ठरों में बॉध लिया। एक दूसरे की सहायता

से उन्होंने वे गठ्ठर अपने अपने सिरों पर रखे और अपने बनाये हुए उस लम्बे रास्ते से हो कर अपने घर को चल पड़े।

इतने में अनन्सी ने आसमान की तरफ देखा तो वहाँ तो काले काले बादल घिरे आ रहे थे। वह अपनी पत्नी से बोला — "ऐसा लगता है जैसे बारिश आने वाली हो।"

उसकी पत्नी बोली — "मुझे तो लगता है कि केवल बारिश ही नहीं बल्कि भारी बारिश आने वाली है। इससे पहले कि बारिश आये हम लोगों को अपना काम जल्दी ही खत्म कर लेना चाहिये।"

पर इससे पहले कि वह अपनी बात खत्म करती बारिश की एक बहुत ही बड़ी बूँद उसकी नाक पर आ कर पड़ी। वह तो उस बूँद के ज़ोर से हिल सी गयी।

अभी वे लोग कुछ और कदम चले थे कि बारिश बहुत ज़ोर से पड़ने लगी। उस तेज़ बारिश की वजह से वे लोग चल भी नहीं पा रहे थे और उनको कुछ दिखायी भी नहीं दे रहा था।

बारिश ने उनके बोझे को और भी ज़्यादा भारी बना दिया था सो उन्होंने अपने अपने भुट्टों के गठ्ठर वहीं सड़क के किनारे छोड़े और पास की एक झोंपड़ी में जा कर शरण ली।

यह बारिश दोपहर से ले कर शाम सूरज डूबने तक चलती रही। खूब बिजली चमकती रही, बादल गरजते रहे, तूफान आता रहा।

जब बारिश और तूफान सब खत्म हो गया और सूरज फिर से निकल आया तो अनन्सी और उसके परिवार वाले सब अपने अपने गट्ठरों को उठाने के लिये उस झोंपड़ी में से बाहर निकल आये। इतनी भारी बारिश से उनको डर था कि कहीं उनके सारे भुट्टे ही न बह गये हों।

जब वे उस जगह आये जहॉ उन्होंने अपने गट्ठर छोड़े थे तो उन्होंने देखा कि उनके गट्ठरों की जगह कुछ काला काला सा पड़ा है। जब उन्होंने उसे पास से देखा तो उन्होंने देखा कि वह तो एक बहुत बड़ा काला कौआ था।

अनन्सी मक्का के भुट्टों के ऊपर पड़े हुए कौए से बोला — "तुम कितने अच्छे हो कौए भाई कि तुमने मेरी मक्का को पानी और बाढ़ से बचा लिया। अब मुझे उनको सुखाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

कौआ बोला — "या तो तुम मजाक कर रहे हो या फिर तुम सपना देख रहे हो। यह तो मेरी मक्का है। मैंने अपनी मक्का बचायी है इसमें तुम्हें धन्यवाद देखने की कोई जरूरत नहीं है। तुम यहॉ से चले जाओ ताकि मैं अपनी मक्का अपने घर ले जा सकूँ।"

अनन्सी चिल्लाया — "क्या? यह तुम्हारी मक्का? यह तो मेरी मक्का है। मैंने उसको बारिश से बचने के लिये यहॉ छोड़ दिया था।"

कौआ बोला — "कोई कैसे अपनी मक्का के गट्ठर सड़क पर इस तरह छोड़ सकता है और उन पर निगाह भी नहीं रख सकता। मैंने इनको यहॉ पाया है और बारिश से बचाया है इसलिये अब यह मेरी मक्का है। चले जाओ यहॉ से।"

जब अनन्सी को महसूस हुआ कि वह तो एक हारती हुई लड़ाई लड़ रहा था तो वह पीछे की तरफ हट कर खड़ा हो गया और कौए को मक्का के गट्ठर अपने पंखों में उठाते हुए देखता रहा।

कौए ने उन गट्ठरों को अपने पंखों में ठीक से रखा और उड़ चला। अनन्सी और उसका परिवार वहॉ बिना किसी चीज़ के खड़े रह गये। उनकी मक्का तो कौआ ले कर उड़ गया था।

इस तरह नर गिलहरी ने मक्का बोयी, अनन्सी मकड़े ने मक्का काटी और कौआ उसको ले कर चला गया। भगवान के खेल भी निराले हैं।

बेचारा नर गिलहरी

23 मकड़ा और कौए[92]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की है।

एक बार की बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में अकाल पड़ा और किसी के पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था। किसी का मतलब बस केवल कौओं को छोड़ कर और किसी के पास भी खाने के लिये कुछ भी नहीं था।

रोज वे कौए अंजीर तोड़ने के लिये बहुत दूर उड़ कर नदी के बीच वाले एक टापू पर जाते थे। वहॉ अंजीर का पेड़ खड़ा हुआ था। वहॉ से वे ये फल खाने के लिये घर ले आते थे।

जब मकड़े ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही एक तरकीब सोची। उसने अपने पीछे के हिस्से पर मधुमक्खी का मोम लगाया, मिट्टी का एक टूटा बर्तन लिया और कौओं के पास गया। वहॉ जा कर उसने उनसे एक जलता हुआ कोयला मॉगा।

वह जब कौओं के पास पहुॅचा तो कौए खाना खाने में लगे हुए थे। उनके चारों तरफ बहुत सारी अंजीरें पड़ी हुई थीं।

[92] Spider and the Crows – a folktale from Nigeria, Africa. Translated in English by Dianne Stewart.

मकड़ा वहॉ पहुँच कर चालाकी से एक अंजीर के ऊपर बैठता हुआ बोला — "प्यारे दोस्तों नमस्कार। क्या मुझे एक जलता हुआ कोयला मिल सकता है?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।" कह कर कौओं ने उसको एक जलता हुआ कोयला दे दिया। जलता हुआ कोयला ले कर उसने कौओं को धन्यवाद दिया और वह जिस अंजीर पर बैठा था उस अंजीर को अपने पीछे चिपकाये हुए अपने घर वापस आ गया।

कौओं को उसके ऊपर कोई शक नहीं हुआ क्योंकि चालाक मकड़ा उनके साथ बहुत ही नम्र था और जब वह वहॉ से गया तो वह थोड़ा पीछे भी चला था तो उनको उसके पीछे का हिस्सा भी दिखायी नहीं दिया ताकि वे उसके पीछे के हिस्से पर चिपकी हुई अंजीर देख सकते।

घर आ कर मकड़े ने उस कोयले को बुझा दिया और कौओं के पास फिर से और आग लेने के लिये पहुँच गया। इस बार मकड़े ने अपने बैठने के लिये सबसे बड़ी और खूब पकी हुई अंजीर चुनी।

कुछ देर बाद वह वहॉ से फिर से जलता हुआ कोयला और अंजीर ले कर चला आया। पर इस बार वह वहॉ गन्दा कर के भी आया।

यही उसने तीसरी बार भी किया। पर इस बार कौओं को कुछ शक हुआ सो उन्होंने उससे पूछा — "यह तुम बार बार हमारे पास जलता हुआ कोयला लेने के लिये क्यों आते हो?"

मकड़ा बोला — "जब तक मैं उस कोयले को ले कर घर पहुँचता हूँ वह कोयला जल जाता है और बार बार मेरे साथ यही होता है।"

एक बूढ़ा कौआ बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे पूरा यकीन है कि तुम खुद ही उसे बुझा देते हो ताकि इसका बहाना ले कर तुम यहाँ फिर आ सको। तुम हमारे खाने के पीछे हो, ओ चालाक जानवर।"

यह सुन कर मकड़े ने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया — "ओह नहीं, यह बात नहीं है। यह सच नहीं है। कोयला अपने आप ही जल कर खत्म हो जाता है। उफ़, जबसे मेरे माता पिता मरे हैं तबसे मेरी ज़िन्दगी बहुत मुश्किल हो गयी है।

वे जब तक ज़िन्दा थे उन्होंने मुझसे हमेशा यही कहा कि अगर मुझे किसी चीज़ की जरूरत हो तो मैं अपने दोस्तों कौओं के पास जाऊँ और उनसे सहायता माँगूँ। हाँ हाँ यही कहा था उन्होंने मुझसे। और देखो तो तुम लोग मुझसे किस तरह का बर्ताव कर रहे हो।"

और यह कह कर उसने फिर से सुबकना शुरू कर दिया।

उस बूढ़े कौए ने एक अंजीर उठायी और मकड़े से बोला — "अच्छा अच्छा अब रोना बन्द करो और यह ले जाओ। अगर तुम कल सुबह जल्दी आ जाओगे तो हम तुमको अंजीर के पेड़ के पास तक ले चलेंगे।"

मकड़ा तो यही चाहता था। उसने कौओं को धन्यवाद दिया और जितनी तेज़ी से वह भाग सकता था उतनी तेज़ी से दौड़ कर वह अपने घर आ गया।

उस रात मकड़े को नींद नहीं आयी। जब कौए सो रहे थे तभी मकड़े ने तिनकों का एक गट्ठर लिया और उसको उनके घोंसलों के पास ले जा कर उसमें आग लगा दी।

जब उस गट्ठर की लपटें काफी ऊँची उठने लगीं तो वह चिल्लाया — "सुबह हो गयी, सुबह हो गयी। देखो तो सुबह के सूरज ने आसमान कितना लाल कर दिया।"

पर उसी बूढ़े कौए ने जवाब दिया — "नहीं ओ मकड़े, यह तो तुमने आग जलायी है। अभी दिन नहीं निकला तुम तब तक इन्तजार करो जब तक मुर्गा बोलता है।"

यह सुन कर मकड़ा एक मुर्गी के घर में घुस गया और वहाँ जा कर मुर्गों को तंग करने लगा जब तक कि मुर्गियाँ चीं चीं नहीं करने लगीं और एक बड़े मुर्गे ने बाँग नहीं लगा दी।

वह फिर कौओं के घोंसलों के पास आया और चिल्लाया — "जागो जागो। सवेरा हो गया। मुर्गे ने बाँग दे दी है।"

उस बूढ़े कौए ने फिर जवाब दिया — "धोखेबाज मकड़े, दिन तो अभी भी नहीं निकला यह तो तुमने मुर्गियों को जगाया है।

आओ, हम तब तक इन्तजार करते हैं जब तक कि प्रार्थना की पहली आवाज[93] लगती है।"

वह मकड़ा तुरन्त ही एक झाड़ी के पीछे गया और वहॉ से उसने आवाज लगायी — "अल्लाह की जय हो। अल्लाह की जय हो।"

बूढ़े कौए ने फिर कहा — "उफ़ नहीं नहीं। मैं उस आवाज को अच्छी तरह पहचानता हूॅ। यह तो तुम मकड़े हो जो आवाज लगा रहे हो यह वह आवाज नहीं है। तुम घर चले जाओ। जब सूरज निकलेगा तो मैं तुमको खुद बुला लूॅगा।"

अब वह मकड़ा सिवाय इन्तजार करने के और कुछ नहीं कर सकता था सो वह अपने घर चला गया और जा कर सो गया।

कुछ देर में रोशनी होने लगी और कौए जागने लगे। मकड़ा भी वहॉ आ गया। हर कौए ने उसको अपना एक एक पंख दिया और उन उधार लिये हुए पंखों से वह मकड़ा उन कौओं के साथ उस अंजीर के पेड़ की तरफ उड़ चला जो नदी के बीच में खड़ा था।

पर हर बार जब भी कोई कौआ कोई अंजीर तोड़ना चाहता वह चिल्लाता — "मैंने इसको पहले देखा है इसलिये यह अंजीर मेरी है।" और फिर वह उस अंजीर को तोड़ कर अपने थैले में रख लेता।

[93] Here the "crow" means that first call to Allah which Muslims do in the morning in their mosque – called Azaan.

यह सिलसिला इसी तरह से चलता रहा जब तक कि उस पेड़ पर के सारे फल खत्म नहीं हो गये। इस तरह मकड़े ने सारे फल अपने लिये तोड़ लिये और कौओं को एक भी फल नहीं मिला।

वह बूढ़ा कौआ बोला — "अब मुझे मालूम हुआ कि तुम सचमुच में चालबाज हो।"

गुस्से में आ कर सब कौओं ने उससे अपने अपने पंख छीन लिये जो उन्होंने उसको दिये थे और उसको वहीं अकेला छोड़ कर उड़ गये।

अब वह मकड़ा वहाँ अकेला उस अंजीर के पेड़ के ऊपर चारों तरफ से पानी से घिरा बैठा रहा। ज़िन्दगी में पहली बार उसकी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

बाद में जब अँधेरा होने लगा तो वह रोने लगा। आखीर में उसने सोचा कि अगर मैं यहाँ इस पेड़ पर अपनी सारी जिन्दगी नहीं बिताना चाहता तो मुझे कौओं की तरह हवा में कूदना पड़ेगा। सो उसने हवा में एक कूद लगायी। पर वह तो पानी में मगरों के बीच जा पड़ा।

एक मगर बोला — "अरे यह यहाँ क्या चीज़ है? क्या हम इसको खा सकते हैं?"

मकड़ा तुरन्त बोला — "मजाक मत करो।" और फिर सुबकना शुरू कर दिया।

सुबकते हुए वह बोला —"मैं तो तुममें से ही एक हूँ। क्या तुम को पता नहीं कि हर आदमी बरसों से मुझे ढूँढ रहा है। तुम्हारे बाप दादाओं के समय में जब मैं छोटा था मैं तभी भाग गया था। और तबसे कोई मुझे ढूँढ ही नहीं सका। तुम मेरे परिवार के पहले आदमी हो जिनसे मैं मिला हूँ।"

मकड़ा इतनी ज़ोर से रोया कि उसके ऑसू जमीन तक फैल गये। मगरों ने भी अपने मगर के ऑसू[94] रोये।

"बेचारा।" कह कर वे भी अपनी नाक बहुत ज़ोर से सुड़कते हुए बहुत ज़ोर से रोये।

फिर बोले — "तुम नदी के पास जो हमारा घर है और जहॉ हम अपने अंडे देते हैं वहॉ हमारे साथ रह सकते हो।"

पर उनमें से एक मगर को कुछ शक हो गया। उसने सोचा कि हमको इस मकड़े की ठीक से जॉच करनी चाहिये कि यह हममें से एक है भी या नहीं।

सो उसने एक दूसरे मगर से धीरे से कहा — "आओ, इस अजनबी को हमको थोड़ा सा कीचड़ का सूप पीने को देना चाहिये। अगर यह उसको पी लेता है तब तो यह सच बोल रहा है।

पर अगर यह उसे नहीं पीना चाहता तो हमको तुरन्त ही पता चल जायेगा कि यह झूठ बोल रहा है और मुझे तो यह लगता है कि यकीनन यह हममें से एक नहीं है।"

[94] Crocodile tears is an idiom for crying falsely.

ऐसा ही किया गया। जब मकड़े ने एक घड़ा[95] भर कर कीचड़ का सूप देखा तो अपनी चालाकी से उसने बहाना किया कि वह तो उस सूप को देख कर बहुत खुश था।

फिर उसने उस सूप को पीने का बहाना करते हुए कहा — "तुमको इस सूप को बनाने का मेरी दादी का यह नुस्खा कहाँ से मिला?"

इस तरह उसने उनसे बातें करते करते अपने पिछले पैरों से अपने पीछे चुपचाप एक गड्ढा खोदा और अपने आगे वाले पैरों से उस घड़े की तली में एक छोटा सा छेद किया।

"यह सूप तो बहुत ही स्वादिष्ट था।" कहते हुए वह घड़ा उसने अपने पीछे रख दिया और वहाँ उस घड़े का सारा सूप नीचे निकल गया।

सारे मगरों ने जब खाली घड़ा देखा तो एक साथ बोले — "अरे यह तो हममें से ही एक है।"

सो उन्होंने उस मकड़े को अपने घर में जहाँ छोटे छोटे मगर थे और एक सौ एक मगर के अंडे रखे थे सोने के लिये कह दिया।

मकड़े ने आने से पहले मगर के बच्चों से कहा — "याद रखना बच्चों, अगर तुम लोग रात में कोई आवाज सुनो तो डरना नहीं

[95] Translated for the word "Gourd", which is the hard dry outer cover of a pumpkin like fruit. It can be of several shapes and is used to keep wet or dry things. See their picture above.

क्योंकि वह मेरी डकार की आवाज होगी जो तुम्हारी मॉ के इतने स्वादिष्ट सूप बनाने की वजह से आयेगी।"

जब सब मगर सो गये तो उसने मगर का एक अंडा उठाया और आग में फेंक दिया। "फट" की आवाज करते हुए वह अंडा फूट गया। यह सुन कर बच्चों ने आपस में कहा — "यह तो हमारे अजीब दादा के डकार लेने की आवाज है।"

और बड़े मगरों ने उस फट की आवाज़ को सुन कर कहा — "चुप, अपने परिवार के लोगों के बारे में ऐसी बात नहीं करते।"

पर मकड़ा बोला — "कोई बात नहीं। ये तो मेरे पोते पोतियॉ हैं जो ये कहना चाहते हैं इनको कहने दो।"

इस तरह सारी रात वह मकड़ा उन अंडों को आग में भूनता रहा और खाता रहा और इस तरह उसने वहॉ रखे सारे अंडे खत्म कर दिये।

सारी रात मगर फट फट की आवाज सुनते रहे और हर बार हर फट की आवाज़ पर बच्चे कहते रहे — "यह हमारे दादा जी हैं जो डकार ले रहे हैं।"

सुबह तक केवल एक अंडा ही बच रहा। जब बड़े मगरों ने बच्चे मगरों को अंडों को पलटने के लिये कहा तो मकड़ा तुरन्त बोला — "तुम फिक्र न करो मैंने यह काम पहले ही कर दिया है।"

इस पर बड़े मगरों ने कहा कि अंडों को अब गिन लिया जाये। तो मकड़ा फिर जल्दी से बोला — "मैं एक एक कर के उनको तुम्हारे सामने लाता हूँ तुम उनको यहीं गिन लेना।"

मगर मकड़े के इस बर्ताव से बहुत खुश हुए। सो वह मकड़ा आखिरी बचा हुआ अंडा घर में से उठा कर ले आया। मगरों ने उसे देखा और उस पर एक निशान बना दिया। मकड़ा उस अंडे को ले कर फिर से उस छेद में गायब हो गया।

उसने उस निशान को चाट कर साफ किया और फिर वही अंडा ले कर बाहर आ गया। मगरों ने फिर उस अंडे के ऊपर निशान लगाया और मकड़ा फिर उसको ले कर उस छेद में गायब हो गया।

इस तरह वह उसी अंडे को बार बार लाता रहा। मगर भी उसी अंडे को बार बार गिन कर निशान लगाते रहे — एक, दो, तीन, चार। जब तक वे एक सौ एक नहीं हो गये। यह सब रोज चलता रहा और मगर रोज ही यह कहते रहे कि हमारे सब अंडे सुरक्षित है।

एक दिन मकड़ा बोला — "मैं बहुत खुश हूँ कि मैंने अपने परिवार वालों को फिर से पा लिया है। पर अब मैं अपनी पत्नी और बच्चों को भी यहाँ लाना चाहता हूँ ताकि हम सब एक साथ रह सकें।"

मगरों ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जाओ और उनको भी यहीं ले आओ। पर जल्दी ही वापस आना ताकि तुम हमारे साथ फिर से खेल सको और अंडे गिनने में हमारी सहायता कर सको।"

चालाक मकड़ा बोला — "यकीनन। यह तो बड़ा अच्छा खेल है। अगर तुम लोग इस नदी को पार करने में मेरी सहायता कर दो तो मैं बहुत जल्दी ही वापस आ जाऊँगा।"

सो एक मगर ने उसको एक नाव में बिठा दिया और दो मगरों ने उस नाव को खे दिया।

पर उन दोनों नाव को खेने वाले मगरों में से एक मगर को इस मकड़े पर कुछ शक हो गया। जब वे नदी के बीच में थे वह पलटा और बोला — "तुम ज़रा मेरा इन्तजार करो मैं अभी वापस आता हूँ। मैं ज़रा अंडे देख आऊँ।" और यह कह कर वह वहॉ से भाग लिया।

घर जा कर उसको केवल एक ही निशान लगा अंडा मिला। वह तुरन्त वापस आया और चिल्ला कर दूसरे मगरों को बताया कि वहॉ तो केवल एक ही अंडा है।

सारे मगर चिल्लाये — "इतना बड़ा धोखेबाज। उसको तुरन्त वापस लाओ। वह हममें से एक नहीं है।"

पर जो मगर नाव खे रहा था वह थोड़ा सा बहरा था। मगर ने उससे पूछा कि दूसरे मगर उससे क्या कहना चाह रहे थे। मकड़ा

बोला — "सुनो, वे लोग कह रहे हैं कि तुम जल्दी करो क्योंकि नदी में पानी बढ़ने वाला है।"

और उसको नदी के उस पार जल्दी ले जाने के लिये कोंचता रहा जब तक कि नदी का दूसरा किनारा नहीं आ गया और वह मगरों से सुरक्षित नहीं हो गया।

नदी का दूसरा किनारा आते ही वह उस नाव में से कूद कर भाग गया।

List of Stories in “Adventures of Anansi Spider”

1. How Anansi Became a Spider
2. Anansi and the Sky God
3. Anansi Became the Owner of the Stories
4. Bride for a Grain of Corn
5. How the Mankind Got Wisdom
6. Anansi and the Pot of Wisdom-Nig
7. Anansi and the Pot of Wisdom-Ghana
8. Why the Spider Has Bald Head
9. Why the Spider Has So Thin Waist
10. The Spider and His Two Friends
11. Ananse the Even-handed Judge
12. Why Anansi Has Eight Thing Legs
13. Why the Spiders Have Big Rear Ends
14. Why Spiders Live in Ceilings
15. Why Spiders Hide in Corners
16. How the Pig Got Its Snout
17. Why Pig Has a Short Snout
18 Anansi and the Brother Death
19 The Dog, the Cat, the Pigeon and the Magic Ring
20. The Spanking Switch
21. Why Man and Fox Are Enemies
22. Finders Keepers
23. Spider and the Crows

Classic Books of African Folktales in Hindi

Translated by Sushma Gupta

1901	Zanzibar Tales.
No 1	by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.
1910	Folktales From Southern Nigeria.
No 15	By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.
1917	West African Folk-Tales
No 20	By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.
1947	The Cow Tail Switch and Other West African Stories.
No 14	By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.
1962	Fourteen Hundred Cowries and Other stories.
No 8	By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales
1998	African Folktales.
No 12	By Alessandro Ceni. 18 tales.
2001	Orphan Girl and Other Stories.
No 13	By Buchi Offodile. 41 tales
2002	Nelson Mandela's Favorite African Tales.
No 7	ed Nelson Mandela. 32 tales

Some Other Books on African Folktales

1. Anansi in Africa
2. Ju Ju in Nigeria
3. When There Was a Famine in Animal Kingdom
4. Rabbit in Africa
5. Tortoise in Africa. 2 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2019**